श्री अरिहंत ज्ञान ग्रन्थमाला, पुष्पांक-39

श्री अरिहन्त लघु स्वाध्यायमाला



तत्त्वावधान

युगदृष्टा आचार्यप्रवर

श्री ज्ञानचन्द्रजी म.सा.

प्रकाशक

श्री अरिहंतमार्गी जैन महासंघ

1-9/1767 भागीरथ पैलेस

चादनी चौक, दिल्ली-110006

फोन 011-23865493, 23864383

❑ श्री अरिहन्त लघु स्वाध्यायमाला
❑ तत्वावधान-युगदृष्टा आचार्य प्रवर श्री ज्ञानचन्दजी म सा
❑ प्रथम सस्करण . मार्च 2006, 2100 प्रतियाँ
❑ द्वितीय सस्करण . जनवरी 2007, 2100 प्रतियाँ
❑ मूल्य 5/-
❑ अर्थ सहयोगी सुश्रावक श्री अनूपंचदजी सेठिया, कोलकात्ता
❑ प्राप्ति स्थान

1. श्री अरिहत ज्ञान भडार, द्वारा ज्योति मैचिग सेन्टर,
खजांची मार्केट, ब्यावर-305901 (राज)
फोन 01462-309502, 09414355236 (मोबाईल)
2. श्री दिनेश जी जैन,
1296, कटरा धुलिया, चादनी चौक, दिल्ली-110006
फोन 011-23919370
3. श्री जयचन्दलाल जी सुखानी
डागा पिरोल के पास, बीकानेर-334005 (राज)
फोन 0151-3290905, 2524298, 2542188
मोबाईल 98298-90079
4. श्री दीपसिंह जी वेद
वैद्यों की पिरोल, बीकानेर-5 फोन 0151-2544403
5. श्री अनोपचद जी सेठिया
4, हार्की निगर सार्गीनी, फ्लेट न 4, सी, वोशा गाला
[illegible]-700071 मोबाईल 9331836635
फोन 033-22827405/7408
6. श्री सुनील गभीरमलजी श्रीश्रीमाल
[illegible], [illegible] ताला [illegible]
[illegible] 34, जिला [illegible], [illegible]-425001 ([illegible])
[illegible] [illegible], [illegible]-0181

❑ मुद्रक [illegible] कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, बीकानेर
[illegible] [illegible]

प्रकाशकीय

अरिहत देव प्रभु महावीर के अनुसार उनका धर्म सघ 21 हजार वर्ष तक चलेगा। इसमे अभी तक ढाई हजार से कुछ अधिक वर्ष ही बीते है। अभी करीब 18½ हजार वर्ष बाकी है। इतने समय तक शुद्ध साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओ का इस भूमण्डल पर विचरण रहेगा। चतुर्विध सघ की विकास-यात्रा अरिहतो की वाणी के अनुसार गतिमान रहे यही हमारा लक्ष्य है। सम्यक् दृष्टि के आठ आचारो मे धर्म प्रभावना नामक आठवा आचार है। जिसका तात्पर्य है कि ऐसे कार्य किये जाए जिसमे धर्म की प्रभावना हो। अन्य जन भी जिन धर्म के प्रति आकर्षित हो। आगमकालीन युग मे कई राजाओ का वर्णन आता है। वे चतुरगिणी विशाल सेना सजाकर भगवान् के दर्शनार्थ गये थे। सेना सजाकर ले जाने मे धर्म प्रभावना का भी एक लक्ष्य जुडा हुआ था। साधु-साध्वीगण अपनी मर्यादा को सुरक्षित रखते हुए धर्म की प्रभावना करते है। श्रावक-श्राविका भी अपनी मर्यादा मे रहते हुए धर्म प्रभावना करते है। जिस कार्य मे अल्प हिसा व महान् लाभ हो, उसे श्रावक वर्ग कर लिया करते है। जैसे पानी की प्याऊ लगाना, स्थानक बनाना आदि।

इसी कडी मे सत्साहित्य का प्रकाशन भी धर्म प्रभावना के क्षेत्र मे एक महत्वपूर्ण विधा है। जिसके पढने से भव्यात्माओ को सम्यक् बोध प्राप्त हो सकता है और सही मार्ग मे आगे बढ सकती है। इस बात को ध्यान मे रखते हुए श्री अरिहतमार्गी जैन महासघ ने सत्साहित्य के प्रकाशन का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है।

अरिहंत लघु स्वाध्यायमाला का द्वितीय सस्करण स्वाध्याय प्रेमियो के कर-कमलो मे प्रस्तुत है। पुस्तक भारी न हो इसका पूरा ध्यान रखा गया है। साथ ही शुद्ध भी हो। सतर्कता बरतते हुए भी कोई

- श्री अरिहन्त लघु स्वाध्यायमाला
- तत्वावधान-युगदृष्टा आचार्य प्रवर श्री ज्ञानचन्द्रजी म सा
- प्रथम सस्करण मार्च 2006, 2100 प्रतियां
- द्वितीय सस्करण : जनवरी 2007, 2100 प्रतियां
- मूल्य · 5/-
- अर्थ सहयोगी . **सुश्रावक श्री अनूपंचदजी सेठिया, कोलकात्ता**
- प्राप्ति स्थान :

1. **श्री अरिहंत ज्ञान भंडार,** द्वारा ज्योति मैचिग सेन्टर, खजाची मार्केट, ब्यावर-305901 (राज)
   फोन 01462-309502, 09414355236 (मोबाईल)
2. **श्री दिनेश जी जैन,**
   1296, कटरा धुलिया, चादनी चौक, दिल्ली-110006
   फोन 011-23919370
3. **श्री जयचन्दलाल जी सुखानी**
   डागा पिरोल के पास, बीकानेर-334005 (राज)
   फोन 0151-3290905, 2524298, 2542188
   मोबाईल 98298-90079
4. **श्री दीपसिंह जी बैद**
   बैदो की पिरोल, बीकानेर-5 फोन 0151-2544403
5. **श्री अनोपचंद जी सेठिया**
   4, होची मिनेह सारीनी, फ्लेट न 4, सी, चौथा माला
   कोलकात्ता-700071 मोबाईल 9331836635
   फैक्स 033-22827405/7408
6. **श्री सुनील गंभीरमलजी श्रीश्रीमाल**
   श्रीश्रीमाल भवन, लक्ष्मणदास नगर, दाढीवाला बगला
   फ्लेट न 34, जिला पेठ, जलगाव-425001 (महा)
   फोन 0257-2222870, 942349-0181

- मुद्रक : अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, बीकानेर
  दूरभाष 2547073, 9214555303

प्रकाशकीय

अरिहत देव प्रभु महावीर के अनुसार उनका धर्म सघ 21 हजार वर्ष तक चलेगा। इसमे अभी तक ढाई हजार से कुछ अधिक वर्ष ही बीते है। अभी करीब 18½ हजार वर्ष बाकी है। इतने समय तक शुद्ध साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओ का इस भूमण्डल पर विचरण रहेगा। चतुर्विध सघ की विकास-यात्रा अरिहतो की वाणी के अनुसार गतिमान रहे यही हमारा लक्ष्य है। सम्यक् दृष्टि के आठ आचारो मे धर्म प्रभावना नामक आठवा आचार है। जिसका तात्पर्य है कि ऐसे कार्य किये जाए जिसमे धर्म की प्रभावना हो। अन्य जन भी जिन धर्म के प्रति आकर्षित हो। आगमकालीन युग मे कई राजाओ का वर्णन आता है। वे चतुरगिणी विशाल सेना सजाकर भगवान् के दर्शनार्थ गये थे। सेना सजाकर ले जाने मे धर्म प्रभावना का भी एक लक्ष्य जुडा हुआ था। साधु-साध्वीगण अपनी मर्यादा को सुरक्षित रखते हुए धर्म की प्रभावना करते हे। श्रावक-श्राविका भी अपनी मर्यादा मे रहते हुए धर्म प्रभावना करते है। जिस कार्य मे अल्प हिसा व महान् लाभ हो, उसे श्रावक वर्ग कर लिया करते है। जैसे पानी की प्याऊ लगाना, स्थानक बनाना आदि।

इसी कडी मे सत्साहित्य का प्रकाशन भी धर्म प्रभावना के क्षेत्र मे एक महत्वपूर्ण विधा है। जिसके पढने से भव्यात्माओ को सम्यक् बोध प्राप्त हो सकता है और सही मार्ग मे आगे बढ सकती है। इस बात को ध्यान मे रखते हुए श्री अरिहतमार्गी जैन महासघ ने सत्साहित्य के प्रकाशन का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है।

अरिहंत लघु स्वाध्यायमाला का द्वितीय सस्करण स्वाध्याय प्रेमियो के कर-कमलो मे प्रस्तुत है। पुस्तक भारी न हो इसका पूरा ध्यान रखा गया है। साथ ही शुद्ध भी हो। सतर्कता बरतते हुए भी कोई

अशुद्धि रह गई हो तो सुधी पाठक सुधार कर पढे और यहॉ भी सूचित करे ताकि अगले सस्करण मे सुधार हो सके।

पुस्तक के प्रथम व द्वितीय सस्करण के प्रकाशन मे धर्मप्रिय दानवीर श्री अनूपचद जी सेठिया, कोलकात्ता का अर्थ सौजन्य प्राप्त हुआ है। आपकी उदारता के लिए क्या कहना। आपकी दान भावना, साहित्य प्रेम अकथनीय है। परिचय अलग से प्रस्तुत है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रबन्ध सम्पादन मे कर्मठ व्यक्तित्व श्रीमान् जयचन्दलालजी सुखाणी, श्री दीपसिहजी बैद का सहयोग प्राप्त हुआ। उसके लिए महासघ आभारी है।

-भवदीय-

नरेश खिंवेसरा	नेमचन्द जैन	गुणसागर जैन	दिनेश जैन
अध्यक्ष	महामंत्री	अध्यक्ष	मत्री

श्री अरिहतमार्गी जैन महासघ
दिल्ली

श्री अरिहतमार्गी जैन साहित्य समिति
दिल्ली

साहित्य संरक्षक

1 श्री अनूपचदजी सेठिया, कोलकात्ता
2 श्रीमती रतनदेवी सेठिया, कोलकात्ता
3 श्रीमती उषाजी सेठिया, कोलकात्ता
4 श्री राकेश कुमारजी सेठिया, कोलकात्ता
5 श्रीमती नीलिमाजी सेठिया, कोलकात्ता
6 श्री सुन्दरलालजी दुगड, कोलकात्ता
7 श्रीमती कुसुम देवी दुगड, कोलकात्ता
8 श्री विनोद कुमारजी दुगड, कोलकात्ता
9 श्रीमती शीतलजी दुगड, कोलकात्ता
10 श्रीमती रेखाजी झाबक, कोलकात्ता
11 श्री नरेशजी खिवेसरा, दिल्ली
12 श्रीमती मदन देवी खिवेसरा, दिल्ली
13 श्रीमती मीताजी खिवेसरा, दिल्ली
14 श्री सभवजी खिवेसरा, दिल्ली
15 कु पूजा खिवेसरा, दिल्ली
16 श्री सजय जी मुकीम, दिल्ली
17 श्रीमती कल्पनाजी मुकीम, दिल्ली
18 श्री नेमचदजी तातेड, दिल्ली
19 श्री जयचदलालजी सुखानी, बीकानेर (राज)
20 श्री दीपसिहजी बैद, बीकानेर (राज)
21 श्री कमलचदजी बच्छावत, कोलकात्ता
22 श्रीमती सरलाजी बच्छावत, कोलकात्ता
23 कु श्वेताजी बच्छावत, कोलकात्ता
24 श्रीमती उर्मिलाजी डागा, कोलकात्ता
25 श्री विमल कुमारजी सेठिया, सूर्यनगर (उ प्र)
26 श्रीमती सावित्रीजी सेठिया, सूर्यनगर (उ प्र)

27 श्री दिपेश जी सेठिया, सूर्यनगर (उ प्र)
28 श्रीमती भावनाजी सेठिया, सूर्यनगर (उ प्र)
29 श्री प्रकाश जी सेठिया, सूर्यनगर (उ प्र)
30 श्री नेमनाथजी जैन, अरिहत नगर, दिल्ली
31 श्री मुन्नीलालजी जैन, अरिहन्त नगर, दिल्ली
32 श्री रतनलालजी जैन, कपूरथला, (पजाब)
33 श्री खेमचदजी बोथरा, मल्लारपुर (कोलकात्ता)
34 श्रीमती जमनादेवी बोथरा, मल्लारपुर (कोलकात्ता)
35 श्री ताराचदजी बोथरा, मल्लारपुर (कोलकात्ता)
36 श्री हुकुमचदजी बोथरा, मल्लारपुर (कोलकात्ता)
37 श्री राजेश कुमारजी बोथरा, मल्लारपुर (कोलकात्ता)
38 श्री किशोर कुमारजी मेहता, जयपुर (राज)
39 श्रीमती आशाजी मेहता, जयपुर (राज)
40 श्री अनिलजी जैन, शक्ति नगर, दिल्ली
41 श्री नरेश कुमारजी जैन, कमला नगर, दिल्ली
42 श्रीमती शिल्पाजी लूकड, जलगाव (महाराष्ट्र)
43 श्री पारस कुमारजी मनीष कुमारजी मेहता, ब्यावर (राज)
44 श्री किमतीलाल जी जैन, अरिहन्त नगर, दिल्ली
45 श्री किशनलालजी पुनीत कुमार जी गोयल, रोहतक (हरियाणा)
46 श्री बाबूलालजी पुष्पेन्द्र कुमारजी बम, बैगलोर (कर्नाटक)
47 श्री कान्तिलालजी सन्तोषजी कटारिया, नागपुर (महाराष्ट्र)
48 श्री मनमोहनजी जैन, मुज्जरफनगर (उ प्र)
49 श्री सुरेन्द्रकुमार जी बाठिया, भीनासर/कोलकात्ता
50 डॉ निर्मल जैन, श्रीमती राजप्रभा जैन, जयपुर (राज)
51 श्रीमती मैना देवी जी खिवेसरा, मुम्बई
52 श्री हुक्मीचद जी खिवेसरा, मुम्बई

***

युगदृष्टा आचार्य प्रवर

ज्ञानचन्द्रजी म.सा.

(दुर्लभ व्यक्तित्व-सुलभ उपलब्ध)

जन्म सवत् 2017 आसोज सुदी बारस 2 अक्टूबर 1960 रविवार को ब्यावर (राजस्थान)

पिता सुश्रावक श्रेष्ठीवर्य श्री मागीलालजी सा मेहता

माता . सुश्राविका वीरमाता श्रीमती सौरभकवर मेहता

वंश · ओसवाल

दीक्षा : सवत् 2031, ज्येष्ठ शुक्ला पचमी तदनुसार 26 मई 1974, रविवार को गोगेलाव (राजस्थान) मे

सहदीक्षार्थिनी · ज्येष्ठ भगिनी महासती श्री ललिता श्री जी म सा

दीक्षा गुरु : समता विभूति आचार्य श्री नानेश

परीक्षा : जैन सिद्धान्त रत्नाकर, आचार्य परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण

भाषा ज्ञान सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अग्रेजी, गुजराती, पजाबी, मराठी आदि भाषाओ का ज्ञान

अध्ययन जैन बौद्ध आदि छ दर्शन, गीता, पुराण, न्याय, व्याकरण, जैनागम, कर्म सिद्धान्त आदि दर्शन शास्त्र एव आधुनिक विज्ञान के गभीर अध्येता, अध्यापन मे अद्भुत कौशल

प्रभावी प्रवास . राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, दिल्ली, हरियाणा, पजाब, उत्तरप्रदेश, जम्मू कश्मीर, हिमाचल आदि में सघन प्रवास।

उपाधियो से ऊपर : स्थविर प्रमुख, सत प्रवर, युग दृष्टा आदि अनेक उपाधियों को ससम्मान छोड़ दिया।

अद्भुत सृजनशैली आगम, गद्य, पद्य, मुक्तक, कविता, गीत, इतिहास, उपन्यास, कहानी, सस्कृत, प्राकृत आदि अनेक विषयो पर पचासो पुस्तको का प्रणयन।

विशेषता शास्त्रो की तर्क सगत हृदयग्राही व्याख्या, एकलव्य की भाति गुरु सेवा, प्रवचनो का गहरा प्रभाव, घर में शाति,

व्यसन मुक्ति, भव्य जागरण, युवाओ के आकर्षण केन्द्र, णमोत्थुणं एव भक्तामर स्तोत्र पर अभिनव व्याख्या प्रतिपूर्ण पोषध का महाभियान। प्रतिमास एक तेला।

व्यक्तित्व में चुंबकीय आकर्षण : जो आया आपके सपर्क में वह आपका हो गया। प्रकाण्ड विद्वता में महान ऋजुता, स्वभाविक, सरलता, सयम मे सजगता, विचारो में विराटता, कार्य मे कुशलता, देशना मे दक्षता, जीवन मे जागरूकता आदि कई विशेषताए।

गुरु कृपा : गुरु ने शिष्य के लिए कहा श्री ज्ञानमुनिजी मेरा प्राण है। मेरी छाया है, मेरे लिये सर्वोपरि है। इनका मुझको, चतुर्विध सघ एव युवाचार्य श्री को दिया सहयोग विलक्षण है। ये प्रतिभा की दृष्टि से अत्यन्त विलक्षण है। जिन्हें आचार्य श्री नानेश महामुनिराज, स्थविर प्रमुख, मेरे प्राण आदि अनेकानेक विशेषणो से पुकारते थे। धन्य हे ऐसे सुशिष्य को जो गुरु के दिल में बस गए।

संयमीय जागृति का महा अभियान : भगवान महावीर सघ स्थापना दिवस वैशाख सुदी 11, विक्रम सवत् 2061 के दिन महामुनिराज ने सयमीय जागृति का महा अभियान चलाया।

आचार्य पद : 30 अप्रैल 2006, रविवार, वैशाख सुदी 3, सवत् 2063, अरिहत नगर, दिल्ली

उद्घोष :

गुरु ज्ञान का है सदेश, ना हो घर मे कभी क्लेश ।
ज्ञान गुरु का है आह्वान, पौषध से होगा कल्याण।
ज्ञान गुरु का है सधान, णमोत्थुण से हो उत्थान।

ऐसे पूज्य गुरुदेव की आध्यात्मिक सयमी विकासयात्रा के प्रति शुभकामना।

निवेदक : श्री अरिहन्तमार्गी जैन महासंघ, दिल्ली

अर्थ सहयोगी परिचय

एक प्रेरक व्यक्तित्व–श्री अनूपचंद जी सेठिया

(पद से आपकी गरिमा नही, अपितु आपसे पद की गरिमा है)

प्रबुद्धजीवी, चिन्तनशील, सत्यलक्ष्मी, निर्भीक, धर्ममर्मज्ञ के ज्ञाता, पदलिप्सा से दूर, मितभाषी, उदारमना, विकासशील व्यक्तित्व के धनी है–श्री अनूपचदजी सेठिया।

जिन्होने अपनी प्रखर प्रतिभा के बल पर सन् 1965 मे राची यूनिवर्सिटी से मैकेनिकल इजीनियरिग की परीक्षा प्रथम श्रेणी विशेष योग्यता से पास की। आप विद्यार्थी जीवन मे प्रतिभा की दृष्टि से कुशाग्र तो थे ही, साथ ही व्यवहार कुशल, चिन्तनशील, व्यक्तित्व के कारण राची कॉलेज छात्र सघ के एक वर्ष तक प्रेसीडेन्ट, एक वर्ष तक ट्रेजरार पद पर भी रहे। उस समय भी सारे छात्र आपके व्यक्तितत्व से प्रभावित थे। सन् 1965 मे ही आपने व्यापार मे प्रवेश किया। तब आपके पिता श्री सुश्रावक कर्मठ व्यक्तित्व श्री भवरलालजी सेठिया के द्वारा प्राप्त व्यापार ''सेठिया प्लास्टिक'' नामक फैक्ट्री को अपनी सूझ-बूझ एव कर्मठ व्यक्तित्व से व्यापारिक ऊचाइयो पर पहुँचा दिया। इसके साथ ही नारियल तेल आदि अनेक छोटे-मोटे उद्योग भी सफलता के साथ चलाए। सप्रति समता पॉलिमर्स प्रा लिमिटेड, चेनल प्लास्टिक प्रा लि आदि नाम से कई उद्योग आपके विकासशील व्यक्तित्व की गाथा गा रहे है। इसी के साथ नानेश कोल्ड स्टोरेज प्राइवेट लिमिटेड, सेघा फ्लेक्स प्रा लि आदि विशाल इण्डस्ट्री भी आपकी सूझ-बूझ क्रियाशील व्यक्तित्व के बल पर साकार रूप लेती जा रही है। आप अपनी उम्र के करीब 6 दशक पार कर रहे है तथापि आप मे स्फूर्ति, चिन्तन क्षमता, कार्य कुशलता मे कमी नही अपितु और अधिक गतिशीलता आई है। आपके पिताश्री भवरलालजी सेठिया एव आपकी मातुश्री रतनबाई सेठिया तो समता विभूति आचार्य श्री नानेश के सानिध्य मे कई वर्षो से चातुर्मास मे चौका लगाते रहे है लेकिन आप

व्यापारिक कार्यो मे व्यस्त होने से नही आ पाये। 19 वर्ष बाद सन् 1982 मे अहमदाबाद मे आपने आचार्य श्री नानेश के पावन दर्शन किये एव जो सानिध्य पाया उससे आप मे धर्म का बीज पल्लवित, पुष्पित, फलित हुआ। आचार्य श्री नानेश के साथ ही सप्रति श्री अरिहतमार्गी जेन महासघ के उन्नायक आचार्य प्रवर श्री ज्ञानचद्र जी म सा के सानिध्य मे बैठकर भी तत्वचर्चा का लाभ उठाया। जिससे कि आप में धर्म के प्रति विशेष आस्था पैदा हुई। एक दिन के लिए आए, फिर 15 दिन तक रुके। उसके बाद तो एक वर्ष मे 5-7 बार आने का सिलसिला चल पडा। आचार्य श्री नानेश के साथ ही आप अपने मार्गदर्शक गुरु, परम पूज्य श्री ज्ञानचद जी म सा को उस समय से ही अपने गुरु के रूप मे मानने लगे। आज तक भी उन्हे अपने गुरु के रूप मे मानकर एक सच्चे शिष्य/श्रावक का परिचय दे रहे है। आप अपने गुरु के प्रति तन-मन-धन से समर्पित होकर अपने गुरु एवं उनसे सबधित श्री अरिहतमार्गी जैन महासघ की समर्पणा भाव से सेवा करने मे दिन रात लगे हुए हैं। आपने धर्म के मर्म को परपरा से नही बल्कि ज्ञ परिज्ञा से समझा और फिर स्वीकारा है। ऐसे व्यक्तित्व विरल ही मिलते है। प्रतिदिन सामायिक करना, स्वाध्याय करना, रात्रि भोजन का त्याग आदि कई नियम है। साथ ही अनेक शास्त्रो का स्वाध्याय किया है।

आज भी आपमे सब कुछ होकर भी विरक्ति प्रस्फुटित है। आपकी दो सुपुत्रिया श्री सीमाजी व श्री रूबीजी (सम्प्रति महासती श्री वैभवश्री जी, विरलश्रीजी) ने जब दीक्षा लेने की भावना दर्शायी तो आपने एक बार भी मना नही किया। बस इतना ही कहा–मार्ग अच्छा है, पहले समझ लो। जब उनकी परिपक्वता देखी तो सहर्ष आज्ञा देकर उनका सयम पथ प्रशस्त कर दिया। आज वे दोनो विदुषी, तपस्विनी, प्रखर व्याख्यात्री, होनहार, प्रतिभा सम्पन्न साध्वी रत्नाए है जो कि जिनशासन की भव्य प्रभावना कर रही है। आपकी धर्मपत्नी श्री उषा जी सेठिया का अपने पति के प्रति तो अद्‌भुत समर्पण तो है ही, साथ ही धर्म के प्रति प्रबल आस्था भी अनूठी है। बाहरी लोकेषणा से दूर आप

सदा सत-सतिया जी की सेवा मे लगी रहती है। आप अपने बच्चो से अधिक साधु-साध्वियो का ध्यान रखती है। आपके हृदय मे साधु-साध्वियो के प्रति मातृ-वात्सल्य है। आपके नेत्रो मे उनके प्रति मातृत्व टपकता नजर आता है। आप शास्त्रीय दृष्टि से 'अम्मा-पिया' का सही कर्तव्य निभा रही है। उनकी इस अद्भुत भावना को देखकर श्री अरिहतमार्गी जैन महासघ के उन्नायक आचार्य प्रवर श्री ज्ञानचद्र जी म सा ने उन्हे 'राजमाता' के नाम से सबोधित किया है। आपके सुपुत्र श्री राकेश जी सेठिया सी ए होने के साथ ही सफल व्यवसायी तो है ही लेकिन धर्मध्यान मे भी अग्रगण्य है। आप चिन्तक, सत्यलक्ष्मी, कर्मठ व्यक्तित्व के धनी है। आपकी पुत्रवधू नीलूजी पति अनुगामिनी, श्रद्धाशील, सौम्य स्वभावी महिला रत्न है। आपका सारा परिवार एक आदर्श एव प्रेरणास्पद परिवार है।

श्री अरिहतमार्गी जैन महासघ के निर्माण मे आपकी सबसे बडी अह भूमिका रही है। आप पद प्रतिष्ठा से कोसो दूर है। यही कारण है कि इतना कर्मठ व्यक्तित्व होकर भी कोई पद नही लेते। पद तो आपके आगे-पीछे घूमते रहते है। यह एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसकी गरिमा पद से नही, अपितु पद की गरिमा आप से है।

ऐसे व्यक्तित्व पर श्री अरिहतमार्गी जैन महासघ को नाज है, जिन्होने श्री अरिहतमार्गी जैन महासघ के स्थायी कोष मे 36 लाख की घोषणा कर रखी है। वैसे सघ के विकास के लिए आप तहेदिल से समर्पित है। आपका महासघ को इसी तरह सहयोग मिलता रहेगा।

—जयचन्दलाल सुखाणी, संरक्षक
श्री अरिहंतमार्गी जैन महासंघ, दिल्ली

मंगल-सूत्र

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिता, सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता।
आचार्या जिन शासनोन्नति करा, पूज्या उपाध्यायका ॥
श्रीसिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा, रत्न त्रयाराधका।
पचै ते परमेष्ठिन प्रतिदिन, कुर्वन्तु नो मगलम् ॥1॥

अर्हन्तो ज्ञान-भाज सुरवर-महिता, सिद्धि-सौधस्थ-सिद्धा।
पचाचार प्रवीणा प्रगुण गणधरा, पाठकाश्चागमानाम् ॥
लोके लोकेश-वन्द्या सकल-यतिवरा, साधु धर्माभिलीना।
पचाऽप्येते सदाऽस्मा विदधतु कुशल, विघ्न-नाश विधाय ॥2॥

वीर सर्वसुरा सुरेन्द्र-महितो, वीर बुधा सश्रिता।
वीरेणाभि हत स्वकर्म-निचयो, वीराय नित्य नम ॥
वीरात् तीर्थमिद प्रवृत्त मतुल, वीरस्य धीर तपो।
वीरे श्री-धृति-कीर्ति-कान्ति निचयो, हे वीर ! भद्र दिश ॥3॥

ब्राह्मी चन्दन बालिका भगवती, राजीमती द्रौपदी।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा, सती सुभद्राशिवा ॥
कुती शीलवती नलस्य दयिता, चूला प्रभावत्यपि।
पद्मावत्यपि सुन्दरी दिनमुखे, कुर्वन्तु नो मगलम् ॥4॥

ससार दावानल दाह-नीर, सम्मोह धूली हरणे समीरम्।
माया रसादारण सार-सीर, नमामि वीर गिरि सार-धीरम् ॥5॥

त्व नाथ ! दु खिजन-वत्सल ! हे शरण्य !
कारुण्य-पुण्य-वसते ! वशिना वरेण्य !
भक्त्या नते मयि महेश ! दया विधाय,
दु खाकुरोद् दलन-तत्परता विधेहि ॥6॥

भव बीजाकुर जनना, रागाद्या, क्षयमुपगता यस्य।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा, हरौ जिनो वा नमस्तस्मै ॥7॥

मगल भगवान् वीरो, मगलम् गौतम प्रभु।
मगल स्थूलिभद्राद्या, जैन धर्मोऽस्तु मगलम्॥8॥
सर्व मगल मागल्य, सर्व कल्याण कारणम्।
प्रधान सर्व धर्माणा, जैन जयतु शासनम्॥9॥
सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दु ख भाग् भवेत॥10॥
उपसर्गो क्षय यान्ति, छिद्यन्ते विघ्न वल्लय।
मन प्रसन्नतामेति, पूज्य मग्ने जिनेश्वरे॥11॥



नित्य स्मरण

1 तीन नवकार मत्र

2 मै स्वय अर्हम् हूँ, मुझमे अनन्त ज्ञान है।
मै स्वय अर्हम् हूँ, मुझमे अनन्त दर्शन है।
मै स्वय अर्हम् हूँ, मुझमे अनन्त शक्ति है।
मै स्वय अर्हम् हूँ, मुझमे अनन्त आनन्द है। – 3 बार

3 हे प्रभो ! मेरी इस आत्मा ने पिछले असख्यात भवो मे किसी भी प्राणी भूत, जीव, सत् की हिसा की हो तो मै उनसे क्षमायाचना करता हूँ।

4 हे प्रभो ! मेरी इस आत्मा ने पिछले असख्यात भवो मे किसी के भी ज्ञान मे, दर्शन मे, सम्यक्त्व मे, चारित्र मे, तप मे, सयम मे, साधना मे बाधा अन्तराय पहुचायी हो तो मै सभी से क्षमायाचना करता हूँ।

5 इस भूमण्डल पर जितने भी साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका विचरण कर रहे हो, उनका हित हो, सुख हो,पथ्य हो, मगल हो, कल्याण हो, जय हो, विजय हो। वे मुझे आशीर्वाद दे कि मेरा सुख हो, हित हो, पथ्य हो, मगल हो, कल्याण हो, जय हो, विजय हो।

6 हे प्रभु ! मुझे मिथ्यात्व ना हो,
हे प्रभु ! मेरा विवेक सदा जागृत रहे,
हे प्रभु ! मै क्षायिक सम्यक्त्व मे रमण करू,
हे प्रभु ! मै सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र एव सम्यक् तप की आराधना करू।
हे प्रभु ! मेरा ध्यान अरिहत भगवान जैसा हो,
हे प्रभु ! मेरा अध्यवसाय सिद्ध भगवान जैसा हो।

7 मै सदैव विनम्र रहूगा,
मै सदैव सरल निश्छल रहूगा,
मै सदैव नि स्पृह-अकिचन रहूगा,

मै सदैव सम्यक्तव भावो मे रहूगा,

मै सदैव पवित्र रहूगा,

मै सदैव निर्विकार गुरु, देव, धर्म के प्रति पूर्ण वफादार और जीवन के प्रति ईमानदार रहूगा।

मै सदैव स्वय न डरूगा, न दूसरो को डराऊगा।

क दोष मत दो, दोष मत दो, दोष मत दो निमित्त को।

ख भला हो, भला हो, सबका भला हो।

ग नमस्कार है सब सिद्धो को, नमस्कार है सब सन्तो को।

घ शरीर अलग है, मै अलग हूँ, शरीर नाशवान है।

ड परिवार निमित्त ही बनता है।

च धर्म कर्माधीन है।

छ मै सिद्ध बनूगा, मै सिद्ध बनूगा, मै सिद्ध बनूगा।

***

श्रावक के तीन मनोरथ

परिग्रह ममता तजी करी, पच महाव्रत धार।
अन्त समय आलोयणा, करूं सथारो सार॥
तीन मनोरथ एक कह्या, जो ध्यावे नित्य मन्न।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न॥

श्रावक के लिए यह आवश्यक है कि वह प्रतिदिन प्रात काल सामायिक करते समय या वैसे ही इन मनोरथो द्वारा भविष्य के लिए शुभ सकल्प करे–

1 पहले मनोरथ मे श्रावक जी यह भावना भावे कि कब यह शुभ समय प्राप्त होगा, जब मै अल्प या अधिक परिग्रह का त्याग करूगा।

2 दूसरे मनोरथ मे श्रावक जी यह चितन करे कि कब वह शुभ समय प्राप्त होगा जब मै गृहस्थावास को छोड कर मुडित होकर प्रव्रज्या अगीकार करूगा।

3 तीसरे मनोरथ मे श्रावकजी यह विचार करे कि कब वह शुभ अवसर प्राप्त होगा जब मै अन्त समय मे सलेखना स्वीकार कर आहार पानी का त्याग कर पादपोगमन मरण अगीकार कर जीवन मरण की इच्छा नही करता हुआ पडित मरण को प्राप्त करूगा।

इन तीन मनोरथो का मन, वचन, काया से चितन करता हुआ श्रमणोपासक (श्रावक) महानिर्जरा एव महापर्यवसान (प्रशस्त अन्त) वाला होता है।

–स्थानाग सूत्र स्थान 3॥

卐 शक्रस्तव-णमोत्थुणं 卐

(जाप विधि)

गुरुवन्दना

तिक्खुत्तो, आयाहिण, पयाहिण, करेमि, वदामि, नमसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाण, मगल, देवय, चेइय, पज्जुवासामि, मत्थएण-वदामि।

❊ इरियावहियं सूत्र ❊

इच्छाकारेण सदिसह भगव, इरियावहिय पडिक्कमामि। इच्छ इच्छामि पडिक्कमिउ। इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिग, पणग दग, मट्टी मक्कडा, सताणा सकमणे जे मे जीवा विराहिया, एगिन्दिया, बेइन्दिया, तेइन्दिया, चउरिन्दिया, पचेन्दिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, सघाइया, सघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाण सकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कड।

❊ खामेमि सव्वे जीवा का पाठ ❊

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमतु मे।
मित्ती मे सव्वेभूएसु, वेर मज्झ न केणई॥
एवमह आलोइय निदिय गरहिय दुगछिय सम्म।
तिविहेण पडिक्कतो वदामि जिण चउव्वीस॥

अरिहते शरण पवज्जामि, सिद्धे शरण पवज्जामि,
साहू शरण पवज्जामि, केवलिपण्णत्त धम्म शरण पवज्जामि।
''अरिहते शरण पवज्जामि'' (5 बार)
''पवज्जामि'' (5 बार)

❊ णमोत्थुण का पाठ ❊

सिद्ध स्तुति

णमोत्थुण, अरिहताण, भगवताण, आइगराण, तित्थयराण, सयस-बुद्धाण, पुरि-सुत्तमाण, पुरिस-सीहाण, पुरिस-वर-पुडरियाण, पुरिस-वर-गध-हत्थीण, लोगुत्तमाण, लोग-नाहाण, लोग-हियाण, लोग-पई वाण, लोग-पज्जोअ-गराण, अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्ग-दयाण, सरण-दयाण, जीव-दयाण, बोहि-दयाण, धम्म-दयाण, धम्म-देसयाण, धम्म-नाय-गाण, धम्म-सार-हीण, धम्मवर-चाउ-रत, चक्क-वट्टीण, दीवो-ताण, सरण-गई, पइट्ठा, अप्पडि-हय-वर-नाण-दसण-धराण, विअट्ट-छउ-माण, जिणाण, जाव-याण, तिण्णाण, तारयाण, बुद्धाण, बोह-याण, मुत्ताण, मोअ-गाण, सव्वणूण, सव्व-दरि-सीण सिव-मयल, मरुअ, मणन्त, मक्खय, मव्वाबाह, मपुणरा-वित्ति, सिद्धि-गइ-नाम-धेय-ठाण, सपत्ताण नमो जिणाण जिअभयाण।

❊ अरिहंत स्तुति ❊

णमोत्थुण, अरिहताण, भगवताण, आइगराण, तित्थयराण, सयस-बुद्धाण, पुरि-सुत्तमाण, पुरिस-सीहाण, पुरिस-वर-पुडरियाण, पुरिस-वर-गध-हत्थीण, लोगुत्तमाण, लोग-नाहाण, लोग-हियाण, लोग-पई वाण, लोग-पज्जोअ-गराण, अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्ग-दयाण, सरण-दयाण, जीव-दयाण, बोहि-दयाण, धम्म-दयाण, धम्म-देसयाण, धम्म-नाय-गाण, धम्म-सार-हीण, धम्मवर-चाउ-रत, चक्क-वट्टीण, दीवो-ताण, सरण-गई, पइट्ठा, अप्पडि-हय-वर-नाण-दसण-धराण, विअट्ट-छउ-माण, जिणाण, जाव-याण, तिण्णाण, तारयाण, बुद्धाण, बोह-याण, मुत्ताण, मोअ-गाण, सव्वणूण, सव्व-दरि-सीण सिव-मयल, मरुअ, मणन्त, मक्खय, मव्वाबाह, मपुणरा-वित्ति, सिद्धि-गइ-नाम-धेय-ठाण, सपाविउकामाण नमो जिणाण जिअभयाण।

(अवशेष बारह णमोत्थुण नम्बर दो (अरिहताण स्तुति) णमोत्थुण के अनुसार पढे)

✻ चत्तारि मंगलं का पाठ ✻

चत्तारि मगल अरिहता मगल, सिद्धा मगल, साहू मगल केवलिपण्णत्तो धम्मो मगल-चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरण पवज्जामि अरिहते शरण पवज्जामि, सिद्धे शरण पवज्जामि, साहू शरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्त धम्म शरण पवज्जामि। अरिहतो का शरणा, सिद्धो का शरणा, साधुओ का शरणा, केवलि प्ररूपित धर्म का शरणा। चार शरणा, दुर्गति हरणा और शरणा नही कोय, जो भवि प्राणी आदरे, तो अक्षय अमर पद होय॥

✻✻✻

हस्तिपाल राजा के स्वप्न

(तर्ज–खडी नीम के बीच)

राजा हस्तिपाल यू बोले, वचनामृत रस बरसाओ।
सपने देखे आज अजीब प्रभु, अर्थ कृपा कर फरमाओ ॥टेर॥

हस्ति एक बडा ही सुदर किंतु फस गया दलदल मे,
वीर कहे सुन राजन्! ऐसे, कुसगत ही हलचल मे,
फस जायेगे साधु-साध्वी, सयम तजते तुम पाओ ॥1॥

हस्तिपाल–बहुत रम्य एक बाग उजाडे, ऐसा देखा बदर था।
भगवान–सघनायक होगा ऐसा ही, सघ उपवन है सुदर सा।
महाव्रतो के पेड मनोरम, शिथिलाचार से उजडाओ ॥2॥

हस्तिपाल–कल्पवृक्ष सब आशा पूरे, विष-जतु से लिपटाया।
भगवान–दानवीर श्रावक जन तरु सम, लिगधारी ने भरमाया।
चूसेगे सब सत्त्व वे उनका, राजन् तुम ये समझ जाओ ॥3॥

हस्तिपाल–काक-पक्षी मिष्ठान को तजकर, खाने अशुचि दौड चला।
भगवान–कष्टो से घबराकर साधक छोडेगे निज गच्छ भला।
शिथिल गच्छ जा कहे अन्य को, मौज बहुत तुम भी आओ ॥4॥

हस्तिपाल–बलशाली एक सिह केसरी, कीडे उसको है खाते।
भगवान्–जैन धर्म है, सिह सम किंतु, स्वतीर्थी ही तडफाते।
अदर-अदर काटेगे, पर तीर्थी चाहे भय खाओ ॥5॥

हस्तिपाल–देखा कमल उकरडी खिलते, पद्माकर खिलने वाला,
भगवान–दुष्कुल वाले तिर जायेगे, धर्म-ध्यान का पी प्याला,
ऊचे कुल वाले दुर्व्यसनी, पापो मे लिपटे जाओ ॥6॥

हस्तिपाल–देखा भगवनन कृषिवरो को, जो बीजो को बाते थे।
सडे-गले-उपजाऊ भू मे, अच्छे ऊसर खोते थे।
भगवान–धर्मीजन को दान न देगे, धर्महीन भरते पाओ ॥7॥

हस्तिपाल–देखा धूल से सना पड़ा एक, काम कुभ था कोने मे।
भगवान–सुसाधु को कोई ना पूछे, आत्म दीप सजोने मे।
पाखण्डी शिथिलाचारी को, यश–पूजा पाते पाओ ।।8।।

अर्थ सुना सपनो का नरवर, मन ही मन मे अकुलाया।
भावी ऐसा दु खमय होगा, छोड़ू मै चचल माया।
शाश्वत लक्ष्मी को पाओ तुम, कहे वीर ना घबराओ ।।9।।

हस्तिपाल भगवन्, चरणो मे जीवन अर्पित करते है।
रत्नत्रयी के सच्चे साधक, बन शिवरमणी वरते है।
''ज्ञान'' सुपावन जिनवाणी का, आराधन कर जय पाओ ।।10।।



नवपद आयंबिल ओली की विधि का लेखा

दिन नाम पद माला का	माला	वदना	लोगस्स	णमोत्थुण	खमासमणो	
1 ॐ ह्री णमो अरिहताण	21	12	12	12	12 चावल	(सफेद)
2 ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण	21	8	8	8	8 गेहूँ	(लाल)
3 ॐ ह्री णमो आयरियाण	21	36	36	36	36 चना	(पीला)
4 ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाण	21	25	25	25	25 मूँग	(हरा)
5 ॐ ह्री णमो लोए सव्वसाहूण	21	27	27	27	27 उडद	(श्याम)
6 ॐ ह्रीं णमो णाणस्स	21	51	51	51	51 चावल	(सफेद)
7 ॐ ह्रीं णमो दसणस्स	21	67	67	67	67 चावल	(सफेद)
8 ॐ ह्रीं णमो चरित्तस्स	21	70	70	70	70 चावल	(सफेद)
9 ॐ ह्री णमो तवस्स	21	50	50	50	50 चावल	(सफेद)

निवेदन (1) कई आचार्यो के अभिमत मतानुसार माला गिनते समय नवकार मत्र के सभी पदो के पूर्व ''ॐ ह्री'' का प्रयोग लगाते है लेकिन वह आगमिक दृष्टि से उचित नही है। ऐसा केवल पौद्गलिक लाभ की दृष्टि से किया जाता है।



तीन माला प्रतिदिन अवश्य फेरें

सोमवार – श्री चन्द्रप्रभ नाथाय नम
मगलवार – श्री वासुपूज्य नाथाय नम
बुधवार – श्री महावीराय नम
गुरुवार – श्री सुमतिनाथाय नम
शुक्रवार – श्री सुविधि नाथाय नम
शनिवार – श्री मुनि सुव्रत नाथाय नम
रविवार – श्री पद्मनभ नाथाय नम

***

चौदह स्वप्न का स्तवन

राय सिद्धारथ घर पट – राणी,
नामे त्रिसला सुलक्षणा जी।
राज-भवन मॉहे पलगे पोढता,
चौदह सुपना राणी लह्या जी॥1॥

पहले सुपने गजवर दीठो,
बीजे वृषभ सुहामणो जी।
तीजे सिह सुलक्षण दीठो,
चौथे लक्ष्मी देवता जी॥2॥

पाचवे पचवरणी फूलनी माला,
छठे चन्दा अमिय-झर्यो जी।
सातमे सूरज, आठमे ध्वजा,
नवमे कलश अमिय भरयो जी॥3॥

पद्म सरोवर दशमे दीठो,
क्षीर समुद्र दीठो ग्यारमे जी।
देव विमान ते बार मे दीठो,
रण-झण घटा वाजतो जी ॥4॥

रतनोनी राशि ते तेरमे दीठी,
अग्निशिखा दीठी चउदमे जी।
चौदह सुपन देखी राणी जागी,
राय समीपे पहुँचिया जी ॥5॥

सुणोजी स्वामी मै सुपना दीठा,
पाछली रात रलियामणा जी।
राजा सिद्धारथ पडित तेड्या,
कहो पडित फल एहना जी ॥6॥

अम कुलमण्डन तुम कुलदीवो,
जयवता तीर्थकर जन्मशे जी।
जे नर गावे ते सुख पावे,
आनन्द रग वधामणा जी ॥7॥

***

सिद्ध-स्तुति

तुम तरण-तारण दुख-निवारण, भविक जीव आराधन।
श्री नाभिनन्दन जगत-वन्दन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥1॥

जगत-भूषण विगत दूषण, प्रणव प्राण निरुपक।
ध्यान रूप अनूप उपमं, नमो सिद्ध निरंजन ॥2॥

गगन-मडल मुक्ति पदवी, सर्व ऊर्ध्व निवासन।
ज्ञान-ज्योति अनन्त राजे, नमो सिद्ध निरजनं ॥3॥

अज्ञान निद्रा विगत-वेदन, दलित-मोह निरायुष।
नाम गोत्र-निरंतरायं, नमो सिद्ध निरजन ॥4॥

विकट क्रोधा मान योधा, माया लोभ विसर्जनं।
राग-द्वेष-विमर्द अंकुर, नमो सिद्ध निरंजनं ॥5॥

विमल केवल-ज्ञान लोचन,ध्यान शुक्ल-समीरित।
योगिना अतिगम्य रूप, नमो सिद्ध निरजनं ॥6॥

योग ने समोसरण मुद्रा, परिपल्यक-आसन।
सर्व दीसे तेज-रूप, नमो सिद्ध निरंजनं ॥7॥

जगत जिनके दास दासी, तास आस निरासन।
चन्द्र पै परमानन्द-रूपं, नमो सिद्ध निरंजनं ॥8॥

स्व समय समकितं दृष्टि जिनकी, सोय योगी अयोगिकं।
देखतामां लीन होवे, नमो सिद्ध निरंजनं ॥9॥

चन्द्र सूर्य दीप, मणि की, ज्योति येन उल्लंघितं।
ते ज्योति थी अपरम ज्योति, नमो सिद्ध निरंजनं ॥10॥

तीर्थ सिद्धा अतीर्थ सिद्धा भेद पंच-दर्शाधिकं।
सर्व-कर्म-विमुक्त चेतन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥11॥

एके मॉही अनेक राजे, अनेक मॉही एकक।
एक अनेक की नाहि संख्या, नमो सिद्ध निरंजनं ॥12॥

अजर अमर अलख अनन्त, निराकार निरंजनं।
परब्रह्म ज्ञान अनन्त-दर्शन, नमो सिद्ध निरजनं ॥13॥

अतुल सुख की लहर में, प्रभु लीन रहे निरंतर।
धर्मध्यान थी सिद्ध दर्शन, नमो सिद्ध निरजनं ॥14॥

ध्यान धूप मन पुष्पं, पचेन्द्रिय-हुताशन।
क्षमा-जाप संतोष-पूजा, पूजो देव निरजनं ॥15॥

तुम मुक्ति-दाता कर्म घाता, दीन जानि दया करो।
सिद्धार्थ नन्दन जगत-वन्दन, महावीर जिनेश्वरं ॥16॥



आत्मशुद्धि

आत्मशुद्धि हित धर्म ध्यान का, चितन जो नर करते है।
अशुभ कर्म को दूर हटाकर मोक्षमार्ग पग धरते है॥1॥

जग के अकेला आया हूँ और यहां से अकेला जाऊँगा।
कर्म शुभाशुभ संग में लेकर, यथास्थान मैं पाऊँगा॥2॥

मेरा मेरा करके फॅसता, नहीं कोई जग में तेरा है।
देह छोडकर उडेगा पंछी, भिन्न स्थान होगा डेरा॥3॥
महा विडंबना है परिजन की अंत साथ नहीं आता है।
निर्भय होकर देखो प्राणी, मरण अकेला पाता है॥4॥

धन्य धन्य नमिराज ऋषिश्वर, एकत्व भावना भायी थी।
कगंन से लेकर के प्रेरणा, झट मिथिला ठुकराई थी॥5॥

स्वर्गपति ने दस प्रश्नों का, भाव पूर्ण उत्तर पाया।
खुश होकर के स्वयं शकेन्द्र ने, ऋषि वर गुण गौरव गाया॥6॥

क्षण भंगुर है तेरी काया, क्षण भगुर है जग की माया।
खूब खिलाया, खूब पिलाया, फिर भी है नश्वर काया॥7॥

देख देख तन की सुन्दरता, खुश हो-होकर फूल रहा।
लूट गई तेरी रूप संपदा, सनत् चक्री को भूल रहा॥8॥

वैभव में मतवाला बनकर, घूम रहा जैसे हस्ती।
रावण जैसे चले गए फिर, तेरी कौन भला हस्ती॥9॥

पुद्गल के ये रूप पराये, जिन्हें तूं अपना मान रहा।
ज्ञानी कहते इन्हें छोड दे, क्यों तू अपनी तान रहा॥10॥

त्यागी ममता जागी समता, नश्वरता चित्त मे लाया।
अनित्य भावना भाकर के ही, भरत चक्री केवल पाया॥11॥

रोग शत्रु जब तन को घेरे, नहीं किसी का दाव लगा।
आत्मिक शांति जब ही पाता, मन में समता भाव जगा॥12॥

स्वय वाधता, स्वय भोगता, नही कोई शरण दाता।
त्राहि-त्राहि करके रोता, कोई न दुख से छुडवा पाता ॥13॥

जन्म जरा मृत्यु के भय से भयभीत बना पामर प्राणी।
कुकृत्यो को नही छोडता, पीला रहा दुख की घाणी ॥14॥

तीन खण्ड के स्वामी थे पर, मिला नही मरते पानी।
पुरजन परिजन पास ना आए, बीती थी जव जिदगानी ॥15॥

अहो अनाथी मुनि के सिर मे, घोर वेदना छायी थी।
रहे ताक ते पारिवारिक जन, चैन पलक नही पाई थी ॥16॥

अरहट माला सम जग लीला, सदा पलटती रहती है।
नही जगत मे स्थिरवासा, जिनवाणी यूं कहती है ॥17॥

अपना अपना किसे पुकारे, जग जीवन तो है सपना।
छोड कल्पना अपने मन की सत्य नाम प्रभु का जपना ॥18॥

जग का सुख शाश्वत नही होता, जैसे बादल की छाया।
क्यों भरमाया भौतिक सुख में, बिजली सी चंचल माया ॥19॥

कोई किसी का नही है शत्रु, न ही किसी का मित्र कोई।
करमाधीन जगत की लीला, क्यो तुने सन्मति खोई ॥20॥

शालिभद्र क्या ऋद्धि पाये, नृप श्रेणिक देखन् आया।
संसार भावना भा करके ही, जग वधन से मुक्ति पाया ॥21॥



रत्नाकर पच्चीसी

शुभ केली के आनन्द के, धन के मनोहर धाम हो
नरनाथ से सुरनाथ से, पूजित चरण गतकाम हो
सर्वज्ञ हो सर्वोच्च हो, सबसे सदा संसार मे
प्रज्ञा कला के सिन्धु हो, आदर्श हो आचार में॥1॥

संसार दु ख के वैद्य हो, त्रैलोक्य के आधार हो
जय श्रीश ! रत्नाकर प्रभो ! अनुपम कृपा अवतार हो
गतराग है विज्ञप्ति मेरी मुग्ध की सुन लीजिए
क्योंकि प्रभो ! तुम विज्ञ हो मुझको अभय वर दीजिए॥2॥

माता पिता के सामने बोली सुनाकर तोतली,
करता नही क्या अज्ञ बालक, बाल्य-वश लीलावली ?
अपने हृदय के हाल को, त्यों ही यथोचित रीति से,
मै कह रहा हूँ, आपके, आगे विनय से प्रीति से॥3॥

मैने नही जग मे कभी, कुछ दान दीनों को दिया,
मैं सच्चरित्र भी हूँ नही, मैंने नहीं तप भी किया।
शुभ भावना मेरी हुई, अब तक न इस संसार मे,
मैं घूमता हूँ, व्यर्थ ही, भ्रम से भवोदधि-धार में॥4॥

क्रोधाग्नि में रात-दिन हॉ ! जल रहा हूँ हे प्रभो'
मैं लोभ नामक सांप से, काटा गया हूँ हे विभो!
अभिमान के खल ग्राह से, अज्ञानवश मैं ग्रस्त हूँ
किस भॉति हों स्मृत आप, माया-जाल से मैं व्यस्त हूँ॥5॥

लोकेश ! पर-हित भी किया, मैंने न दोनों लोक में,
सुख-लेश भी फिर क्यों मुझे हो, झींखता हूँ शोक में।

जग मे हमारे से नरो का, जन्म ही बस व्यर्थ है,
मानो जिनेश्वर ! वह भवो की, पूर्णता के अर्थ है ॥6॥

प्रभु ! आपने निज मुख सुधा का, दान यद्यपि दे दिया,
यह ठीक है, पर चित ने उसका न कुछ भी फल लिया।
आनन्द-रस मे डूबकर सद्‌वृत वह होता नही,
है वज्र सा मेरा हृदय, कारण पडा बस है यही ॥7॥

रत्नत्रयी दुष्प्राप्य है, प्रभु से उसे मैने लिया,
बहु काल तक बहु बार जब जग का भ्रमण मैने किया।
हॉ खो गया वह भी अलस मै, नींद मै सोता रहा,
बतलाइये उसके लिए, रोऊँ प्रभो किसके यहॉ ? ॥8॥

संसार ठगने के लिए, वैराग्य को धारण किया
जग को रिझाने के लिए, उपदेश धर्मो का दिया।
झगडा मचाने के लिए मम जीभ पर विद्या बसी,
निर्लज्ज हो कितनी उडाई हे प्रभो ! अपनी हॅसी ॥9॥

परदोष को कह कर सदा मेरा वदन दूषित हुआ,
लख कर पराई नारियॉ को हां ! नयन भी दूषित हुआ।
मन भी मलिन है सोचकर, पर की बुराई हे प्रभो !
किस भॉति होगी लोक मे, मेरी भलाई हे विभो ! ॥10॥

मैने बढाई निज विवशता, हो अवस्था के वशी,
भक्षक रतीश्वर से हुई, उत्पन्न जो दु ख राक्षसी।
हॉ ! आपके सम्मुख उसे, अति लाज से प्रकटित किया,
सर्वज्ञ ! हो सब जानते, स्वयमेव संसृति की क्रिया ॥11॥

अन्योन्य मन्त्रों से परम, परमेष्ठि-मत्र हटा दिया,
सद्‌शास्त्र वाक्यो को, कुशास्त्रों से दबा मैने दिया।

विधि उदय को करने वृथा, मैने कुदेवाश्रय लिया,
हे नाथ, यों भ्रमवश अहित, मैंने नहीं क्या- क्या किया ? ॥12॥

हॉ ! तज दिया मैने प्रभो ! प्रत्यक्ष पाकर आपको,
अज्ञानवश मैंने किया, फिर देखिये किस पाप को,
वामाक्षियों के कुच कटाक्षो, पर सदा मरता रहा,
उनके विलासो का हृदय मे, ध्यान को धरता रहा ॥13॥

लख कर चपल-दृग युवतियों के मुख मनोहर रसमयी
जो मन-पटल पर राग भावों की, मलिनता बस गयी,
वह शास्त्र-निधि के शुद्ध जल से, भी न क्यों धोई गई ?
बतलाइए प्रभु आप ही, मम बुद्धि तो खोई गई ॥14॥

मुझमे न अपने अंग के, सौन्दर्य का आभास है,
मुझमें न गुणगण है विमल, मुझमे न कला विलास है।
प्रभुता न मुझमें स्वप्न की भी, चमकती है, देखिये,
तो भी भरा हूँ गर्व से, मैं मूढ हो किसके लिए ? ॥15॥

हॉ ! नित्य घटती आयु है, पर पाप-मति घटती नही,
आई बुढौती पर विषय से कामना हटती नही।
मैं यत्न करता हूँ, दवा मैं, धर्म मै करता नही।
दुर्मोह-महिमा से ग्रसित हूँ, नाथ ! बच सकता नहीं ॥16॥

अघ-पुण्यको, भव-आत्मा को, मैने कभी माना नही,
हॉ ! आप आगे हैं खडे, सर्वज्ञ से यद्यपि यहीं।
तो भी खलों के वाक्य को, मैने सुना कानो वृथा,
धिक्कार मुझको है, गया, मम जन्म ही मानों वृथा ॥17॥

सत्पात्र-पूजन देव पूजन, कुछ नहीं मैने किया,
मुनिधर्म श्रावकधर्म भी विधिवत नही पालन किया

नर–जन्म पाकर भी वृथा ही, मै उसे खोता रहा,
मानो अकेला घोर वन मे, व्यर्थ ही रोता रहा॥18॥

प्रत्यक्ष सुखकर जैन मतं मे प्रीति मेरी थी नही।
जिननाथ ! मेरी देखिये, है मूढता भारी यही।
हा ! कामधुक कल्पद्रुमादिक के यहाँ रहते हुए,
मैंने गँवाया जन्म को, धिक् दु:ख सहते हुए॥19॥

मैने न रोका रोग- दु ख, संभोग–सुख देखा किया,
मन मे न माना मृत्यु–भय, धन–लाभ ही लेखा किया।
हाँ ! मैं अधम पुद्गल सुखो का ध्यान नित करता रहा,
पर नरक–कारागार से, मन मे न मै डरता रहा॥20॥

सद्वृत्ति से मन मे न मैने, साधुता हा ! साधिता,
उपकार करके कीर्ति भी, मैने नही कुछ अर्जिता।
चउ तीर्थ के उद्धार आदिक, कार्य कर पाया नही,
नर–जन्म पारस तुल्य निज, मैने गँवाया व्यर्थ ही॥21॥

शास्त्रोक्त विधि वैराग्य भी, करना मुझे आता नही।
खल–वाक्य भी गतक्रोध हो, सहना मुझे आता नही
अध्यात्म –विद्या है न मुझमे, है न कोई सत्कला।
फिर देव ! कैसे यह भवोदधि, पार होवेगा भला ? ॥22॥

सत्कर्म पहले जन्म मे, मैने किया कोई नही,
आशा नही जन्मान्य मे, उसको करूगा मैं कही।
इस भाति का यदि हूँ जिनेश्वर, क्यो न मुझको कष्ट हो ?
संसार में फिर जन्म तीनों, क्यों न मेरे नष्ट हो ? ॥23॥

हे पूज्य ! अपने चरित को, बहुभाँति गाऊँ क्या वृथा,
कुछ भी नहीं तुमसे छिपी, है पापमय मेरी कथा।

क्योंकि त्रिजग के रूप हो, तुम, ईश हो, सर्वज्ञ हो,
पथ के प्रदर्शक हो, तुम्ही, मम चित्त के मर्मज्ञ हो ॥24॥

दीनोद्धारक धीर, आप ˙सा अन्य नहीं है,
कृपा-पात्र भी नाथ ! न मुझसा अपर कही है।
तो भी माँगू नहीं धान्य धन कभी भूल कर।
अर्हन् ! केवल बोधिरत्न, होवे मुझे मगलकर ॥25॥

श्री रत्नाकर गुणगान यह
दुरित दु ख सबके हरे।
बस एक यही है प्रार्थना
मंगलमय जगको करे॥



ॐ

श्री लालाजी रणजीत सिंह जी कृत

卐श्री बृहदालोयणा 卐

दोहा

सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगजन अरिहंत।
इष्टदेव वदू सदा, भयभंजन भगवत ॥1॥

अरिहंत सिद्ध समरू सदा, आचारज उवज्झाय।
साधु सकल के चरण को, वंदू शीश नमाय ॥2॥

शासन नायक सुमरिये, भगवन्त वीर जिनन्द।
अलिय विघन दूर हरे, आपे परमानन्द ॥3॥

अगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भण्डार।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वाछित फल दातार ॥4॥

श्री गुरुदेव प्रसाद से, होत मनोरथ सिद्ध।
ज्यू घन बरसत बेलि तरु, फूल फलन की वृद्ध ॥5॥

पच परमेष्ठी देव को, भजनपूर पहिचान।
कर्म अरि भाजे सभी, होवे परम कल्याण ॥6॥

श्री जिन युगपद कमल में, मुझ मन भ्रमर बसाय।
कब ऊगे वो दिन करूं, श्रीमुख दर्शन पाय ॥7॥

प्रणमी पदपकज भणी, अरिगंजन अरिहन्त।
कथन करू अब जीव को, किचित् मुझ विरतत ॥8॥

आरम्भ विषय कषाय वश, भमियो काल अनन्त।
लख चौरासी योनि से, अब तारो भगवन्त ॥9॥

देव गुरु धर्म सूत्र मे, नव तत्त्वादिक जोय।
अधिक ओछा जे कह्या, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥10॥

मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, भरियो रोग अथाग।
वैद्यराज गुरु शरण से, औषध ज्ञान वैराग ॥11॥

जे मै जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।
प्रभो ! तुम्हारी साख से, बारम्बार धिक्कार ॥12॥

बुरा-बुरा सबको कहूँ, बुरा न दीसे कोय।
जो घट शोधूँ आपणो, तो मांसु बुरा न कोय ॥13॥

कहवा मे आवे नही, अवगुण भर्‌या अनन्त।
लिखवा में क्योंकर लिखू, जानो श्री भगवन्त ॥14॥

करुणानिधि कृपा करी, कठिन कर्म मोय छेद।
मोह अज्ञान मिथ्यात्व को करजो ग्रंथि भेद ॥15॥

पतित उद्धारण नाथजी, अपनो विरुद विचार।
भूल चूक सब माहरी, खमिये बारम्बार ॥16॥

माफ करो सब माहरा, आज तलक ना दोष।
दीन दयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील सन्तोष ॥17॥

आतम निन्दा शुद्ध भणी, गुणवन्त वंदन भाव।
राग द्वेष पतला करी, सबसे खमत खमाव ॥18॥

छूटूं पिछला पाप से, नवा न बांधु कोय।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय ॥19॥

परिग्रह ममता तजी करी, पंच महाव्रत धार।
अन्त समय आलोयणा, करूं संथारो सार ॥20॥

तीन मनोरथ1 ए कह्या, जो ध्यावे नित्य मन।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिवसुख धन ॥21॥

अरिहन्त देव निर्ग्रन्थ गुरु, संवर निर्जरा धर्म।
केवली भाषित शास्त्र, यही जैनमत धर्म ॥22॥

आरभ विषय कषाय तज, शुद्ध समकित व्रत धार।
जिन आज्ञा परमाण कर निश्चय खेवो पार ॥23॥

खिण निकमो रहनो नही, करनो आतम काम।
भणनो गुणनो सीखनो, रमनो ज्ञान आराम ॥24॥

अरिहन्त सिद्ध सब साधुजी, जिन आज्ञा धर्मसार।
मांगलिक उत्तम सदा, निश्चय शरणा चार ॥25॥

घडी-घडी पल पल सदा, प्रभु सुमरण को चाव।
परभव सफलो जो करे, दान शील तप भाव ॥26॥

2

सिद्धां जैसो जीव है, जीव सो ही सिद्ध होय।
कर्म मैल का आतरा, बूझे विरला कोय ॥1॥

कर्म पुद्गल रूप है, जीव रूप है ज्ञान।
दो मिलकर बहुरूप है, बिछुड्यां पद निर्वाण ॥2॥

जीव कर्म भिन्न-भिन्न करो, मनुष्य जन्म को पाय।
ज्ञानातम वैराग्य से धीरज ध्यान जगाय ॥3॥

द्रव्य थकी जीव एक है, क्षेत्र असख्य प्रमाण।
काल थकी सर्वदा रहे, भावे दर्शन ज्ञान ॥4॥

गर्भित3 पुद्गल पिण्ड मे, अलख अमूरति देव।
फिरे सहज भव चक्र मे, यह अनादि की टेव ॥5॥

फूल इत्तर घी दूध मे, तिल मे तेल छिपाय।
यूं चेतन जड करम संग, बंध्यो ममत दु ख पाय ॥6॥

जो जो पुद्गल की दशा, ते निज माने हंस।
या ही भरम विभावसे, बढे करम को वश ॥7॥

रतन बंध्यो गठडी, विषे, सूर्य छिप्यों घन मांय।
सिह पिजरा मे दियो, जोर चले कुछ नांय ॥8॥

ज्यो बन्दर मदिरा पियॉ, बिच्छु डंकित गात।
भूत लग्यो कौतुक करे, त्यो कर्मो को उत्पात ॥9॥

कर्म संग जीव मूढ है, पावे नाना रूप।
कर्म रूप मल के टले, चेतन सिद्ध सरूप ॥10॥

शुद्ध चेतन उज्जवल दरब, रह्यो कर्म मल छाय।
ज्ञान आतम सुं धोवतां, ज्ञान ज्योति बढ जाय ॥11॥

ज्ञान थकी जाने सकल, दर्शन श्रद्धा रूप।
चारित्र से आवत रुके, तपस्या क्षपन स्वरूप ॥12॥

कर्म रूप मल के शुधे, चेतन चॉदी रूप।
निर्मल ज्योति प्रकट भयां, केवल ज्ञान अनूप ॥13॥

मूसी पावक सोहगी, फूंका तणो उपाय।
राम चरण चारूं मिल्यां, मैल कनक को जाय ॥14॥

कर्म रूप बादल मिटे, प्रगटे चेतन चंद।
ज्ञानरूप गुण चांदनी, निर्मल ज्योति अमन्द ॥15॥
रागद्वेष दो बीज से कर्म बंध की व्याध।
ज्ञानातम वैराग्य से, पावे मुक्ति समाध ॥16॥

अवसर बीत्यो जात है, अपने वश कुछ होत।
पुण्य छतां पुण्य होत है, दीपक दीपक ज्योत ॥17॥

कल्पवृक्ष चिन्तामणि, इण भव में सुखकार।
ज्ञान वृद्धि इनसे अधिक, भव दु ख भंजनहार ॥18॥

राई मात्र घट वध नहीं, देख्या केवल ज्ञान।
यह निश्चय कर जानके, तजिये प्रथम ध्यान ॥19॥

दूजा कभी न चिंतिये, कर्म वंध बहु दोष।
तीजा चौथा ध्याय के, करिये मन संतोष ॥20॥

गई वस्तु सोचे नही, आगम वाछा नांय।
वर्तमान वर्ते सदा, सो ज्ञानी जग मायं ॥21॥

अहो समदृष्टि जीवडा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल।
अन्तर्गत न्यारो रहे, ज्यु धाय खिलावे बाल ॥22॥

सुख दु:ख दोनुं बसत है, ज्ञानी के घट माय।
गिरि सर दीसे मुकुर मे, भार भीजवो नाय ॥23॥

जो जो पुद्गल फरसना, निश्चय फरसे सोय।
ममता–समता भाव से करम बध क्षय होय ॥24॥

बाध्या सोई भोगवे, कर्म शुभाशुभ भाव।
फल निर्जरा होत है, यह समाधि चित्त चाव ॥25॥

बांध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्यां न छुडाय।
आप ही करता भोगता, आप ही दूर कराय ॥26॥

पथ कुपथ घट बध करी, रोग हानि वृद्धि थाय।
यूं पुण्य पाप किरिया करी, सुख दु ख जग में पाय ॥27॥

सुख दिया सुख होत है, दु ख दिया दु ख होय।
आप हणे नही अवर को, तो आपको हणे न कोय ॥28॥

ज्ञान गरीबी गुरु वचन, नरम वचन निर्दोष।
इनको कभी न छोडिये, श्रद्धा शील संतोष ॥29॥

सत मत छोडो हो ! नरा, लक्ष्मी चौगुनी होय।
सुख दु ख रेखा कर्म की, टाली टले न कोय ॥30॥

गोधन गजधन रत्न धन, कचन खान सुखान।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूल समान ॥31॥

शील रतन मोटो रतन, सब रतनां की खान।
तीन लोक की संपदा, रही शील मे आन ॥32॥

शीले सर्प न आभडे, शीले शीतल आग।
शीले अरि करि, केसरी, भय जावे सब भाग ॥33॥

शील रतन के पारखी, मीठा बोले बैन।
सब जग से ऊँचा रहे, जो नीचा राखे नैनं ॥34॥

तन कर मन कर वचन कर, देत न काहु दु·ख।
कर्म रोग पातक झड़े, देखत वॉ का मुख ॥35॥

पान खिरंतो इम कहे, सुन तरुवर वनराय।
अब के बिछड़े कब मिले, दूर पड़ेंगे जाय ॥36॥

तब तरुवर उत्तर दियो, सुनो पत्र इक बात।
इस घर एही रीत है, एक आवत एक जात ॥37॥
बरस दिनों की गॉठ को, उत्सव गाय बजाय।
मूरख नर समझे नहीं, बरस गांठ को जाय ॥3॥

सोरठा–पवन तणो विश्वास, किण कारण ते दृढ कियो।
इनकी एही रीत, आवे के आवे नहीं ॥1॥

दोहा

करज बिरानां काढ के, खर्च किया बहु नाम।
जब मुद्दत पूरी हुवे, देना पडसी दाम ॥1॥

बिन दियॉ छूटे नहीं, यह निश्चय क़र मान।
हंस–हंस के क्यूं खरचिये, दाम बिराना जान ॥2॥

जीव हिंसा करतां थकां, लागे मिष्ट अज्ञान।
ज्ञानी इम जाने सही, विष मिलियो पकवान ॥3॥

काम भोग प्यारा लगे, फल किपाक समान।
मीठी खाज खुजावतां, पीछे दुःख की खान ॥4॥

जप तप संजम दोहिलो, औषध कडवी जाण।
सुख कारण पीछे घणो, निश्चय पद निर्वाण ॥5॥

डाभ अणी जल बिन्दुवो, सुख विषयन को चाव।
भवसागर दुःख जल भर्‍यो, यह संसार स्वभाव ॥6॥

चढ उत्तंग जहां से पतन, शिखर नही वो कूप।
जिस सुख भीतर दु ख बसे, सो सुख भी दु ख रूप ॥7॥

जब लग जिसके पुण्य को, पहुचे नही करार।
तब लग उसको माफ है, अवगुण करे हजार ॥8॥

पुण्य क्षीण जब होत है, उदय होत है पाप।
दाझे वन की लाकडी, प्रजले आपो आप ॥9॥

पाप छिपाया ना छिपे, छिपे तो मोटा भाग।
दाबी दूबी ना रहे, रूई लपेटी आग ॥10॥

बहुत बीती थोडी रही, अब तो सुरत संभार।
परभव निश्चय जावणो, वृथा जन्म मत हार ॥11॥

चार कोस गामान्तरे, खरची बांधे लार।
परभव निश्चय जावणो, करिये धर्म विचार ॥12॥

रज विरज ऊँची गई, नरमाई के ताण।
पत्थर ठोकर खात है, करडाई के ताण ॥13॥

अवगुण उर धरिये नही, जो होवे वृक्ष बबूल।
गुण लीजे 'कालू' कहे, नहीं छाया में शूल ॥14॥

जैसी जापे वस्तु है, वैसी दे दिखलाय।
वांका बुरा न मानिये, वो लेन कहां से जाय ॥15॥

गुरु कारीगर सारिखा, टाँची वचन विचार।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार ॥16॥

सतन की सेवा कियां, प्रभु रीझत है आप।
जांका बाल खिलाइये, तांका रीझत बाप ॥17॥

भवसागर संसार मे, दीपा श्री जिनराज।
उद्यम करी पहुंचे तीरे, बैठी धर्म जहाज ॥18॥

निज आतम को दमन कर, पर आतम को चीन।
परमातम को भजन कर, सोही मत परवीन ॥19॥

समझूं शंके पाप से, अण-समझूं हरषन्त।
वे लूखा वे चीकणां, इण विध कर्म बधन्त ॥20॥

समझ सार संसार में, समझूं टाले दोष।
समझ-समझ कर जीवडा, गया अनंता मोक्ष ॥21॥

उपशम विषय कषाय नो, संवर तीनों योग।
किरिया जतन विवेक से, मिटे कुकर्म दु ख रोग ॥22॥

रोग मिटे समता वधे, समकित व्रत आराध।
निर्वैरी सव जीव का, पावे मुक्ति समाध ॥23॥

॥ इति भूल चूक मिच्छामि दुक्कड ॥

सिद्ध श्री परमात्मा अरिगंजन अरिहन्त।
इष्टदेव वन्दूं सदा, भयभंजन भगवन्त ॥1॥

अनन्त चौवीसी जिन नमूं, सिद्ध अनन्ता क्रोड।
वर्तमान जिनवर सबे, केवली दो कोडी नव कोड ॥2॥

गणधरादिक सर्व साधुजी, समकित व्रत गुणधार।
यथायोग्य वंदन करूं, जिन आज्ञा अनुसार ॥3॥

(यहा एक बार नमस्कार मन्त्र का स्मरण करना चाहिए)

पंच परमेष्ठी देव को, भजन पुर पहिचान।
कर्म अरि भाजे सभी, शिवसुख मंगल थान ॥4॥

अरिहन्त सिद्ध समरूं सदा, आचारज उवज्झाय।
साधु सकल के चरण को वंदूं शीश नमाय ॥5॥

शासन नायक सुमरिए, वर्धमान जिनचन्द।
अलिय विघन दूर हरे, आपे परमानन्द ॥6॥

अगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भण्डार।
श्री गुरु गौतम सुमरिए, वाछित फल दातार ॥7॥

श्री जिन युग पद–कमल मे, मुझ मन अलिय वसाय।
कब ऊगे वो दिन करू, श्री मुख दर्शन पाय ॥8॥

प्रणमी पद–पकज भणी, अरिगजन अरिहन्त।
कथन करू अब जीव को, किचित् मुझ विरतत ॥9॥

गाथा

हूँ अपराधी अनादि को, जन्म–जन्म गुना किया भरपूर के।
लूटिया प्राण छ काय ना, सेविया पाप अठारे करूर के।
श्री मुनि सुव्रत साहिवा ॥1॥

आज दिन तक इस भव में और पहले संख्यात, असख्यात, अनन्त भवों मे कुगुरु, कुदेव और कुधर्म की सद्दहणा, प्ररूपणा, फरसना, सेवानादि संबंधी पाप दोष लगा हो उनका मिच्छामि दुक्कड। मैने अज्ञानपन से, मिथ्यात्वपन से, कषापन से, अशुभयोग से, प्रमाद करके, अपछदा, अविनीतनपना किया, श्री अरिहन्त भगवंत वीतराग देव, केवलज्ञानी, गणधर देव, आचार्य जी महाराज, धर्माचार्य जी महाराज, उपाध्याय जी महाराज, साधु जी महाराज, आर्या जी महाराज, तथा सम्यग्दृष्टि, स्वधर्मी श्रावक और श्राविका इन उत्तम पुरुषो की तथा शास्त्र, सूत्रपाठ, अर्थ, परमार्थ और धर्म सम्बन्धी समस्त पदार्थो की अविनय, अभक्ति, आशातना आदि की, कराई, अनुमोदी, मन, वचन, काया से द्रव्य, क्षेत्र काल, भाव से सम्यक प्रकार विनय भक्ति आराधना पालना फरसना सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रम से नही की, नही कराई, नही अनुमोदी तो मुझे धिक्कार–धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब मुझे माफ करो, मै मन, वचन, काया करके क्षमाता हूँ।

दोहा

मैं अपराधी गुरुदेव को, तीन भवन को चोर
ठगूं बिराना माल मैं, हा हा कर्म कठोर ॥1॥

कामी कपटी लालची अपछंदा अविनीत।
अविवेकी क्रोधी कठिन, महापापी * रणजीत ॥2॥

जे मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।
नाथ तुम्हारी साख से, बारम्बार धिक्कार ॥3॥

मैंने छकायपन से, छकाय की विराधना की – पृथ्वीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय–सन्नी, असन्नी, गर्भज चौदह प्रकार के सम्मूर्छिम आदि त्रस स्थावर जीवों की विराधना मन, वचन, काया से की, कराई, अनुमोदी, उठते बैठते, सोते, हालते, चालते, शस्त्र वस्त्र मकानादि उपकरण उठाते, धरते, लेते, देते, वर्तते वर्तावते, अप्पडिलेहणा दुप्पडिलेहणा सम्बन्धी, अप्रमार्जना, दुष्प्रमार्जना संबंधी, न्यूनाधिक विपरीत पडिलेहणा संबंधी और आहार विहार आदि अनेक प्रकार के कर्त्तव्यों में संख्यात, असंख्यात और निगोद आसरी अनन्त जीवों के जितने प्राण लूटे उन सब जीवों का मैं अपराधी हूँ, निश्चय करके बदले का देनदार हूँ, सब जीव मेरे को माफ करो, मेरी भूल, चूक, अवगुण अपराध सब माफ करो।

देवसी, राई, पक्खी, चौमासी और सम्वत्सरी संबंधी बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं, बारम्बार मैं खमाता हूँ। आप सब क्षमा करो।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ति मे सव्व भूएसु, वैरं मज्झं न केणइ ॥1॥

वह दिन धन्य होगा, जिस दिन मैं छ काय के वैर बदले से निवृत्त होऊँगा, समस्त चौरासी लाख जीव योनि को अभयदान

---

* यहाँ पर अपना-अपना नाम लेना है।

देऊँगा वह दिन मेरा परम कल्याण का होगा।

सुख दियां सुख होत है, दु ख दियां दु·ख होय।
आप हणे नही अवर को आपको हणे न कोय ॥1॥

दूजा पाप मृषावाद–झूठ बोलना। क्रोध के वश, मान के वश, माया के वश, लोभ के वश हास्य वश, भय वश, मृषा (झूठ) वचन बोला, निदा, विकथा की, कर्कश–कठोर, मर्मकारी वचन बोला इत्यादि अनेक प्रकार से मृषावाद बोला, बोलवाया और अनुमोदा, उसका मन वचन काया से मिच्छा मि दुक्कड।

थापनमोसा मै किया, करी विश्वासघात।
परनारी धन चोरिया, प्रकट कह्यो नही जात ॥1॥

मुझे धिक्कार–धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं। वह दिन धन्य होवेगा जिस दिन मैं सर्व प्रकार से मृषावाद का त्याग करूंगा, वह दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥2॥

तीसरा पाप अदत्तादान–बिना दी हुई वस्तु चोरी करके, लेना। यह बडी चोरी लौकिक विरुद्ध, अल्प चोरी मकान संबधी अनेक प्रकार के कर्त्तव्यो में उपयोग सहित या बिना उपयोग से अदत्तादान–मन–वचन काया से चोरी की, कराई, अनुमोदी तथा धर्म–सम्बन्धी ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप श्री भगवन्त गुरुदेव की बिना आज्ञा किया, उसका मुझे धिक्कार–धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडे। वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन सर्व प्रकार से अदत्तादान कात्याग करूंगा। वह दिन मेरा परम कल्याण का होवेगा ॥3॥

चौथा पाप मैथुन सेवन करने के लिए मन वचन और काया के योग प्रवर्त्ताया, नववाड सहित ब्रह्मचर्य नहीं पाला, नववाड मे अशुद्धपन से प्रवृत्ति हुई, मैने मैथुन सेवन किया, दूसरों से करवाया और सेवन करने वालों को अच्छा समझा, उसका मन वचन काया से मुझे धिक्कार–धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं। वह दिन मेरा

धन्य होगा जिस दिन मै नववाड सहित ब्रह्मचर्य–शीलरत्न आराधूगा यानी सर्वथा प्रकार से काम विकार से निवर्तूगा। वह दिन मेरा परम कल्याण का होगा ॥4॥

पांचवॉ परिग्रह–सचित्त परिग्रह तो दास–दासी, द्विपद, चतुष्पद (पशु) आदि अनेक प्रकार के और अचित्त परिग्रह–सोना, चॉदी, वस्त्र आभूषण आदि नव प्रकार के हैं। उनकी ममता मूर्च्छा की, क्षेत्र, घर आदि नव प्रकार के बाह्य परिग्रह और चौदह प्रकार के आभ्यन्तर परिग्रह को रखा, रखवाया और अनुमोदा तथा रात्रि भोजन, अभक्ष्य आहारादि सम्बन्धी पाप दोष सेव्या हो वह मुझे धिक्कार–धिक्कारबारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं। वह दिन मेरा धन्य होवेगा जिस दिन सब प्रकार के परिग्रह का त्याग कर संसार के प्रपंच से निवर्तूगा, वह दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥5॥

छठा क्रोध–क्रोध करके अपनी आत्मा को तथा पर आत्मा को दु खी किया ॥6॥

सातवां मान–अहंकार भाव लाया तीन गारव और आठ मद आदि किया ॥7॥

आठवॉ माया – धर्म सम्बन्धी तथा संसार सम्बन्धी अनेक कर्त्तव्यो में कपट किया ॥8॥

नववॉ लोभ – मूर्च्छा भाव लाया, आशा तृष्णा वांछा आदि की ॥9॥

दसवॉ राग – मन पसन्द वस्तु से स्नेह किया ॥10॥

ग्यारहवॉ द्वेष – नापसंद वस्तु देखकर उस पर द्वेष किया ॥11॥

बारहवॉ कलह – अप्रशस्त (खराब) वचन बोलकर क्लेश उत्पन्न किया ॥12॥

तेरहवॉ अभ्याख्यान – झूठा कलंक दिया ॥13॥

चौदहवॉ पैशुन्य – दूसरे की चुगली की ॥14॥

पन्द्रहवॉ पर परिवाद – दूसरे का अवगुण वाद (अवर्णवाद) बोला, निदा की ॥15॥

सोलहवॉ रति अरति – पाच इन्द्रियो के 23 विषय और 240 विकार है, इनमे मनपसन्द पर राग किया और नापसन्द पर द्वेष किया तथा सयम तप आदि पर अरति रखी तथा आरम्भादिक असयम और प्रमाद मे रति भाव किया ॥16॥

सतरहवा माया मृषावाद–कपट सहित झूठ बोला ॥17॥

अठारहवॉ मिथ्या दर्शनशल्य–श्री जिनेश्वर देव के मार्ग मे शंका काक्षा आदि विपरीत श्रद्धा प्ररूपणा की + ॥18॥

इस प्रकार अठारह पाप का द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से जानते, अजानते मन, वचन और काया से सेवन किया, कराया, और अनुमोदा, दिया वा, राओ वा एगओ वा, परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, इस भव मे, परभव मे, पहिले के सख्यात, असख्यात, अनन्त भवो मे भवभ्रमण करते आज दिन ※ तक राग–द्वेष, विषय, कषाय, आलस, प्रमाद आदि ।

पौद्गलिक प्रपच, परगुण पर्याय की विकल्प भूल की ज्ञान की विराधना की, दर्शन की विराधना की, चारित्र की विराधना की, चारित्राचारित्र की व तन की विराधना की, शुद्ध श्रद्धा, शील, सतोष, क्षमा आदि निज स्वरूप की विराधना की, उपशम, विवेक, सवर, सामायिक, पौषध, प्रतिक्रमण, ध्यान, मौन आदि व्रत पच्चक्खाण, दान, शील, तप वगैरह की विराधना की, परम कल्याणकारी इन बोलो की आराधना पालनादि मन वचन और काया से नही की, नही कराई और नही अनुमोदी। छह आवश्यक को सम्यक् प्रकार से विधि व उपयोग सहित आराधा नही, पाला नहीं, फरसा नही, विधि

+ यहॉ पर 18 पापस्थान की आलोयणा विशेष विस्तारपूर्वक अपने से बने इस प्रकार करनी।

※ यहॉ बोलने वाले वर्तमान मे जो सवत् महिना और तिथि हो वह कहना।

अनुपयोग निरादरपने की, किन्तु आदर सत्कार भाव भक्तिसहित नहीं किया। ज्ञान के चौदह, समकित के पांच, बारह व्रतों के साठ, कर्मादान के पन्द्रह, संलेखणा के पाच, इन निन्नाणवे अतिचारों में तथा 124 अनाचारों में तथा साधुजी के 125 अतिचारों में तथा 52 अनाचारों का श्रद्धानादिक में विराधना आदि जो कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार आदि सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा, जानते अजानते मन, वचन, काया से की उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं।

मैंने जीव को अजीव श्रद्धया, प्ररूप्या, अजीव को जीव श्रद्धया, प्ररूप्या, धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म श्रद्धह्या प्ररूप्या तथा साधु को असाधु व असाधु को साधु श्रद्धया प्ररूप्या तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज महासतियांजी की सेवा भक्ति मान्यता आदि यथाविधि नहीं की, नहीं कराई, नहीं अनुमोदी तथाा असाधुओं की सेवा भक्ति मान्यता आदि का पक्ष लिया, मुक्तिमार्ग में संसार का मार्ग यावत् पच्चीस मिथ्यात्व में से किसी मिथ्यात्व का सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा मन, वचन, काया से की, पच्चीस कषाय सम्चन्धी, पच्चीस क्रिया सम्बन्धी, तेतीस आशातना सम्चन्धी, ध्यान के 19 दोष, वंदना के 32 दोष, सामायिक के 32 दोष, पौषध के 18 दोष आदि में मन वचन और काया से जो कोई पाप दोष लगा हो लगाया हो, अनुमोदा हो, उसका मुझे धिक्कार-धिक्कार वारम्वार मिच्छा मि दुक्कडं। महामोहनीय कर्मवंध के तीस स्थानक को मन वचन और काया से सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा की, शील की नववाड तथा आठ प्रवचन माता की विराधनादि की, श्रावक के 21 गुण ओर वारह व्रत की विराधनादि मन वचन और काया से की कराई, अनुमोदी तथा तीन अशुभ लेश्या के लक्षणों की, और अन्य वोलों की सेवना की व तीन शुभ लेश्या के लक्षणों की और अन्य और वोलों की विराधना की, चर्चा वार्त्ता वगैरह में श्री जिनेश्वर देव का मार्ग लोपा, गोपा, नहीं माना, अछते को स्थापना की, छते की स्थापना नहीं की।

जिनेश्वर देव का मार्ग लोपा, गोपा, नही माना, अछते को रथापना की, छते की स्थापना नही की। और अछते को निषेध नही किया, छते की स्थापना और अछूते को निषेध करने का नियम नही किया, कलुषता की, तथा छह प्रकार के ज्ञानावरणीय बन्ध के बोल, ऐसे ही छह प्रकार के दर्शनावरणीय वन्ध के बोल, आठ कर्म की अशुभ प्रकृति के बोल, सत्तावन कारणो से पाप की वयासी प्रकृति बांधी, बधाई, अनुमोदी, मन वचन काया करके तो उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। एक-एक बोल से लगाकर क्रोडा क्रोडी यावत् सख्याता असंख्याता अनता-अनंत बोलों से जानने योग्य बोलो को सम्यक् प्रकार से जाना नही, श्रद्धह्या नही, प्ररूप्या नही, तथा विपरीतपने से श्रद्धा आदि की, कराई अनुमोदी, मन, वचन काया से तो, उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्वार मिच्छा मि दुक्कड।

एक-एक बोल से यावत् अनन्ता बोलो मे छोडने योग्य बोल को छोड़ा नही, उनको मन वचन काया से सेवन किया, सेवन कराया और अनुमोदा, उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं। एक-एक बोल से लगाकर जाव अनन्ता अनन्त बोलों मे आदरने योग्य बोलों को आदरा नहीं, आराधा नहीं, पाला नहीं, फरसा नहीं, विराधना खडना आदि की, कराई, अनुमोदी, मन वचन काया से उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं। श्री जिन भगवन्त जी महाराज आपकी आज्ञा मे जो-जो प्रमाद किया और सम्यक् प्रकार उद्यम नही किया, नही कराया, नही अनुमोदा मन वचन काया करके तथा अनाज्ञा मे उद्यम किया, कराया, अनुमोदा, एक अक्षर के अनन्तवे भाग मात्र दूसरा कोई स्वप्न मात्र में भी श्री भगवन्त महाराज आपकी आज्ञा से न्यूनाधिक विपरीत प्रवृत्ति की हो तो उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडं।

दोहा

श्रद्धा अशुद्ध प्ररूपणा, करी फरसना सोय।
अनजाने पक्षपात में, मिच्छा दुष्कृत मोय ॥1॥

सूत्र अर्थ जानूं नही, अल्प बुद्धि अनजान।
जिनभाषित सब शास्त्र का, अर्थ पाठ परमाण ॥2॥
देव गुरु धर्म सूत्र के, नव तत्त्वादिक जोय।
अधिक ओछा जे कह्या, मिच्छा दुक्कडं मोय ॥3॥

हूं मगसेलियो * हो रह्यो, नहीं ज्ञान रस भीज।
गुरु सेवा न करी सकूं, किम मुझ कारज सीझ ॥4॥

जाने देखे जे सुने, देवे सेवे मोय।
अपराधी उन सबन का, बदला देसूं सोय ॥5॥

गबन करूं बुगचा रतन, द्रव्य भाव सब कोय।
लोकन में प्रगट करूं, सूई पाई मोय ॥6॥

जैन धर्म शुद्ध पाय के, बरते विषय कषाय।
यह अचम्भा हो रह्या, जल में लागी लाय ॥7॥

जितनी वस्तु जगत में, नीच-नीच से नीच।
सब से मैं पापी बुरो, फंसु मोह के बीच ॥8॥

एक कनक अरु कामिनी, दो मोटी तलवार।
उठ्यो थो जिन भजन को, बीच में लियो मार ॥9॥

सवैया

मैं महापापी छांड के ससार, छारछार ही का विहार करूं, अगला कुछ धोय कीच, फेर कीच वीच रहूं, विषय सुख चाहूं मन प्रभुता वधारी है। करत फकीरी ऐसी, अमीरी की आस करूं, काहे को धिक्कार सिर पगडी उतारी है ॥10॥

दोहा

त्याग न कर, सग्रह करू, विषय वमन जिम आहार।
तुलसी ए मुझ पतित को, बारम्बार धिक्कार ॥11॥

राग द्वेष दो वीज है, कर्म बन्ध फल देत।
इनकी फांसी मे बध्यो, छूटूं नही अचेत ॥12॥

रतन बंध्यो गठडी विषे, भानु छिप्यो घन माय।
सिह पिजरा मे दियो, जोर चले कुछ नाय ॥13॥

बुरा-बुरा सबको कहूँ, बुरा न दीसे कोय।
जो घट शोधु आपणो, मोसूँ वुरो न कोय ॥14॥

कामी कपटी लालची, कठिन लोह को दाम।
तुम पारस परसंग थी, सुवर्ण थासु स्वाम ॥15॥

श्लोक

मैं जपहीन हूँ, तपहीन हूँ, प्रभु हीन संवर समगतं। हे दयाल ' कृपाल करूणानिधि, आयो तुम शरणागतं। प्रभु आयो तुम शरणागतं ॥16॥

दोहा

नही विद्या नहीं वचन बल, नही धीरज गुण ज्ञान।
तुलसीदास गरीब की, पत राखो भगवान् ॥17॥

विषय कषाय अनादि को, भरियो रोग अगाध।
वैद्यराज गुरु शरण से, पाऊँ चित्त समाध ॥18॥

कहवा मे आवे नही, अवगुण भर्या अनन्त।
लिखवा में क्यूं कर लिखूं, जाणो श्री भगवन्त ॥19॥

आठ कर्म प्रबल करी, भमियो जीव अनादि।
आठ कर्म छेदन करी, पावे मुक्ति समाधि ॥20॥

पथ कुपथ कारण करी, रोग हानि वृद्धि थाय।
इम पुण्य पाप किरिया करी, सुख दुख जग मे पाय ॥21॥

बांध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्यां न छुटाय।
आप ही करता भोगता, आप ही दूर कराय ॥22॥

हूँ अविवेक, मोहवश आंख मीच अधियार।
मकडी जाल बिछायके, फंसु आप धिक्कार ॥23॥

सर्व भक्षी जिम अग्नि हूँ, तज्यो विषय कषाय।
स्वच्छन्दी अविनीत मैं, धर्मी ठग दु ख दाय ॥24॥

कहा भयो घर छांड के, तजियो न माया सग।
नाग तजी जिम कॉचली, विष नहीं तजियों अंग ॥25॥

आलस विषय कषाय वश, आरम्भ परिग्रह काज।
योनि चौरासी लख भम्यो, अब तारो महाराज ॥26॥

आतम निंदा शुद्ध भणी, गुणवन्त वदन भाव।
राग द्वेष उपशम करी, सबसे खमत खमाव ॥27॥

पुत्र कुपुत्र जो मैं हुओ, अवगुण भरह्या अनन्त।
अपनो विरूद विचार के, माफ, करो भगवंत ॥28॥

शासनपति वर्धमान जी, तुम लग मेरी दौड।
जैसे समुद्र जहाज बिन, सूझत और न ठौड ॥29॥

भव भ्रमण संसार दु.ख ताका वार न पार।
निर्लोभी सतगुरु बिना, कौन उतारे पार ॥30॥

भव सागर संसार में, दीपो श्री जिनराज।
उद्यम करी पहुँचे तीरे, बैठी धर्म जहाज ॥31॥

पतित उद्धारन.नाथजी, अपनो विरूद विचार।
भूल चूक सब माहरी, खमिये वारम्बार ॥32॥

माफ करो सब माहरा, आज तलक रा दोष।
दीन दयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील सन्तोष ॥33॥

देव अरिहन्त निर्ग्रन्थ गुरु, संवर निर्जरा धर्म।
केवली भाषित शास्त्र है, यही जैनमत धर्म ॥34॥

इस अपार ससार में, शरण नही अरु कोय।
या ते तुम पद कमल ही, भक्त सहायी होय ॥35॥

छूटूं पिछला पाप से, नवा न बाधू कोय।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय ॥36॥

आरभ परिग्रह तजी करी, समकित व्रत आराध।
अन्त समय आलोय के, अनशन चित्त समाध ॥37॥

तीन मनोरथ ए कह्या, जे ध्यावे नित्य मन्न।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न ॥38॥

श्री पंच परमेष्ठी भगवंत गुरुदेव महाराज जी आपकी आज्ञा है। सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप संयम, सवर, निर्जरा और मुक्ति मार्ग यथाशक्ति से शुद्ध उपयोग सहित आराधने फरसने सेवने की आज्ञा है। बारम्बार शुभयोग सम्वन्धी, सज्झाय, ध्यानादिक अभिग्रह, नियम पक्चक्खाण आदि करने की, करावने की समिति गुप्ति प्रमुख आराधने की सर्व प्रकार आज्ञा है।

निश्चय चित्त शुद्ध मुख पढत, तीन योग थिर थाय।
दुर्लभ दीसे कायरा, हलुकर्मी चित्त भाय ॥1॥

अक्षर पद हीणो अधिक, भूल चूक जो होय।
अरिहंत सिद्ध आत्म साख से, मिच्छा दुष्कृत मोय ॥2॥

भूल चूक मिच्छा मि दुक्कड।

॥ इति श्री श्रावक लालाजी रणजीतसिहजी
कृत बृहदालोयणा सपूर्ण ॥

卐 लघु साधु वन्दना 卐

साधुजी ने वंदना नित नित कीजे, प्रात उगंते सूर रे प्राणी।
नीच गति मॉ ते नही जावे, पावे ऋद्धि भरपूर रे प्राणी। ॥1॥

मोटा ते पंच महाव्रत पाले, छह कायारा प्रतिपाल रे प्राणी।
भ्रमर भिक्षा मुनि सूझती लेवे, दोष बियालीस टाल रे प्राणी। ॥2॥

ऋद्धि सम्पदा मुनि कारमी जाणी, दीधी संसार ने पूठ रे प्राणी।
ए पुरुषां री सेवा करता, आठ करम जाय टूट रे प्राणी। ॥3॥

एक एक मुनिवर रसना त्यागी, एक एक ज्ञान रा भण्डार रे प्राणी।
एक एक मुनिवर वैयावच वैरागी, जेना गुणारो नहीं पार रे प्राणी। ॥4॥

गुण सत्तावीस करीने दीपे, जीत्या परीसह बावीस रे प्राणी।
बावन तो अनाचार जो टाले, तेने नमाऊँ मारो शीश रे प्राणी। ॥5॥

जहाज समान ते संत मुनीश्वर, भव्य जीव बैठे आय रे प्राणी।
पर उपकारी मुनि दाम न मागे देवे मुक्ति पहुँचाय रे प्राणी। ॥6॥

इण चरणे जीव साता पावे, पावे ते लीलविलास रे प्राणी।
जन्म जरा ने मरण मिटावे, नावे फरी गर्भावास रे प्राणी। ॥7॥

एक वचन श्री सतगुरु केरो, जो वैठे दिल मांय रे प्राणी।
नरक निगोद मॉ ते नहीं जावे, इम कहे जिनराय रे प्राणी। ॥8॥

प्रात उठीने उत्तम प्राणी, सुणे साधुजी रो व्याख्यान रे प्राणी।
एहवा पुरुषां री सेवा करता, पावे अमर विमान रे प्राणी ॥9॥

संवत अठार ने वर्ष अडतीसे, बूसी गॉव चौमास रे प्राणी।
मुनि आसकरण इण पर जंपे, हूँ तो उत्तम साधॉ रो दास रे प्राणी। ॥10॥



卐 बड़ी साधु वन्दना 卐

नमूँ अनन्त चौबीसी ऋषभादिक महावीर।
आरज क्षेत्रमॉ, घाली धर्म नी सीर ॥1॥

महा अतुल बली नर, शूर वीर ने धीर।
तीरथ प्रवर्तावी, पहुँच्या भवजल तीर ॥2॥

सीमधर प्रमुख, जघन्य तीर्थकर वीश।
छे अढी द्वीप मॉ, जयवंता जगदीश ॥3॥

एक सौ ने सित्तर, उत्कृष्ट पदे जगीश।
धन्य मोटा प्रभुजी, तेह ने नमावुं शीश ॥4॥

केवली दोय कोडी, उत्कृष्टा नव कोड।
मुनि दोय सहस्त्र कोडी, उत्कृष्टा नव सहरत्र कोड ॥5॥

विचरे विदेह मे, मोटा तपसी घोर।
भावे करी वन्दूं, टाले भवनी खोड ॥6॥

चौवीसे जिनना, सघला ही गणधार।
चौदह सौ ने बावन, ते प्रणमू सुखकार ॥7॥

जिन शासन नायक, धन्य श्री वीर जिनंद।
गौतमादिक गणधर, वर्तायो आनन्द ॥8॥

श्री ऋषभदेव ना, भरतादिक सौ पूत।
वैराग्य मन आणी, सयम लियो अद्‌भूत ॥9॥

केवल उपजाव्यूं, कर करणी करतूत।
जिनमत दीपावी, सघला मोक्ष पहूँत ॥10॥

श्री भरतेश्वर ना, हुआ पटोधर आठ।
आदित्य जशादिक, पहुँच्या शिवपुर वाट ॥11॥

श्री जिन अन्तरना, हुआ पाट असंख्य।
मुनि मुक्ति पहुँच्या, टाली कर्म नो वंक ॥12॥

धन्य कपिल मुनिवर, नमि नमूं अणगार।
जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस्त्र रमणी परिवार ॥13॥

मुनिवर हरिकेशी, चित्त मुनिश्वर सार।
शुद्ध संयम पाली, पाम्या भवनो पार ॥14॥

वली इक्षुकार राजा, घर कमलावती नार।
भग्गू ने जशा, तेहना दोय कुमार ॥15॥

छये छति ऋद्धि छांडी ने लीधो संयम भार।
इण अल्पकाल माँ, पाम्या मोक्ष द्वार ॥16॥

वलि संयति राजा, हिरण आहिडे जाय।
मुनिवर गर्दभाली, आण्यो मारग ठाय ॥17 ॥

चारित्र लईने, भेट्या गुरुना पाय।
क्षत्रिराज ऋषीश्वर, चर्चा करी चित्तलाय ॥18॥

वलि दशे चक्रवर्ती, राज्य रमणी ऋद्धि छोड़।
दशे मुक्ति पहुँच्या, कुल ने शोभा चहोड ॥19॥

इण अवसर्पिणी माँ, आठ राम गया मोक्ष।
बलभद्र मुनीश्वर, गया पंचमे देवलोक ॥20॥

दशार्णभद्र राजा, वीर वाँद्या धरी मान।
पछि इन्द्र हटायो, दियो छह काय अभयदान ॥21॥

करकण्डू प्रमुख, चारे प्रत्येक बुद्ध।
मुनि मुक्ति पहुँच्या, जीत्या कर्म महाजुद्ध ॥22॥

धन्य मोटा मुनिवर, मृगापुत्र जगीश।
मुनिवर अनाथी, जीत्या राग ने रीश ॥23॥

वलि समुद्रपाल मुनि, राजमति रहनेम।
केशी ने गौतम पाम्या शिवपुर क्षेम ॥24॥

धन्य विजयघोष मुनि, जयघोष वलि जाण।
श्री गर्गाचार्य पहुँच्या छे निर्वाण ॥25॥

श्री उत्तराध्ययन माँ, जिनवर कर्या बखाण।
शुद्ध मन से ध्यावो, मन माँ धीरज आण ॥26॥

चलि खंदक सन्यासी, राख्यो गौतम स्नेह।
महावीर समीपे, पच महाव्रत लेह ॥27॥

तप कठिन करीने, झोसी आपणी देह।
गया अच्युत देवलोके, चवि लेसे भव-छह ॥28॥

वलि ऋषभदत्त मुनि, सेठ सुदर्शन सार।
शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गागेय अणगार ॥29॥

शुद्ध सयम पाली, पाम्या केवल सार।
ये चारे मुनिवर पहुँच्या मोक्ष मँझार ॥30॥

भगवन्त नी माता, धन्य धन्य सती देवानन्दा।
वलि सती जयन्ती, छोड दिया घर फंदा ॥31॥

सती मुक्ति पहुँच्या, वलि ते वीरनी नंद।
महासती सुदर्शना, घणी सतियों ना वृन्द ॥32॥
वलि कार्तिक सेठे, पडिमा वही शूरवीर।
जीम्यो मोरा-ऊपर, तापस बलती खीर ॥33॥

पछी चारित्र लीधो, मित्र एक सहस्त्र आठ धीर।
मरी हुआ शक्रेन्द्र, चवी लेसे भव तीर ॥34॥

वलि राय उदायन, दियो भाणेज ने राज।
पछी चारित्र लेइने, सार्या आतम काज ॥35॥

गगदत्त मुनि आनन्द, तिरण तारण री जहाज।
कौशल मुनि रोहा, दियो घणाने साज ॥36॥

धन्य सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अनगार।
आराधक होइ ने, गया देवलोक मंझार ॥37॥

चवी मुक्ति जासे, वलि सिंह मुनीश्वर सार।
बीजा पण मुनिवर, भगवती मा अधिकार ॥38॥

श्रेणिक ना बेटा, मोटा मुनिवर मेघ।
तजी आठ अन्तेउरी, आण्यो मन संवेग ॥39॥

वीर पे व्रत लइने, बांधी तप नी तेग।
गया विजय विमाने, चवी लेसे शिव वेग ॥40॥

धन्य थावच्चा पुत्र, तजी बत्तीसे नार।
तेने साथे निकल्या, पुरुष एक हजार ॥41॥

शुकदेव सन्यासी, एक सहस्त्र शिष्य लार।
पंचशय सुं शैलक, लीधो संजमभार ॥42॥

सव सहस्त्र अढाई, घणा जीवों ने तार।
पुंडरिक गिरि ऊपर, कियो पाद्पोपगमन संथार ॥43॥
आराधक हुई ने, कीधो खेवो पार।
हुआ मोटा मुनिवर, नाम लियां निरतार ॥44॥

धन्य जिनपाल मुनिवर, दोय धन्ना हुआ साध।
गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जासे आराध ॥45॥

मल्लिनाथ ना छह मित्र, महावल प्रमुख मुनिराय।
सर्वे मुक्ति सिधाव्या, मोटी पदवी पाय ॥46॥

वलि जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान।
पोते चारित्र लईने, पाम्या मोक्ष निधान ॥47॥

धन्य तेतली मुनिवर, दियो छकाय अभयदान।
पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवलज्ञान ।।48।।

धन्य पॉचे पाडव, तजी द्रौपदी नार।
थेवरानी पासे, लीधो सयम भार ।।49।।

श्री नेमि वन्दन नो, एहवो अभिग्रह कीध।
मास–म.स खमण तप, शत्रुंजय जई सिद्ध ।।50।।

धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार।
कीडियो नी करुणा, आणी दया अपार ।।51।।

कडवा तुबा नो, कीधो सगलो आहार।
सर्वार्थ सिद्ध पहुॅच्या, चवी लेसे भवपार ।।52।।

वलि पुंडरीक राजा, कुडरीक डगियो जाण।
पोते चारित्रे लईने, न घाली धर्म मा हाण ।।53।।

सर्वार्थ सिद्ध पहुॅच्या, चवी लेसे निर्वाण।
श्री ज्ञातासूत्र मॉ, जिनवर कर्‌या बखाण ।।54।।
गौतमादिक कुंवर, सगा अठारह भ्रात।
सर्व अधकवृष्णि सुत, धारिणी ज्यांरी मात ।।55।।

तजी आठ अन्तेउरी, काढी दीक्षा नी बात।
चारित्र लेईने, कीधो मुक्ति नो साथ ।।56।।

श्री अनीकसेनादिक, छये सहोदर भाय।
वसुदेव ना नन्दन, देवकी ज्यारी माय ।।57।।

भद्दिलपुर नगरी, नाग गाहावई जाण।
सुलसा घर बधिया, साभली नेमि नी वाण ।।58।।

तजी बत्तीस बत्तीस अन्तेउर, निकलिया छिटकाय।
नल कूबेर समाणा, भेट्‌या श्री नेमि ना पाय ।।59।।

करी छठ छठ पारणा, मन में वैराग्य लाय।
एक मास संथारे, मुक्ति विराज्या जाय ॥60॥

वली दारुक सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय।
कुँवर अनादृष्टि, गया मुक्तिगढ मांय ॥61॥

वसुदेवना नन्दन, धन्य धन्य गजसुकुमाल।
रूपे अति सुन्दर, कलावन्त वय बाल ॥62॥

श्री नेमि समीपे, छोड्यो मोह जंजाल।
भिक्षु नी पडिमा, गया मसाण महाकाल ॥63॥

देखी सोमिल कोप्यो, मस्तक बांधी पाल।
खेरानां खीरा, शिर ठविया असराल ॥64॥

मुनि नजर न खंडी, मेटी मननी झाल।
परीषह सहीने, मुक्ति गया तत्काल ॥65॥

धन्य जाली मयाली, उवयालादिक साध।
शाम्ब ने प्रद्युम्न, अनिरुद्ध साधु अगाध ॥66॥

वलि सत्यनेमि दृढनेमि, करणी कीधी निर्बाध।
दशे मुक्ति पहुँच्या जिनवर वचन आराध ॥67॥

धन्य अर्जुनमाली, कियो कदाग्रह दूर।
वीर पै व्रत लेईने, सत्यवादी हुआ शूर ॥68॥

करी छठ छठ पारणा, क्षमा करी भरपूर।
छह मासा मांही, कर्म किया चकचूर ॥69॥

कुँवर अइमुत्ते, दीठा गौतम स्वाम।
सुणी वीर नी वाणी, कीधो उत्तम काम ॥70॥

चारित्र लईने, पहुंच्या शिवपुर ठाम।
धुर आदि मकाई, अन्त अलक्ष मुनि नाम ॥71॥

बलि कृष्णराय नी, अग्रमहिषी आठ।
पुत्र-वहू दोय, सच्या पुण्य ना ठाठ ॥72॥

जादव कुल सतियॉ, टाली दु ख उच्चाट।
पहुची शिवपुर मा, ए छे सूत्र नो पाठ ॥73॥

श्रेणिक नी राणी, काली आदिक दश जाण।
दशे पुत्र वियोगे, सॉभली वीरनी वाण ॥74॥

चन्दन वाला पै, सयम लेई हुई जाण।
तप करी देह झोसी, पहुची छे निर्वाण ॥75॥

नंदादिक तेरह, श्रेणिक नृप नी नार।
सघली चन्दनबाला पै, लीधो सयम भार ॥76॥

एक मास सथारे, पहुंची मुक्ति मंझार।
ऐ नेवुं जणा नो, अन्तगड मां अधिकार ॥77॥

श्रेणिक ना बेटा, जालियादिक तेवीश।
वीर पै व्रत लेईने, पाल्यो विश्वावीश ॥78॥

तप कठिन करी ने, पूरी मन जगीश।
देवलोके पहुंच्या, मोक्ष जासे तजी रीश ॥79॥

काकन्दी नो धन्नो, तजी बत्तीसे नार।
महावीर समीपे, लीधो संयम भार ॥80॥

करी छठ छठ पारणा, आयम्बिल उज्झित आहार।
श्री वीर बखाण्यो, धन धन्नो अणगार ॥81॥

एक मास संथारे, सर्वार्थ सिद्ध पहुत।
महाविदेह क्षेत्र मां, करसे भव नो अन्त ॥82॥

धन्नानी रीते, हुआ नव ही संत।
श्री अनुत्तरोववाइय मा, भॉखी गया भगवंत ॥83॥

सुवाहु प्रमुख, पांच पांचसौ नार।
तजी वीर पै लीधा, पांच महाव्रत सार ।।84।।

चारित्र लेई ने, पाल्यो निरतिचार।
देवलोके पहुंच्या, सुख विपाके अधिकार ।।85।।

श्रेणिक ना पोता, पउमादिक हुआ दस।
वीर पै व्रत लेईने, काढ्यो देह नो कस ।।86।।

संयम आराधी, देवलोक मा जइ बस।
महाविदेह क्षेत्र मां, मोक्ष जासे लेई जस ।।87।।
बलभद्र ना नन्दन, निषधादिक हुआ बार।
तजी पचास अन्तेउरी, त्याग दियो संसार ।।88।।

सहु नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध।
सर्वार्थसिद्ध पहुंच्या, होशे विदेहे सिद्ध ।।89।।

धन्नो ने शालिभद्र, मुनीश्वरों नी जोड।
नारी ना बन्धन, तत्क्षण नाख्या तोड ।।90।।

घर कुटुम्ब कविलो, धन कंचन नी कोड।
मास मास खमण तप, टालसे भव नी खोड ।।91।।

श्री सुधर्मा स्वामी ना शिष्य, धन धन जम्बू स्वाम।
तजी आठ अन्तेउरी, माता पिता धन धाम ।।92।।

प्रभवादिक तारी, पहुंच्या शिवपुर ठाम।
सूत्र प्रवर्तावी, जग मां राख्यो नाम ।।93।।

धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्ण राय ना नन्द।
शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव फन्द ।।94।।

वलि खन्दक ऋषि नी, देह उतारी खाल।
परीषह सहीने, भव फेरा दिया टाल ।।95।।

वलि खन्दक ऋषि ना, हुआ पांच सौ शिष्य।
घाणी मा पील्या, मुक्ति गया तजी रीश ॥96॥

सभूतिविजय तणा-शिष्य, भद्रवाहु मुनिराय।
चौदह पूर्वधारी, चन्द्रगुप्त आण्यो ठाय ॥97॥

वलि आर्द्र कुमार मुनि, रथूलिभद्र नन्दिषेण।
अरणक अइमुत्तो, मुनिश्वरो नी श्रेण ॥98॥
चौवीसे जिनना, मुनिवर सख्या अठावीश लाख।
ऊपर सहस्त्र अडतालीस, सूत्र परम्परा भाख ॥99॥

कोइ उत्तम वांचो, मोंढे जयणा राख।
उघाडे मुख बोल्यां, पाप लगे इम भाख ॥100॥

धन्य मरुदेवी माता, ध्यायो निर्मल ध्यान।
गज होदे पायो, निर्मल केवलज्ञान ॥101॥

धन्य आदीश्वर नी पुत्री ब्राह्मी सुन्दरी दोय।
चारित्र लेईने, मुक्ति गई सिद्ध होय ॥102॥

चौबीसे जिननी, बडी शिष्यणी चौबीस।
सती मुक्ति पहुच्या, पूरी मन जगीश ॥103॥

चौबीसे जिननां, सर्व साधवो सार।
अडतालीस लाख ने, आठ से सित्तर हजार ॥104॥

चेडा नी पुत्री, राखी धर्म सु प्रीत।
राजीमती विजया, मृगावती सुविनीत ॥105॥

पद्मावती मयणरेहा, द्रौपदी दमयन्ती सीत।
इत्यादिक सतियां, गई जमारो जीत ॥106॥

चौबीसे जिनना, साधु साध्वी सार।
गया मोक्ष देवलोके, हृदय राखो धार ॥107॥

इण अढाई द्वीप मां, घरडा तपसी बाल।
शुद्ध पंच महाव्रत धारी, नमो नमो त्रिकाल ॥108॥

इण जतियों सतियों ना, लीजे नित्य प्रति नाम।
शुद्ध मन थी ध्यावो, एह तिरण नो ठाम ॥109॥

इण जतियों सतियों शुं, राखो उज्ज्वल भाव।
इम कहे ऋषि जयमल, एह तिरणो नो दाव ॥110॥

संवत अठारह ने, वर्ष साते सिरदार।
गढ जालोर मॉही, एह कह्यो अधिकार ॥111॥

॥ इति बडी साधु वन्दना ॥

***

फ्र मेरी भावना फ्र

जिसने रागद्वेष-कामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवो को मोक्ष-मार्ग का, नि रपृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी मे लीन रहो ॥1॥

विषयो की आशा नही जिनको, साम्यभाव धन रखते है।
निजपर के हित-साधन में जो, निशदिन तत्पर रहते है।
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते है।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत् के, दु ख समूह को हरते है ॥2॥

रहे सदा सत्सग उन्ही का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्ही जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे।
नही सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
परधन-वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ॥3॥

अहकार का भाव न रक्खू, नही किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढती को, कभी न ईर्षा-भाव धरूं।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य व्यवहार करू।
बने जहाँ तक इस जीवन मे, औरों का उपकार करूं ॥4॥

मैत्री-भाव जगत् मे मेरा, सब जीवों पर नित्य रहे।
दीन दु खी जीवों पर मेरे, उर से करुणास्रोत बहे।
दुर्जन-क्रुर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझ को आवे।
साम्यभाव रक्खू मै उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ॥5॥

गुणी जनों को देख हृदय मे, मेरे प्रेम उमड आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नही कृतघ्न कभी मै, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥6॥

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्यायमार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे॥7॥

हो कर सुख में मग्न न फूले, दु:ख में कभी न घबरावें।
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नही भय खावे।
रहे अडोल-अकंप निरंतर, यह मन दृढतर बन जावे।
इष्ट-वियोग अनिष्ट योग मे, सहनशीलता दिखलावें॥8॥

सुखी रहें सब जीव जगत् के, कोई कभी न घबरावे।
वैर, पाप, अभिमान छोड जग, नित्य नये मंगल गावे।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावें।
ज्ञान चरित्र उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावें॥9॥

ईति-भीति व्यापे नही जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ हो कर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा-धर्म जगत् में, फैले सर्व हित किया करे॥10॥

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे।
बन कर सब 'युगवीर' हृदय से, देशोन्नति-रत रहा करें।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दु:ख संकट सहा करें॥11॥

निजानन्द में रमा करें।

***

卐 बारह भावना 卐

1. अनित्य भावना (भरत चक्रवर्ती ने भाई)

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सवको एक दिन, अपनी–अपनी वार॥

2. अशरण भावना (अनाथी मुनि ने भाई)

दल–वल देवी देवता, मात–पिता परिवार।
मरती बिरियॉ जीव को, कोई न राखनहार॥

3. ससार भावना (धन्ना शालिभद्र ने भाई)

दाम बिना निर्धन दु खी, तृष्णा वश धनवान।
कहूँ न सुख ससार मे, सव जग देख्यो छान॥

4. एकत्व भावना (नमिराजर्षि ने भाई)

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यो कबहुँ या जीव को, साथी सगा न कोय॥

5. अन्यत्व भावना (मृगापुत्र ने भाई)

जहॉ देह अपनी नही, तहॉ न अपना कोय।
घर–संपत्ति पर प्रकट ये, पर है परिजन लोय॥

6. अशुचि भावना (मल्लिनाथ ने भाई)

दीपै चाम चादर मढी, हाड पीजरा देह।
भीतर या समजगत मे, और नही घिन–गेह॥

7. आस्त्रव भावना (समुद्रपाल ने भाई)

जग–वासी घूमें सदा, मोह–नीद के जोर।
सब लूटे नही दीसता, कर्म–चोर चहुँ ओर॥

8. संवर भावना (गौतम गणधर ने भाई)

मोह नींद जब उपशमे, सतगुरु देय जगाय।
कर्म–चोर आवत रुकें, तब कुछ बने उपाय॥

9. निर्जरा भावना (अर्जुनमाली ने भाई)

ज्ञान–दीप तप–तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसे नहीं, पैठे पूरब चोर॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार॥

10. लोक भावना (शिवराजर्षि ने भाई)

चौदह राजू उतंग नभ, लोक–पुरुष–संठान।
तामें जीव अनादि तैं, भरमत है बिन ज्ञान॥

11. बोधि–दुर्लभ भावना (भगवान ऋषभदेव के 98 पुत्रो ने भाई)

धन–जन–कंचन राज–सुख, सबहिं सुलभ कर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान॥

12. धर्म भावना (धर्मरुचिमुनि ने भाई)

याचे सुरतरु देत सुख, चिन्तित चिन्ता रैन।
बिन याचे बिन चिन्तिये, धर्म सदा सुख दैन॥

***

卐 श्री शान्तिनाथजी का छन्द 卐

शान्तिनाथजी को कीजे जाप, क्रोड भवारा काटे पाप॥ टेर॥
शान्तिनाथजी मोटा देव, सुर, नर, सारे जा की सेव॥1॥

दुख दारिद्र जावे, दूर, सुख सम्पत होवे भरपूर।
ठग फासीघर जावे भाग, बलती होवे शीतल आग॥2॥ शा ॥

राज लोकमा कीर्ति घणी, शान्ति जिनेश्वर माथे धणी।
जो ध्यावे प्रभुजी रो ध्यान, राजा देवे अधिको मान॥3॥ शां. ॥

गड गुँबड पीडा मिट जाय, द्वेषी दुश्मन लागे पाय।
सगलो भाग्यो मननो भर्म, पामो समकित काटो कर्म॥4॥ शां ॥

सुनो प्रभु मोरी अरदास, हूँ सेवक तुम पूरो आश।
मुझ मन चिन्तित कारज करो, चिता आरति विघ्न हरो॥5॥ शा. ॥

मेटो म्हारा आल जजाल, प्रभु मुझने तूं नयन निहाल।
आपणी कीरति ठामो ठाम, सुधारो प्रभुजी म्हारो काम॥6॥ शा ॥

जो नित प्रति प्रभुजी ने रटे, मोतिया काच बिन्द फूला कटे।
चेप लावण दोनो झड जाय, बिन ओषध कट जावे छाय॥7॥ शां. ॥

प्रभु नाम आंख निर्मल थाय, धुन्ध पटल जाला कट जाय।
कमलो पीलो झर झरे, शान्ति जिनेश्वर साता करे॥8॥ शां ॥

गरमी व्याधि मिटावे रोग, स्वजन मित्र नो मिले संजोग।
एहवा देव न दीखे और, नही चले दुश्मन को जोर॥9॥ शा ॥

लुटेरा सब जावे नास, दुर्जन फीका होवे दास।
शान्तिनाथ की कीर्ति घणी, कृपा करो हे त्रिभुवन ! धणी॥10॥ शां ॥

अरज करुं छू जोडी हाथ, आपसु नही कोई छानी बात।
देख रह्या छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारा पाप॥11॥ शां. ॥

मुझ मन चिंतित करिये काज, राखों प्रभुजी म्हारी लाज।
तुम सम जग माही नहीं कोय, तुम सुमर्या से साता होय॥12॥ शा.॥

तुम पास चले नहीं मिरगी रोग, ताव तेजरो नाखो तोड।
मरी मिटाई कीधी प्रभु सन्त, तुम गुण नो नही आवे अन्त॥13॥ शां.॥

तुमने सुमरे साधु सती, तुमने सुमरे जोगी जती।
काटो संकट राखो मान, अविचल पदनु आपो स्थान॥14॥ शां.॥

सम्वत् अठारे चौराणूं जाण, देश मालवो अधिक बखाण।
शहर जावरे चातुर्मास, हूँ प्रभु तुम चरणां रो दास॥15॥ शां.॥

'ऋषि रुघनाथ' कीधो छन्द, काटो प्रभुजी म्हारा फन्द।
मैं जोऊँ प्रभुजी की वाट, मुझ मन चिंता सगली काट॥16॥ शा॥



卐 संलेखना संथारा विधि 卐

देव दुर्लभ मानव भव को सफल एव भविष्य को समुज्जवल बनाने के लिए प्रभु महावीर ने फरमाया कि हे भव्यो ! आत्मार्थी साधको ! तुम अपने जीवन मे आसेवित दुष्कर्मो, सचित दुर्भावो, भव-वर्धक-कलुषित-कषायो, वैषयिक-तृष्णादि की सम्यक्तया आलोचना कर प्रायश्चित ले, स्वात्मा को निर्मल व विशुद्ध बना लो तथा शुद्ध धर्म के चिन्तन, श्रवण और आराधना मे लग जाओ। इससे तुम्हारा वर्तमान भव सुधरने के साथ-साथ भविष्य सुखद आनन्दित बन सकेगा।

इस जीवन पर मृत्यु का आक्रमण किसी भी समय हो सकता है। वह कभी भी किसी का इन्तजार नही करती। कई लोग रात्रि मे विश्राम हेतु आराम से सोते है। वे सोते के सोते रह जाते है। ऐसी परिस्थिति मे उनको सभालने एव जीवन को सुधारने का अवसर ही नही मिल पाता है। इस अवस्था से बचने के लिए भव्यात्माओ को सोने से पहले 'सागारी सथारा' करके सोना चाहिए। इस सावधानी से दु ख देने, उद्विग्न बनाने, सताप पहुचाने वाले अनावश्यक पाप कर्मो से अपना पिण्ड छुडाने वाले बन जायेगे। अत रात्रि मे सथारा लेकर ही सोना चाहिए।

卐 सागार संलेखना विधि 卐

सम्यक्त्व-धारण

अरिहन्तो मह देवो, जावज्जीवाए सुसाहणो गुरुणो।
जिण पण्णत्तं तत्त, इअ सम्मत्त मए गहिय ॥1॥

चार शरण स्वीकार

1 अरिहन्ते सरण पव्वज्जामि 2 सिद्धे सरण पव्वज्जामि 3 साहू सरण पव्वज्जामि 4 केवली पण्णत्त धम्म सरण पव्वज्जामि।

क्षमापना–पाठ

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ती मे सव्व भूएसु, वेर मज्झ ण केणई॥

आलोचना–पाठ

एव मए आलोइय, णिंदिय गरहिय दुगछिय।
सम्म तिविहेण पडिक्कतो, वदामि जिण चउवीस॥

इसके बाद पूर्व दिशा अथवा दिशा उत्तर की ओर मुख करके श्रीमन्धर स्वामी को और धर्मगुरु धर्माचार्य जी म को हाथ जोड वदन-नमस्कार कर यह पाठ बोल सथारा ग्रहण करे।

आहार शरीर, उपधि पच्चक्खूं पाप अट्ठार।
मरण होवे तो वोसिरे–3 जीऊं तो आगार॥
अथवा–भक्खंति उज्झंति मारंति वा, को वि उवस्सग्गेणं मम।
आउ अंतो भवेज्ज तहा सरीर संबंध, मोह ममत्तं।
अट्ठारस्स पाव–ट्ठाणाणि, चउव्विहं पि आहारं वोसिरामि।
सुख समाहिएणं णिद्दा वइक्कंता तओ पोरइस्सामि॥

इस प्रकार प्रत्याख्यान करके दो 'णमोत्थुण' देकर, नमस्कार मत्र का स्मरण करते हुए सोवे। जागने पर पहले पूर्वोक्त विधि से 'चार लोगस्स' का कायोत्सर्ग करे फिर 'नवकार मत्र', 'ध्यान विशुद्धि का पाठ', ध्यान मे आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया हो, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान न ध्याया हो, मन वचन काया के रोग चलित हुए हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड। फिर

निद्रा–दोष निवृत्ति

पडिक्कमामि पगाम सिज्जाए, णिगाम–सिज्जाए सथारा उवट्टणाए, परियट्टणाए आउट्टणाए पसारणाए छप्पइए सघट णाए कूइए कक्कराइए छीइए जभाइए आमोसे सस–रक्खा–मोसे आउल माउललाए सुवण्ण–वत्तियाए इत्थी विप्परिआ–सियाए दिट्ठीविप्परिआ–सियाए, मण–विप्परिया–सियाए, पाण–भोयण-

विप्परिआ-सियाए, जो मे राइसिओ, अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड।

अर्थ–प्रतिक्रमण करता हू। मर्यादा से अधिक लम्बे समय तक सोने से, बार-बार चिरकाल तक सोने से, शय्या पर बिना प्रमार्जन करवट बदलने से, बिना पूजे बार-बार करवट बदलने से, अयतना से हाथ पैरादि अगो को सकोचने से, फैलाने से, जू आदि क्षुद्र जन्तुओ को स्पर्श करने से, खासने या कुचेष्टा करने से, बडबडाने से, छींकने से, उबासी लेने से, शरीरादि का स्पर्श करने से, सचित्त रज से युक्त वस्तु को छूने से, आकुल-व्याकुलता से, स्वप्न के कारण से, स्त्री जन्य विपर्यास से, दृष्टि के विपर्यास से, मन के विपर्यास से, पानी-भोजन के विपर्यास से जो मैने रात्रि सबधी किसी अतिचार का सेवन किया हो तो वह पाप मेरा निष्फल हो।

प्रत्याख्यान पारने का पाठ

सागारिय अण सणस्स पच्चक्खाण सम्म काएणं, ण फासियं, ण पालिअ, ण सोहिय, ण तिरिय, ण किट्टियं, ण आराहिय आणाए अणुपालियं ण भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

यह विधि सागारी सथारे को धारने व पारने की है।

जल अग्नि शस्त्र सर्पादि का अथवा देव सबधी उपसर्ग आ जाए या हार्ट अटैक जैसी व्याधि का सहसा आक्रमण हो, जीवित रहने बचने की आशा न दिखे तो वैसे समय मे चारो प्रकार के आहार, शरीर, कुटुम्ब वैभव की मोह ममता को वोसिराता हू। अठारह ही पाप स्थानो का त्याग करता हूँ। इससे यदि मुक्त हो जाऊ तो पूर्व ग्रहण किए व्रत नियम त्याग-प्रत्याख्यान के अतिरिक्त मेरे सब आगार है।

सथारा धारण करने वाले को बडी साधु वन्दना, तीन मनोरथ और चार शरणादि सुनाते रहना, बारह भावना, मेरी भावना, आत्मशुद्धि आलोचना तथा ससार की असारता जताने एव प्रभु भक्ति मे स्थिरता बढाने वाले स्तवनादि सुनाना चाहिए।

सार दसण णाण, सार तव णियम सजम सील।
सार जिणवर धम्म, सार सलेहणा पण्डिय मरण॥

अणगार–सलेखना

देव, मनुष्य या तिर्यच सबधी प्राणान्तकारी उपसर्ग आने, दुर्भिक्ष पड़ने, शुद्ध खाद्यान्न आदि के न मिलने से, असाध्य रोग का सहसा आक्रमण होने या निमित्त ज्ञान से अल्पायु जानकर धर्म रक्षा हेतु अपने शरीर का परित्याग करने, वासना-कामना, तृष्णा और कषाय की ज्वाला को शान्त करने/बुझाने का प्रयास करना सलेखना है।

सलेखना लेने वाले आत्मार्थी भव्य साधको को जीवन मे ग्रहण किए गये सम्यक्त्व, त्याग-प्रत्याख्यान व्रत-नियम आदि है। उनमे अस्थिरता, प्रमाद, विवशता और बौद्धिक विभ्रमता से जो कोई दोष सेवन किए/हुए हो, उन दोषो को सूक्ष्मतापूर्वक देखने एव याद करने का प्रयास निकालने हेतु करना चाहिए। क्योकि दोष रूप शल्य भव-भवान्तर मे तो दु खदायी बनते ही है। वर्तमान जीवन को भी सुधारने मे बाधक होते है। अत समाधि भाव की कामना रखने वाले भव्यो को सर्वप्रथम उन दोष रूप शल्य को निकाल अपने अन्त करण को पवित्र बनाना चाहिए।

भव भवान्तर को सुधारने हेतु दोषो की विशुद्धि चाहने वाला भव्य साधक यह जाने एव देखे कि कौन सा दोष स्वार्थ-मोह-ममता माया के कारण अपने लिए लगा और कौन सा दोष दूसरो के कारण जीवन मे लगा। फिर उन दोषो की आलोचना सघनायक, शासनपति, धीर गभीर आचार्य भगवन् के पास करे। उनका सयोग न हो तो धीर गभीर उपाध्याय या साधु अथवा साध्वी जी के पास आलोयना करे। इनका भी अवसर न हो तो गुणधारी धीर गभीर योग्य श्रावक-श्राविका के पास करे। इतना साहस आलोचना का न बने तो शान्त एकान्त स्थान मे जाकर पूर्व या उत्तर दिशा सम्मुख खडा हो तो अपने धर्मगुरु धर्माचार्य श्री जी को वन्दन नमस्कार एव सीमधर स्वामी जी को वन्दन

नमस्कार कर, हाथ जोड अपने दोषो को प्रकट करे और उनकी साक्षी से पश्चाताप पूर्वक यथायोग्य प्रायश्चित ले स्वात्मा की शुद्धि करे। यदि प्रायश्चित न्यून हो तो मिच्छामि दुक्कड और अधिक हो तो निर्जरा हेतु समझे।

संलेखना-विधि

पाप दोषो की आलोचना कर, प्रायश्चित ले, शुद्ध अन्त करण बना, निशल्य होकर 'अह भते अपच्छिम मारणान्तिय' पौषधशालादि सथारा लेने योग्य स्थान पर आवे, चित्त समाधि योग्य स्थान पर परठे, फिर लघुनीत आदि परठने योग्य जन्तुओ से रहित निरवेद्य स्थान को देखे, देखकर अपने स्थान पर आवे और पूजने-देखने हेतु आने जाने मे जो दोष लगा है उसका प्रतिक्रमण करे, तिक्खुत्तो से गुरु वदन कर 'णमोकार मत्र', 'इच्छाकारेण', 'तस्स उत्तरी' को बोल, कायोत्सर्ग 'इच्छाकारेण' का करे। फिर 'णमो अरिहताण' बोलकर कायोत्सर्ग पूर्ण होने पर पारे, फिर 'कायोत्सर्ग विशुद्धि' का पाठ बोलकर 'लोगस्स' बोले। फिर इस प्रकार कहे कि पृथ्वी कायादि किसी भी काया की विराधना रूप दोष लगा हो तो 'मिच्छामि दुक्कड'।

फिर धान्य कणो से रहित पराल-घास कतरन या शिला पट्टादि पर साढे तीन हाथ प्रमाण लम्बा और सवा हाथ चौडा आसन बिछा, उसे सफेद वस्त्र से ढक दे। पूर्व या उत्तर दिशा मे मुख रखते हुए पर्यकादि आसन से उस पर बैठे, शक्ति न हो तो सोये सोये ही दोनो हाथ जोडकर जोडे हुए हाथो को दाहिनी और से बायी ओर उतारता हुआ तीन बार घुमावे। फिर उन जुडे हुवे हाथो को मस्तक पर स्थापित कर 'णमोत्थुण अरिहताण' 'जाव सपत्ताण' कह कर सिद्ध भगवान को, दूसरा 'णमोत्थुण अरिहताण' जाव सपाविउ कामाण' बोल अरिहत भगवन्तो को और तीसरे मे 'णमोत्थुण मम धम्मगुरु धम्मारिय धम्मोव देसगस्स भगवन्ताण जाव सपाविउ कामाण' बोले।

इस प्रकार वन्दन नमस्कार कर पूर्व मे धारण किये हुए सम्यक्त्व और व्रतो मे आज इस समय तक जानते, अजानते, विवशता से स्ववश-परवश जो कोई दोष लगा हो पुन उनकी विचारणा करके उनसे निवृत्त होवे। उनकी आत्म साक्षी से निदा और गुरु साक्षी से गर्हा करे।

इस प्रकार शल्यो को सर्वथा त्यागकर-भविष्य के लिये प्रत्याख्यान करे कि 'सव्व पाणाइ वाय जाव मिच्छा दसण सल्ल ' मै सर्वथा प्रकार से प्राणातिपात-मृषावाद आदि अठारह ही पाप स्थानो का तीन करण और तीन योग से त्याग करता हूँ। उसके बाद अनुकूलतानुसार पहले तीन प्रकार के आहार का त्याग करे। पाण को छोडे और या चारो ही प्रकार के आहार का त्याग करे तो तिविह्पि चउविहपि आहार पच्चक्खामि फिर 'ज पिय इम शरीर इट्ठ ' अणवकख माणे विहरामि इत्यादि पाठ बोलते हुए अपने शारीरिक ममत्व का भी सर्वथा त्याग कर अपने आत्मिक स्वरूप एव गुणो मे स्थित बने।

बडी सलेखना-पाठ

अह भते ! अपच्छिम मारणान्तिय सलेहणा झूसणा आराहणा पोसह साल पमज्जे, पमज्जिय, उच्चार पासवण भूमि पडिलेहे, पडिलेहिय, गमणा-गमणे पडिक्कमे, पडिक्कम, दब्भाइय सथार सथरे, सथारिय, दब्भाइय सथार, दुरूहे, दुरूहिय, पुरत्थिए उत्तरे वा दिसी भाए पलियके आसणे अच्छेज्ज, अच्छेज्जिय करयल सपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु 'णमोत्थुण अरिहताण भगवताण जाव सपत्ताण' ऐसे अनन्त सिद्ध भगवान को नमस्कार करके 'णमोत्थुण अरिहताण भगवताण जाव सपाविउ कामाण' जयवते वर्तमान काले महाविदेह क्षेत्र मे विचरते हुए तीर्थकर भगवान को नमस्कार करके, अपने धर्मगुरु धर्माचार्य जी महाराज को नमस्कार करता हूँ। साधु प्रमुख चारो तीर्थ को खमाकर, सर्व जीव राशि को खमाकर, पहले जो व्रत आदरे है। उनमे जो अतिचार-दोष लगे हो, वे सर्व आलोच के,

पडिक्कम के, निन्द के, निशल्य होकर के, 'सव्व पाणाइ वाय पच्चक्खामि, सव्व मुसावाय, पच्चक्खामि, सव्व अदिण्णा दाण पच्चक्खामि, सव्व मेहुण पच्चक्खामि, सव्व परिग्गह पच्चक्खामि, सव्व कोह, माण, माय लोह, राग द्वोस, कलह, अब्भखाण पेसुण्ण, पर परिवाय, रइमरइ, माया मोस, मिच्छादसण सल्ल, सव्व अकरणिज्ज जोग पच्चक्खामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेण ण करेमि, ण कारवेमि, करतपि अण्ण ण समणुजाणामि मणसा वयसा कायसा।'

ऐसे अठारह पाप स्थान पच्चक्ख कर 'सव्व असण पाण खाइम साइम चउव्विहपि आहार पच्चक्खामि जावज्जीवाए' ऐसे चारो आहार पच्चक्ख कर 'ज पि य इम शरीर इट्ठ, कत, पिय, मणुण्ण, मणाम, धिज्ज, विसासिय, समय, अणुमय, बहुमय भण्ड करण्डग समाण, रयण-करण्डग-भूय मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा ण खुहा, मा ण पिवासा, मा ण वाला, मा ण चोरा, मा ण दसमसगा, मा ण वाइय, पित्तिय, कप्फिय, सभीम, सण्णिवाइय, विविहा, रोगायका, परिसहा, उवसग्गा, फासा फुसन्तु, एवपि य ण, चरमेहि उस्सास-णिस्सासेहि वोसिरामि त्ति कट्टु' ऐसे शरीर को वोसिरा कर 'काल अणव कखमाणे विहरामि' ऐसी मेरी श्रद्धा प्ररूपणा तो है फरसना करू तब शुद्ध होऊ। ऐसे 'अपच्छिम मारणतिय सलेहणा झूसणा आराहणाए पच अइयारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा तजहा ते आलोउ इहलोगा ससप्पओगे, परलोगाससप्पओगे, जीविया ससप्पओगे, मरणा ससप्पओगे, कामभोगा ससप्पओगे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड।

सथारे का विधि पाठ

सर्वप्रथम बन सके तो तीन बार वदना करे। तदनन्तर नवकार का पाठ पढे। फिर इच्छाकारेण, तस्स उत्तरीकरणेण बोले। उसके बाद दो लोगस्स का ध्यान करे। फिर ध्यान पारने का पाठ पढे। तदनन्तर लोगस्स बोले, उसके बाद दो णमोत्थुण बोलकर बडी सलेखना का पाठ

पढे। इस प्रकार सथारे की सक्षिप्त विधि होती है। तदनन्तर बन सके तो दशवैकालिक के चार अध्ययन सुनावे। इसके बाद वृहदालोयणा, धार्मिक स्वाध्याय गीत सुनावे। जिसके सथारा हो उसके मुख वस्त्रिका बधी हो। पखा, कूलर का उपयोग न हो। साधु की तरह क्रियाए करवाई जाए।

***

श्री सामायिक सूत्र

1. नमस्कार मंत्र

णमो अरिहंताणं।

णमो सिद्धाणं।

णमो आयरियाणं।

णमो उवज्झायाणं।

णमो लोए सव्वसाहूणं।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो।

मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं ॥1॥

(भगवती सूत्र मंगलाचरण) (कल्पसूत्र मंगलाचरण)

2. गुरु वन्दना तिक्खुत्तो का पाठ

तिक्खुत्तो आयाहिणं, पयाहिणं, करेमि वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥ (रायप्पेसणी सूत्र-8)

3. इरियावहियं (इच्छाकारेणं) का पाठ

इच्छाकारेणं, संदिसह, भगवं इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरिया-वहियाए, विराहणाए, गमणा गमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग पणगदग, मट्टी-मक्कडा, संताणा, संकमणे, जे मे जीवा, विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचेंदिया, अभिहया,

वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया परिया-विया, किला-मि उद्द-विया, ठाणाओ, ठाण संकामिया, जीविया-ओ, ववरो-विया तस्स, मिच्छामि दुक्कडं।

(हरिभद्रीय आवश्यक पृ. ...)

4. तस्स उत्तरी का पाठ

तस्स-उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेग, पावाणं, कम्माणं, निग्घायण-ट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं। अणत्थ, उस्ससिएण, नीससिएणं खा-सिएणं, छी-एणं, जंभाई-एणं उड्डु-एग वाय-निसग्गेणं भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहि, अग-संचालेहिं, सुहु-मेहिं, खेल-संचालेहिं, सुहु-मेहिं दिट्ठि- संचालेहि,एव-माइ-एहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहन्ताण, भगवं-ताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, ताव-काय ठाणेण मोणेण झाणेण, अप्पाणं वोसिरामि।

(हरिभद्रीय आवश्यक पृ. 778)

5. लोगस्स का पाठ

लोगस्स उज्जोय-गरे, धम्म-तित्थ-यरे जिणे

अरि-हन्ते कित्त-इस्सं, चउवी-संपि केवली ॥1॥

उसभ-मजियं, च वन्दे, संभव-मभि-णंदणं च सुमइं च

पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वन्दे ॥2॥

सुविहिं च पुप्फ-दंतं, सीयल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च

विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥3॥

कुंथु अरं च मल्लिं वन्दे, मुणि-सुव्वयं नमिजिणं च

वंदामि रिट्ठ-नेमिं पासं तह वद्ध-माणं च ॥4॥

एव मए-अभिथुआ, विहूय-रय-मला पहीणजर-मरणा।
चउवी-सपि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु ॥5॥
कित्तियं-वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग-बोहि-लाभं, समाहि-वर-मुत्तम-दितु ॥6॥
चन्देसु निम्मल-यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागर-वर-गम्भीरा, सिद्धा-सिद्धि मम दिसन्तु ॥7॥

(हरिभद्रीयावश्यक पृ 493-509)

6. करेमि भन्ते का पाठ

करेमि भते ! सामाइय, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव-नियमं पज्जुवासामि-दुविहि तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भंते ! पडिक्कामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। (हरिभद्रीयावश्यक पृ 454)

7. णमोत्थुणं का पाठ

णमोत्थुणं, अरिहताणं, भगवं-ताणं आइगराणं, तित्थ-यराण, संय स-बुद्धाणं, पुरि-सुत्तमाण, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरियाण, पुरिस-वर-गध हत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोह-नाहाण, लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोय-गराणं, अभय-दयाण, चक्खु-दयाण, मग्ग-दयाण, सरण-दयाणं, जीव-दयाणं, बोहि-दयाण, धम्म-दयाण, धम्म-देसयाणं, धम्म-नाय-गाणं, धम्म-सार-हीणं, धमवर-चाउ-रत, चक्क-वट्टीणं, दीवो-ताणं सरण-गई, पइट्ठाण, अप्पडि-हय-वर-नाण-दंसण, धराणं विअट्ट छउ-माणं जिणाणं, जाव-याणं, तिण्णाणं, तारयाणं बुद्धाणं, बोह-याण, मुत्ताणं, मोअ-गाणं, सव्वणूणं सव्व-दरि-सीणं सिव-मयल, मरुअ मणन्त,

मक्खय, मव्वाबाह, मपुणरावित्ति, सिद्ध-गइ-नाम-धेयं-ठाणं, संपत्ताणं नमो जिणाणजिअभयाणं।

(औपपातिक सूत्र 12) (कल्पसूत्र शक्रस्तव)

ठाणं सम्पत्ताणं की जगह द्वितीय णमोत्थुणं में ठाणं संपाविउकामाणं बोलें।

8. सामायिक पारने का पाठ

एयस्स, नव-मस्स, सामाइय-वयस्स, पच, अइ-आरा, जाणि-यव्वा, न समा-यरि-जव्वा, तजहा ले आलोउ-मण-दुप्पणि हाणे, वय दुप्पणि-हाणे, काय-दुप्पणिहाणे सामाइयस्स, सइ अकरणया सामाइयस्स अण-वट्टि-यस्स, करणया तस्स मिच्छामि दुक्कड।

सामाइय सम्म काएण न फासिय न पालिय न तीरिय, न किट्टिय न सोहिय न आराहिय, आणाए अणुपालिय, न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कड।

सामायिक मे दस मन के, दस वचन के, बारह काया के इन कुल बत्तीस दोषो मे से कोई दोष लगा हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड।

सामायिक मे स्त्री-कथा, भत्त-कथा (भोजन-कथा), देश-कथा, राज-कथा, इन चार विकथाओ मे से कोई कथा की हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड।

सामायिक मे आहार-सज्ञा, भय-सज्ञा, मैथुन-सज्ञा, परिग्रह-सज्ञा इन चार सज्ञाओ मे से किसी सज्ञा का सेवन किया हो, सामायिक मे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जानते-अजानते, मन-वचन-काया से कोई दोप लगा हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड।

सामायिक व्रत विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि मे

कोई अवधि हुई हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड।

सामायिक का पाठ बोलने मे काना, मात्रा, अनुस्वार, पद, अक्षर, ह्रस्व, दीर्घ न्यूनाधिक, विपरीत पढने मे आया हो तो अनन्त सिद्ध केवली भगवान की साक्षी से तस्स मिच्छामि दुक्कड।

सामायिक लेने की विधि

सर्वप्रथम स्थान, आसन, पूजणी, मुखवस्त्रिका आदि की पडिलेहणा करना। फिर यतनापूर्वक पूज कर आसन बिछाना। बाद में आसन छोड कर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुह कर के दोनो हाथ जोडकर पचाग नमा कर 'तिक्खुत्तो' के पाठ से तीन बार विधिपूर्वक वदना करना और श्रीसीमधर स्वामी या अपने धर्माचार्य जी (गुरुदेव) की आज्ञा लेकर 'नमस्कार मत्र', 'इच्छाकारेण' और 'तस्स उत्तरी' का पाठ बोलकर काउस्सग्ग करना। काउस्सग्ग मे दो लोगस्स का पाठ मन मे कहना। और 'णमो अरिहताण' कहकर काउस्सग्ग पारना। बाद मे 'नमस्कार मत्र', 'ध्यान का पाठ' (काउस्सग्ग मे आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया हो, धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्याया हो, काउस्सग्ग मे मन वचन काया चलित हुए हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड) और 'लोगस्स' का पाठ कहना। फिर 'करेमि भते' के पाठ से सामायिक लेना। 'करेमि भते' के पाठ मे जहा 'जाव नियम' शब्द आता है वहा जितनी सामायिक लेनी हो उतनी सामायिक लेकर आगे का पाठ समाप्त करना। बाद मे नीचे बैठकर बाया घुटना खडा रख कर दो 'णमोत्थुण' का पाठ बोलने के समय दूसरी बार णमोत्थुण का पाठ बोलने के समय 'ठाण सपत्ताण' के बदले 'ठाण सपाउविउकम्माण' बोलना।

सामायिक मे नया ज्ञान सीखना, सीखे हुए ज्ञान, थोकडा बोल आदि चितारना, स्वाध्याय करना, परमात्मा के स्तवन, प्रार्थना, स्तोत्र, स्तुति आदि बोलना, माला फेरना आदि ज्ञान-ध्यान करना। आशय यह है कि सामायिक का काल प्रमाद-रहित होकर ज्ञान, ध्यान, चिन्तन-मनन मे बिताना चाहिए। सन्त मुनिराज विराजते हो तो उनकी

ओर पीठ करके नही बैठना चाहिए। स्वाध्याय, व्याख्यान या उपदेश दे रहे हो तो उसमे उपयोग रखना चाहिए। सामायिक मे विकार-जनक उपकरण नही रखना चाहिए। सामायिके के 32 दोषो का सेवन नहीं करना चाहिए।

सामायिक पारने की विधि

सामायिक पारने के समय 'नमस्कार मत्र', 'इच्छा-कारेण' और 'तस्स उत्तरी' का पाठ बोलकर काउस्सग्ग करना। काउस्सग्ग मे दो बार 'लोगस्स' का पाठ मन मे कहना और 'णमो अरिहताण' कह कर, काउस्सग्ग पारना। फिर 'नमस्कार मत्र', 'ध्यान का पाठ' और 'लोगस्स' का पाठ प्रगट कहना। बाद में बाया घुटना खडा रख कर ऊपर लिखे अनुसार दो बार 'णमोत्थुण' का पाठ बोलना। फिर 'एयस्स नवमस्स' सामायिक पारने का पूरा पाठ बोल कर अन्त मे तीन बार 'नमस्कार मत्र' गिन कर सामायिक पारना।

॥ इति सामायिक सूत्र समाप्त ॥



सामायिक के बत्तीस (32) दोष

दस मन के दोष–

1 अविवेक 2 यशकामना 3 लाभकामना 4 गर्व (मान), 5 भय, 6 निदान, 7 सशय, 8 रोष (क्रोध), 9 अविनय, 10 बहुमान।

दस वचन के दोष–

1 कुवचन, 2 सहसाकार, 3 स्वच्छन्द, 4 सक्षेप, 5 कलह, 6 विकथा, 7 हास्य, 8 अशुद्ध, 9 निरपेक्ष, 10 मुम्मुण।

बारह काया के दोष–

1 कुआसन, 2 चलआसन, 3 चलदृष्टि, 4 सावद्य क्रिया, 5 आलम्बन, 6 आकुचन-पसारण, 7 आलस्य, 8 मोटन, 9 मल, 10 विमासन, 11 निद्रा, 12 वैयावृत्य।

***

चौबीस तीर्थंकरों के नाम

1 श्री ऋषभदेव जी
2 श्री अजिनाथ जी
3 श्री सभवनाथ जी
4 श्री अभिनदन जी
5 श्री सुमतिनाथ जी
6 श्री पद्मप्रभु जी
7 श्री सुपार्श्वनाथ जी
8 श्री चद्रप्रभ जी
9 श्री सुविधिनाथ जी
10 श्री शीतलनाथ जी
11 श्री श्रेयासनाथ जी
12 श्री वासुपूज्य जी
13 श्री विमलनाथ जी
14 श्री अनन्तनाथ जी
15 श्री धर्मनाथ जी
16 श्री शातिनाथ जी
17 श्री कुथुनाथ जी
18 श्री अरनाथ जी
19 श्री मल्लिनाथ जी
20 श्री मुनिसुव्रत जी
21 श्री नमिनाथ जी
22 श्री अरिष्ठनेमि जी
23 श्री पार्श्वनाथ जी
24 श्री महावीर स्वामजी

बीस विहरनाम तीर्थंकरों के नाम

1 श्री सीमधर स्वामी
2 श्री युगमदिर स्वामी
3 श्री बाहु स्वामी
4 श्री सुबाहु स्वामी
5 श्री सुजात स्वामी
6 श्री स्वयप्रभ स्वामी
7 श्री ऋषभानन स्वामी
8 श्री अनतवीर्य स्वामी
9 श्री सूरप्रभ स्वामी
10 श्री विशाल स्वामी
11 श्री वज्रधर स्वामी
12 श्री चद्रानन स्वामी
13 श्री चद्रबाहु स्वामी
14 श्री भुजग स्वामी
15 श्री ईश्वर स्वामी
16 श्री नेमीश्वर स्वामी
17 श्री वीरसेन स्वामी
18 श्री महाभद्र स्वामी
19 श्री देवयश स्वामी
20 श्री अजितवीर्य स्वामी

63 श्लाघ्य पुरुषों के नाम

चौबीस तीर्थंकर (पेज 87 पर) एव

निम्नानुसार 12+9+9+9 = 63 श्लाघ्य पुरुष

12 चक्रवर्ती	9 वासुदेव	9 प्रति वासुदेव	9 वलदेव
1 भरत	1 त्रिपृष्ठ	1 अश्वग्रीव	1 अचल
2 सगर	2 द्विपृष्ठ	2 तारक	2 विजय
3 मघवा	3 स्वयभू	3 मेरक	3 भद्र
4 सनत् कुमार	4 पुरुषोत्तम	4 कैटभ	4 सुप्रभ
5 शान्तिनाथ	5 पुरुषसिह	5 निशुभ	5 सुदर्शन
6 कुथुनाथ	6 पुडरिक	6 बलि	6 आनन्द
7 अरनाथ	7 श्रीदत्त	7 प्रह्लाद	7 नन्दन
8 सुभूम	8 नारायण (लक्ष्मण)	8 रावण	8 पद्मराम (रा
9 महापद्म	9 श्रीकृष्ण	9 जरासघ	9 वलभद्र
10 हरिषेण			
11 जयसेन			
12 ब्रह्मदत्त			

11 गणधर	16 सतियां	10 श्रावक
1 श्री इन्द्रभूति जी	1 श्री ब्राह्मी जी	1 आनन्द
2 श्री अग्निभूति जी	2 श्री सुदरी जी	2 कामदेव
3 श्री वायुभूति जी	3 श्री कोशल्या जी	3 चूलणी पिता
4 श्री व्यक्तस्वामी जी	4 श्री सीता जी	4 सुरा देव
5 श्री सुधर्मास्वामी जी	5 श्री राजीमती जी	5 चुल्ल शतक
6 श्री मण्डितपुत्र जी	6 श्री कुती जी	6 कुडकोलिक
7 श्री मोर्यपुत्र जी	7 श्री द्रोपदी जी	7 सकडाल पुत्र
8 श्री अकपित जी	8 श्री चदनबाला जी	8 महाशतक
9 श्री अचलभ्राता जी	9 श्री मृगावती जी	9 नदिनी पिता
10 श्री मेतार्यस्वामी जी	10 श्री पुष्पचूला जी	10 शालिही पिता
11 श्री प्रभासस्वामी जी	11 श्री प्रभावती जी	
	12 श्री सुभद्रा जी	
	13 श्री दमयती जी	
	14 श्री सुलसा जी	
	15 श्री शिवादेवी जी	
	16 श्री पद्मावती जी	

संतिनाह-सम्मद्दिट्ठिय-रक्खा

(सतिकर-स्तवन)

सतिकर सतिजिण, जग-सरण जय-सिरीइ दायार।
समरामि भत्त-पालग-निव्वाणी-गरुड-कय-सेव ॥1॥

ॐ स नमो विप्पोसहि-पत्ताण, सति सामि-पायाण।
झ्रौं स्वाहा मतेण, सव्वासिव-दुरिय-हरणाण ॥2॥

ॐ सति-नमुक्कारो, खेलोसहि माइ-लद्धि-पत्ताण।
स्रौ ˘ ह्रीं ˘ नमो सव्वोसहि-पत्ताण च देइ सिरि ॥3॥

वाणी-तिहुअण-सामिणी, सिरिदेवी-जक्खराय-गणिपिडगा।
गह-दिसिपाल-सुरिंदा, सया वि रक्खतु जिणभत्ते ॥4॥

रक्खतु मम रोहिणि, पन्नत्ती वज्जसिखला य सया।
वज्जकुसि-चक्केसरि, नरदत्ता-कालि-महाकाली ॥5॥

गोरी तह गधारी, महजाला माणवी य वइरुट्टा।
अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसिया उ देवीओ ॥6॥

जक्खा गोमुह-महजक्ख, तिमुह-जक्खेस-तुबरु कुसुमो।
मायगो विजया, अजिअ बभो मणुओ सुर कुमारो ॥7॥

छम्मुह पयाल किन्नर, गरुडो गधव्व तह य जक्खिदो।
कूबेर-वरुणो भिउडी, गोमेहो पास-मायगो ॥8॥

देवीओ चक्केसरि-अजिआ, दूरिआरि-कालि-महाकाली।
अच्चुअ-संता-जाला, सुतारयाऽसोअ-सिरिवच्छा ॥9॥

चडा विजयकुसि पन्नइत्ति, निव्वाणि-अच्चुआ धरणी।
वइरुट्ट-दत्त गधारि, अब पउमावई-सिद्धा ॥10॥

इय तित्थ रक्खण-रया, अन्ने वि सुरासुरी उ चउहा वि।
वतर-जोइणि पमुहा, कुणतु रक्ख सया अम्ह॥11॥
एव सुदिट्ठि-सुरगण-सहिओ, सघस्स सति-जिणचन्दो।
मज्झ वि करेउ रक्ख, मुणि सुदरसूरि-थुअ-महिमा॥12॥
इअ 'सतिनाह सम्म द्दिट्ठिय-रक्ख' सरेइ तिकाल जो।
सव्वोवद्दव-रहिओ, स लहइ सुह-सपय परम॥13॥



उपसर्ग हर स्तोत्र

महत्व– यह महान् चमत्कारिक स्तोत्र हर प्रकार के दु ख, दारिद्र-उपद्रव को दूर करने वाला है।

विधि–सात बार मन की इच्छा बोल कर फिर ''श्री भद्रबाहु स्वामी प्रसादात् एष योग फलतु'' ऐसा कहे। उसके बाद ॐ ही श्री अर्ह नमिऊण पास विसहर वसह जिण फुलिग ही श्री नम । इस मन्त्र को एक माला फेरकर फिर 27 बार उवसग्गहर स्तोत्र पढने से मनोवाछित फल की प्राप्ति होती है।

उवसग्गहर पास, पास वदामि कम्म-घण-मुक्क।
विसहर-विस-निन्नास, मगल-कल्लाण-आवास॥1॥

विसहर-फुलिग-मत, कठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी-दुट्ठजरा जंति उवसाम॥2॥

चिट्ठउ दूरे मतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होई।
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावति न दुक्ख-दोहग्ग॥3॥

तुह सम्मत्ते लद्धे, चितामणि-कप्पपायवब्भहिए।
पावति अविग्घेणं, जीवा अयरामर ठाण॥4॥

इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव ! दिज्ज बोहि, भवे-भवे पास-जिणचन्द॥5॥



卐श्री सुखविपाक सूत्र 卐

तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे णाम णयरे होत्था रिद्धित्थिमिय समिद्धे गुणसिलए चेइए, सुहम्मे अणगारे समोसढे, जवू जाव पज्जुवासइ एव वयासी–जइ णं भते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण दुहविवागाण अयमट्ठे पण्णत्ते, सुहविवागाण भते ! समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? तएण से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगार एव वयासी–एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण सुहविवागाण दस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा–

1 सुबाहु, 2. भद्दणदी य, 3 सुजाए, 4 सुवासवे। 5. तहेव जिणदासे य, 6 धणवई य, 7 महब्बले, 8 भद्दणदी, 9 महचदे, 10. वरदत्ते, तहेव य।

जइ णं भते ! समणे ण जाव सपत्तेण सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स सुहविवागाण समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? तए ण से सुहम्मे अणगारे जंवू अणगार एव वयासी ॥1॥

एव खलु जबू ! तेणं कालेणं तेण समएण हत्थिसीसे णाम णयरे होत्था, रिद्धित्थिमिय समिद्धे। तत्थ णं हत्थिसीसस्स णयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ ण पुप्फकरडए णाम उज्जाणे होत्था। सव्वोउय–पुप्फ–फल–समिद्धे, रम्मे, णदण–वण–प्पगासे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। तत्थ ण कयवण–माल–पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था दिव्वे.।

तत्थ ण हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तु णाम राया होत्था महया हिमवते, रायवण्णओ। तस्स ण अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणी पामोक्खं देवीसहस्स ओरोहे यावि होत्था। तएण सा धारिणी देवी अण्णया कयाइं तसि तारिसगसि वासभवणंसि सीह

सुमिणे पासइ, जहा मेहस्स जम्मणं तहा भाणियव्वं। णवर सुबाहुकुमारे, जाव अलं भोगसमत्थे यावि जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं, करेंति अब्भुग्गयमूसियपहसिय विव भवणं। एवं जहा महब्बलस्स रण्णो। णवरं पुप्फचूला पामोक्खाणं पचण्हं रायवर-कण्णग-सयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेइ तहेव पंचसयाइं दाओ जाव उप्पिं पासावयवरगए फुट्टमाण मत्थेहिं जाव विहरइ ॥2॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा णिग्गया। अदीणसत्तु जहा कूणिए णिग्गए। सुबाहु वि जहा जमाली तहा रहेणं णिग्गए, जाव धम्मो कहिओ। राया परिसाय पडिगया। तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, जाव एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते ! णिग्गथं पावयणं, (जाव) जहा णं देवाणुपिप्याणं अंतिए बहवे राईसर सत्थवाहपभइओ मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइया णो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता। अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाण अंतिए पंचाणु-व्वयाइं सत्त-सिक्खा-वयाइं दुवालस-विह गिहि धम्मं पडिवज्जिजस्सामि। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेह ।

तएणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्त सिक्खा वइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता तमेव रहं दुरूहइ, दुरूहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेवदिसं पडिगए ॥3॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयम गोत्तेणं जाव एवं वयासी-'अहो णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोम्मे सुभगे

पियदसणे सुरूवे वहुजणस्स वि य ण भते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे सोमे जाव सुरूवे साहु जणस्स वि य ण भते ! सुवाहुकुमारे जाव सुरूवे। सुबाहुकुमारेण भते ! इमे एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धि किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमण्णागया ? को वा एस आसी जाव कि णामए वा कि गोत्तए वा कि वा दच्चा, कि वा भोच्चा कि वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आयरिय धम्मिय सुवयणं सोच्चा जेण इमेयारूवा माणुस्सरिद्धि लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥4॥

एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जवूद्दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे णाम णयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ। तत्थ णं हत्थिणाउरे णयरे सुमुहे णाम गाहावई परिवसइ अड्ढे। दित्ते जाव अपरिभूए तेणं कालेण तेण समएण धम्मघोसे णामं थेरे, जाइसंपण्णे जाव पचहि समणसएहि सद्धि संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहस्सबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता अहापडिरूव उग्गह उग्गिएहइ उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति। तेण कालेणं तेण समएण धम्मघोसाणं थेराणं अतेवासी सुदत्ते णाम अणगारे उराले जाव तेउलेस्से मास मासेण खममाणे विहरइ ॥5॥

तएण से सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे थेर आपुच्छइ जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिह अणुपविट्ठे। तएण से सुमुहे गाहावई सुदत्त अणगारं एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे, आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडिय उत्तरासगं करेइ, करित्ता सुदत्त अणगार सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिण करेइ, करित्ता वंदइ णमसइ, वदित्ता

णमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सयहत्थेण विउलं असण पाण खाइमं साइमं पडिलाभेस्सामि त्ति कट्टु तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिए वि तुट्ठे ॥6॥

तए णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेणं, दायगसुद्धेणं, पडिग्गाहगसुद्धेणं, तिविहेण तिकरणसुद्धेणं, सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए मणुस्साउए णिवद्धे, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइ तंजहा- 1 वसुहारा वुट्ठा, 2. दसद्धवण्णे कुसुमे णिवाइए, 3 चेलुक्खेवेकए, 4. आहयाओ देवदुदुहीओ, 5. अंतरा वि य णं आगासंसि अहोदाणं अहोदाणं घुट्ठे य। हत्थिणाउरे सिंघाडग जाव पहेसु वहुजणो अण्णमण्णस्स एव आइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ, धण्णे ण देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई जाव त धण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई ॥7॥

तएणं से सुमुहे गाहावई बहूइं वासाइं आउयं पालेइ, पालित्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थीसीसे णयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तताए उववण्णे। तएणं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी तहेव सीह पासइ, सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासाए विहरइ, तं एवं खलु गोयमा ! सुवाहुणा इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया। पभू णं भंते ! सुवाहु कुमारे देवाणुप्पियाणं अतिए मुडे भविता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता पभू ॥8॥

तए ण से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीर वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता, णमंसित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइं हत्थिसीसाओ णयराओ पुप्फकरंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ।

तएण से सुवाहुकुमारे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ॥9॥

तएण से सुवाहुकुमारे अण्णया कयाइ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ पुण्ण मासिणी सु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पमज्जिता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसथारग संथरेइ, सथरित्ता, दब्भसंथारग दुरूहइ, दुरूहित्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइपगिण्हित्ता, पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसह पडिजागरमाणे विहरइ।

तएण तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्त-काल समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए कप्पिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था-धण्णा ण ते गामागरणगर जाव सण्णिवेसा, जत्थ ण समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ। धण्णा णं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभईओ ते ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुंडा जाव पव्वयति, धण्णा णं ते राईसर जे ण ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पंचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पडिवज्जति। धण्णा णं ते राईसर तलवर माडविय कोडुबिय इब्भसेट्ठि सेणावइ-सत्थवाहप्पभईओ जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सुणेति। तं जइ ण समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा जाव विहरेज्जा, तए णं अह समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा।।11॥

तएणं समणे भगव महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं जाव दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव पुप्फकरंडए उज्जाणे जेणेव कयवणमालप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव उग्गहं उग्गिण्हित्ता सजमेणं तवसा जाव विहरइ। परिसा राया णिग्गया। तए ण तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स तं

महया. जहा पढमं तहा णिग्गओ, धम्मो कहिओ, परिसा राया पडिगया। तएणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे जहा मेहो तहा अम्मापियरो आपुच्छइ। णिक्खमणाभिसेओ, तहेव जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी। तएणं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम. तवोविहाणेहिं अप्पाण भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अप्पाण झूसित्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाइं छेइत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे ॥12॥

से ण सुबाहुदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएण ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ, लभिहित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, बुज्झिहित्ता, तहारूवाणं थेराणं अतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सइ। से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्ण परियागं पाउणिहिइ, पाउणिहित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववण्णे। से णं तओ देवलोगा ओ माणुस्सं, जाव पव्वज्जा, बंभलोए तओ। माणुस्सं, महासुक्के। माणुस्सं, आणए। माणुस्सं, आरणे। माणुस्सं, सव्वट्ठसिद्धे।

से णं तओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे, जाव अड्ढे, जहा दढपइण्णे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि ॥13॥

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

बिइयस्स उक्खेवओ। एव खलु जंबू ! तेण कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णामं णयरे थूभकरंडग उज्जाणे।

धणो जक्खो, धणवहो राया, सरस्सई देवी, सुमिणदसणं कहण, जम्म, वालत्तण, कलाओ य, जोव्वण, पाणिग्गहण, दाओ, पासाया, भोगा य जहा सुवाहुस्स णवर भद्दणदी कुमारे, सिरीदेवी–पामोक्खाण पचसया, रायवरकण्णगाणं, पाणिग्गहणं सामिस्स समोसरण सावगधम्म, पुव्वभवपुच्छा, महाविदेहेवासे पुंडरीगिणी णयरी, विजयकुमारे जुगवाहू तित्थयरे, पडिलाभिए, मणुस्साउए णिवद्धे, इह उववण्णे। सेस जहा सुवाहुस्स जाव महाविदेहेवासे, सिज्झिहिइ, वुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिणिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणमत करेहिइ। एव खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सुहविवागाणं वितियस्स अज्झयणरस अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति बेमि।

॥ वीयं अज्झयण सम्मत्तं ॥

तइयस्स उक्खेवो। वीरपुरे णयरे, मणोरमे उज्जाणे वीरसेणो जक्खो, वीरकण्हमित्ते राया, सिरीदेवी, सुजाए कुमारे, बलसिरी पामोक्खाण, पचसया रायवरकण्णगाणं, पाणिग्गहणे, सामी समोसरिए, पुव्वभवपुच्छा, उसुयारे णयरे, उसभदत्ते गाहावई, पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए, मणुस्साउए णिवद्धे, इह उववण्णो जाव महाविदेहेवासे सिज्झिहिइ।

॥ तइय अज्झयण सम्मत्त ॥

चउत्थस्स उक्खेवो। विजयपुरे णयरे, णदणवणे उज्जाणे, असोगो जक्खो, वासवदत्ते राया, कण्हादेवी, सुवासवेकुमारे, भद्दापामोक्खाणं पचसयरायवरकण्णगाण, पाणिग्गहण जाव पुव्वभवो कोसबी णयरी, धणपाले राया, वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए, इह उववण्णे जाव सिद्धे।

॥ चउत्थं अज्झयण सम्मत्त ॥

पचमरस उक्खेवो। सोगंधिया णयरी णीलासोए उज्जाणे, सुकालो जक्खो, अप्पडिहओ राया, सुकण्हादेवी महच्चंदे कुमारे तस्स अरहदत्ता भारिया, जिणदासो पुत्तो, तित्थयरागमणं

जिणदास-पुव्वभवो। मज्झिमिया णयरी, मेहरहे राया, सुहम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

॥ पचम अज्झयणं सम्मत्तं ॥

छट्ठस्स उक्खेववो। कणगपुरे णयरे। सेयासोय उज्जाण। वीरभद्दो जक्खो। पियचदो राया। सुभद्दा देवी। वेसमणे कुमारे जुवराया। सिरिदेवीपामोक्खाण, पचसयरायवरकण्णगाण, पाणिग्गहण, तित्थयरागमणं, धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवे मणिवइया णयरी, मित्ते राया संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

॥ छट्ठं अज्झयणं सम्मत्तं ॥

सत्तमस्स उक्खेवो। महापुरे णयरे। रत्तासोगं उज्जाणं। रत्तपालो जक्खो। बले राया। सुभद्दा देवी। महब्बलेकुमारे, रत्तवईपामोक्खाणं पंच-सयरायवरकण्णगाणं, पाणिग्गहण, तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो। मणिपुरे णयरे। णागदत्ते गाहावई। इददत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

॥ सत्तम अज्झयणं सम्मत्तं ॥

अट्ठमस्स उक्खेवओ। सुघोसे णयरे। देवरमण उज्जाणं। वीरसेणो जक्खो। अज्जुणो राया। तत्तवई देवी। भद्दणदी कुमारे। सिरिदेवीपामोक्खाण पंचसयराय- वरकण्णगाण पाणिग्गहणं जाव पुव्वभवो। महाघोसे णयरे धम्मघोसे गाहावई। धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

॥ अट्ठमं अज्झयणं सम्मत्त ॥

णवमरस उक्खेवो। चंपा णयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। पुण्णभद्दो जक्खो। दत्ते राया। रत्तवई देवी। महचंदे कुमारे जुवराया। सिरिकंता पामोक्खाण पंचसयरायवरकण्णगाणं पाणिग्गहणं जाव पुव्वभवो। तिगिच्छया णयरी। जियसत्तू राया। धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

॥ नवम अज्झयण सम्मत्त ॥

जइ ण भते ! दसमस्स उक्खेवो। एव खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएण, साइए णामं णयरे होत्था। उत्तरकुरू उज्जाणे, पासामिओ जक्खो। मित्तणंदी राया। सिरिकंता देवी। वरदत्ते कुमारे। वीरसेणापामोक्खाण पचदेवीसयाण पाणिग्गहण। तित्थयरागमणं, सावगधम्म, पुव्वभव पुच्छा। सयदुवारे णयरे, विमलवाहणे राया, धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए, मणुस्साउए णिबद्धे, इह उववण्णे, सेस जहा सुवाहुस्स कुमारस्स, चिता जाव पव्वज्जा, कप्पंतरिए जाव सव्वट्ठसिद्धे, तओ महाविदेहे जहा दढपइण्णे जाव सिज्झिहिइ 5।

एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि ॥

॥ दसम अज्झयण सम्मत्त ॥

णमो सुयदेवयाए। विवागसुयस्स दो सुयखधा दुह विवागेय सुहविवागे य। तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति।

एवं सुहविवागे वि सेस जहा आयारस्स।

॥ इति सुखविपाक सूत्रम् ॥

卐 उववाइ सूत्र 卐

कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ?।
कहिं बोदिं चइत्ताणं ? कत्थ गतुण सिज्झइ ॥1॥

अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं बोंदि चइत्ताणं, तत्थ गंतुण सिज्झइ ॥2॥

जं संठाणं तु इह भवे, चयंतरस्स चरिमसमयमि।
आसी य पएसघणं, तं संठाणं तहिं तस्स ॥3॥

दीहं वा हस्सं वा जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं।
तत्तो तिभागहीणं, सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥4॥

तिण्णि सया तेत्तीसा, धणुत्तिभागो य होइ बोधव्वा।
एसा खलु सिद्धाणं, उक्कोसोगाहणा भणिया ॥5॥

चत्तारि य रयणीओ, रयणित्तिभागूणिया य बोधव्वा।
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिमओगाहणा भणिया ॥6॥

एक्का य होइ रयणी, साहिया अंगुलाइ अट्ठ भवे।
एसा खलु सिद्धाणं, जहण्णओगाहणा भणिया ॥7॥

ओगाहणाए सिद्धा, भवत्तिभागेण होइ परिहीणा।
संठाणमणित्थंथं, जरामरणविप्पमुक्काणं ॥8॥

जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का।
अण्णोण्णसमवगाढा, पुट्ठा सव्वे य लोगंते ॥9॥

फुसइ अणंते सिद्धे, सव्वपएसेहिं णियमसो सिद्धो।
ते वि असंखेज्जगुणा, देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥10॥

असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य णाणे य।
सागारमणागारं, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥11॥

केवलणाणुवउत्ता, जाणंति सव्वभावगुणभावे।
पासंति सव्वओ खलु, केवलदिट्ठि अणंताहिं ॥12॥

णवि अत्थ माणुसाण, त सोक्ख ण वि य सव्वदेवाण।
ज सिद्धाण सोक्ख, अव्वावाह उवगयाण॥13॥

ज देवाण सोक्ख, सव्वद्धापिडिय अणतगुण।
ण य पावइ मुत्तिसुह, णताहि वग्गवग्गूहि॥14॥

सिद्धस्स सुहो रासी, सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा।
सोऽणतवग्गभइओ, सव्वागासे ण माएज्जा॥15॥

जह णाम कोइ मिच्छो, णगरगुणे वहुविहे वियाणतो।
ण चएइ परिकहेउ, उवमाए तहि असतीए॥16॥

इय सिद्धाण सोक्ख, अणोवम णत्थि तस्स ओवम्म।
किचि विसेसेणेत्तो, ओवम्ममिण, सुणह वोच्छ॥17॥

जह सव्वकामगुणिय, पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई।
तण्हाछुहाविमुक्को, अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो॥18॥

इय सव्वकालतित्ता, अतुल णिव्वाणमुवगया सिद्धा।
सासयमव्वाबाह, चिट्ठति सुही सुह पत्ता॥19॥

सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य, पारगयत्ति य परपरगयत्ति।
उम्मुक्ककम्मकवया, अजरा अमरा असगा य॥20॥

णिच्छिण्णसव्वदुक्खा, जाइजरामरणवधणविमुक्का।
अव्वाबाह सुक्ख, अणुहोति सासय सिद्धा॥21॥

अतुलसुहसागरगया अव्वावाह अणोवम पत्ता।
सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठति सुही सुहं पत्ता॥22॥

***

✻ पुच्छिंसुणं ✻

पुच्छिंसुणं समणा माहणा य, अगारिणो या परतित्थिया य।
से के इ णेगंतहियं धम्ममाहु, अणेलिसं साहु समिक्खयाए।।1।।
कहं च णाणं कहं दंसणं से, सीलं कहं णायसुयस्स आसी।
जाणासि णं भिक्खु जहातहेण, अहासुयं बूहि जहा णिसंतं।2।
खेयण्णए से कुसले महेसी, अणंतणाणी य अणंतदसी।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि।3।
उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा।
से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पण्णे, दीवे व धम्मं समिय उदाहु।4।
से सव्वदंसी अभिभूयणाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा।
अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अतीते अभए अणाऊ ।।5।।
से भूइपण्णे अणिए अचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू।
अणुत्तर तप्पइ सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तमं पगासे ।।6।।
अणुत्तरे धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपण्णे।
इंदे व देवाण महाणुभावे, सहस्स णेया दिवि णं विसिट्ठे ।।7।।
से पण्णया अक्खयसागरे वा, महोदही वा वि अणंतपारे।
अणाइले वा अकसाई मुक्के, सक्के व देवाहिवई जुइमं ।।8।।
से वीरिएणं पडिपुण्णवीरिए, सुदसणे वा णगसव्वसेट्ठे।
सुरालए वासी मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ।।9।।
सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते।
से जोयणे णवणवइसहस्से, उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ।।10।।
पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरिवट्टयंति।
से हेमवण्णे बहुणंदणे य, जंसि रइं वेदयंति महिंदा ।।11।।

से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायइ कचणमट्ठवण्णे।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरिवरे से जलिए व भोमे ॥12॥
महीइ मज्झमि ठिए णगिदे, पण्णायए सूरिय सुद्धलेसे।
एव सिरीए उ स भूरिवण्णे, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥13॥
सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महतो पव्वयस्स।
एतोवमे समणे णायपुत्ते, जाइजसो दंसण-णाणसीले ॥14॥
गिरिवरे वा णिसहाऽऽययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताण।
तओवमे से जगभूइपण्णे, मुणीण मज्झे तमुदाहु पण्णे ॥15॥
अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तर झाणवर झियाइ।
सुसुक्कसुक्क अपगडसुक्कं, सखिदुएगतवदातसुक्क ॥16॥
अणुत्तरग्गं परम महेसी, असेसकम्म स विसोहइत्ता।
सिद्धि गइ साइमणत पत्ते, णाणेण सीलेण य दंसणेण ॥17॥
रुक्खेसु णाए जह सामली वा, जसि रइं वेदयति सुवण्णा।
वणेसु वा णदणमाहु सेट्ठ, णाणेण सीलेण य भूइपण्णे ॥18॥
थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चदो व ताराण महाणुभावे।
गधेसु वा चदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिण्णमाहु ॥19॥
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, णागेसु वा धरणिदमाहु सेट्ठे।
खोओदए वा रसवेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयते ॥20॥
हत्थीसु ऐरावणमाहु णाए, सीहो मियाणं सलिलाण गगा।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवे, णिव्वाणवादी णिह णायपुत्ते ॥21॥
जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविदमाहु।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥22॥
दाणाण सेट्ठ अभयप्पयाण, सच्चेसु वा अणवज्ज वयति।
तवेसु वा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते ॥23॥

ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।
णिव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि णाणी ॥24॥
पुढोवमे धुणइ विगयगेहि, ण सण्णिहिं कुव्वइ आसुपण्णे।
तरिउ समुद्दं च महाभवोघ, अभयंकरे वीर अणतचक्खू ॥25॥
कोहं च माण च तहेव मायं, लोभं चउत्थं च अज्झत्थदोसा।
एयाणि वता अरहा महेसी, ण कुव्वइ पाव ण कारवेइ ॥26॥
किरियाकिरिय वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाण।
से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्ठिए सजमदीहराय ॥27॥
से वारिया इत्थी सराइभत्त, उवहाणवं दुक्ख खयट्ठयाए।
लोग विदित्ता आरं पर च, सव्व पभू वारिय सव्ववार ॥28॥
सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं, समाहियं अट्ठपओवसुद्धं।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इदा व देवाहिव आगमिस्संति ॥29॥

***

※ मोक्षमार्ग ※

(सूत्रकृताग सूत्र का 11वा अध्ययन)

कयरे मग्गे अक्खाए, माहणेण मइमया ?
ज मग्ग उज्जु पावित्ता, ओह तरइ दुत्तर ॥1॥

तं मग्ग अणुत्तरं सुद्ध सव्वदुक्खविमोक्खण।
जाणासि ण जहा भिक्खू ! त णो बूहि महामुणी ॥2॥

जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा।
तेसि तु कयर मग्ग, आइखेज्ज कहाहि णो ॥3॥

जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा।
तेसिम पडिसाहिज्जा, मग्गसार सुणेह मे ॥4॥

अणुपुव्वेण महाघोर, कासवेण पवेइय।
जमायाय इओ पुव्वं, समुद्दं ववहारिणो ॥5॥

अतरिसु तरतेगे, तरिस्सति अणागया।
त सोच्चा पडिवक्खामि, जतवो त सुणेह मे ॥6॥

पुढवीजीवा पुढो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी।
वाउजीवा पुढो सुत्ता, तणरुक्खा सबीयगा ॥7॥

अहावरा तसा पाणा, एव छक्काया आहिया।
एयावए जीवकाए णावरे कोइ विज्जई ॥8॥

सव्वाहिं अणुजुत्तीहि, मइम पडिलेहिया।
सव्वे अक्कंतदुक्खा य, अओ सव्वे ण हिसया ॥9॥

एयं खु णाणिणो सारं, जं ण हिसइ किचण।
अहिसा समय चेव, एयावत वियाणिया ॥10॥

उड्ढ अहे य तिरियं, जे केइ तसथावरा।
सव्वत्थ विरइं कुज्जा, संति णिव्वाणमाहियं ॥11॥

पभू दोसे णिराकिच्चा, ण विरुज्झेज्ज केणइ।
मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो ॥12॥

संवुडे से महापण्णे, धीरे दत्तेसणं चरे।
एसणासमिए णिच्च, वज्जयंते अणेसणं ॥13॥

भूयाइं च समारंभ, तमुद्दिस्सा य जं कडं।
तारिसं तु ण गिण्हेज्जा, अण्णपाणं सुसंजए ॥14॥

पूइकम्मं ण सेविज्जा, एस धम्मे वुसीमओ।
जं किंचि अभिकंखेज्जा, सव्वसो तं ण कप्पए ॥15॥

हणंतं णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जिइंदिए।
ठाणाइं संति सड्ढीणं, गामेसु णगरेसु वा ॥16॥

तहा गिरं समारब्भ, अत्थि पुण्णंति णो वए।
अहवा णत्थि पुण्णंति, एवमेयं महब्भयं ॥17॥

दाणट्ठया य जे पाणा, हम्मंति तस-थावरा।
तेसिं सारक्खणट्ठाए, तम्हा अत्थि त्ति णो वए ॥18॥

जेसिं तं उवकप्पंति, अण्णपाणं तहाविहं।
तेसिं लाभंतरायंति, तम्हा णत्थि त्ति णो वए ॥19॥

जे य दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं।
जे य णं पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करंति ते ॥20॥

दुहओ वि ते ण भासंति, अत्थि वा णत्थि वा पुणो।
आयं रयस्स हेच्चा णं, णिव्वाणं पाउणंति ते ॥21॥

णिव्वाणं परमं बुद्धा, णक्खत्ताण व चंदिमा।
तम्हा सया जए दंते, णिव्वाणं संधए मुणी ॥22॥

बुज्झमाणाण पाणाणं, किच्चंताण सकम्मुणा।
आघाइ साहु तं दीव, पइट्ठेसा पवुच्चइ ॥23॥

आयगुत्ते सया दंते, छिण्णसोए अणासवे।
जे धम्म सुद्धमक्खाइ, पडिपुण्णमणेलिस ॥24॥

तमेव अविजाणता अबुद्धा बुद्धमाणिणो।
बुद्धा मोत्ति य मण्णता, अत एए समाहिए ॥25॥

ते य वीओदगं चेव, तमुद्दिरसा य जं कड।
भोच्चा झाण झियायति, अखेयण्णाऽसमाहिया ॥26॥

जहा ढका य कका य, कुलला मग्गुका सिही।
मच्छेसण झियायति, झाणं ते कलुसाहम ॥27॥

एवं तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया।
विसएसण झियायति, कका वा कलुसाहमा ॥28॥

सुद्ध मग्ग विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मई।
उम्मग्ग–गया दुक्ख, घायमेसंति तं तहा ॥29॥

जहा आसाविणी णावं, जाइअधो दुरूहिया।
इच्छइ पारमागतुं, अंतरा य विसीयइ ॥30॥

एव तु समणा एगे, मिच्छद्दिट्ठी अणारिया।
सोयं कसिणमावण्णा, आगतारो महब्भयं ॥31॥

इम च धम्ममायाय, कासवेण पवेइयं।
तरे सोय महाघोरं अत्तताए परिव्वए ॥32॥

विरए गामधम्मेहि, जे केई जगई जगा।
तेसि अत्तुवमायाए, थामं कुव्वं परिव्वए ॥33॥

अइमाण च माय च, त परिण्णाय पंडिए।
सव्वमेय णिराकिच्चा, णिव्वाणं संधए मुणी ॥34॥

सधए साहुधम्मं च, पावधम्म णिराकरे।
उवहाणवीरिए भिक्खू, कोह माणं ण पत्थए ॥35॥

जे य बुद्धा अइक्कंता, जे य बुद्धा अणागया।
संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा ॥36॥

अह णं वयमावण्ण, फासा उच्चावया फुसे।
ण तेसु विणिहण्णेज्जा, वाएण व महागिरी ॥37॥

संवुडे से महापण्णे, धीरे दत्तेसणं चरे।
णिव्वुडे कालमाकंखी, एवं केवलिणो मयं॥

त्ति बेमि ॥38॥

॥ इति सूत्रकृतांगे मोक्षमार्गणामं एकादशमध्ययनम् ॥

***

卐 दशवैकालिक सूत्र 卐

दुमपुप्फिया पढम अज्झयणं

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिसा सजमो तवो।
देवावि त णमसति, जस्स धम्मे सया मणो ॥1 ॥

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं।
ण य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पय ॥2 ॥

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए सति साहुणो।
विहगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥3 ॥

वय च वित्ति लब्भामो, ण य कोइ उवहम्मइ।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥4॥

महुगारसमा वुद्धा, जे भवति अणिस्सिया।
णाणापिडरया दता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥5॥त्ति वेमि ॥

॥ इति दुमपप्फियाणाम पढमज्झयण समत्त ॥

सामण्णपुव्वयं दुइअं अज्झयणं

कहं णु कुज्जा सामण्ण, जो कामे ण णिवारए।
पए पए विसीयतो, सकप्पस्स वसं गओ ॥1॥

वत्थ-गंध-मलकार, इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छदा जे ण भुजति, ण से चाइत्ति वुच्चइ ॥2॥

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठीकुव्वइ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइत्ति वुच्चइ ॥3॥

समाइ पेहाए परिव्वयंतो,
सिया मणो णिस्सरइ बहिद्धा।
ण सा महं णो वि अहपि तीसे,
इच्चेव ताओ विणएज्ज राग ॥4॥

आयावयाही चय सोगमल्लं,
कामे कमाहि, कमियं खु दुक्खं ।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं,
एवं सुही होहिसि संपराए ॥5॥

पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।
णेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥6॥

धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा ।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥7॥

अह च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो ।
मा कुले गधणा होमो, संजमं णिहुओ चर ॥8॥

जइ तुं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि णारीओ ।
वाया विद्धोव्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥9॥

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाइ सुभासियं ।
अंकुसेण जहा णागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥10॥

एवं करेंति सबुद्धा, पडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥11॥त्ति बेमि ।

॥ इति सामण्णपुव्वय णाम दुइअ अज्झयण समत्त ॥

खुड्डियायारकहा तइयं अज्झयणं

सजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइण ।
तेसिमेयमणाइण्णं, णिग्गंथाण महेसिणं ॥1॥

उद्देसियं कीयगडं, णियागं अभिहडाणि य ।
राइभत्ते सिणाणे य, गंधमल्ले य वीयणे ॥2॥

सण्णिही गिहिमत्ते य, रायपिंडे किमिच्छए ।
संवाहणा दंतपहोयणा य, संपुच्छणा देह-पलोयणा य ॥3॥

अट्ठावए य णालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए।
तेगिच्छ पाहणा पाए, समारम्भ च जोइणो ॥4॥

सेज्जायर-पिण्ड च, आसदी पलियंकए।
गिहतरणिसेज्जा य, गायस्सुव्वट्टणाणि य ॥5॥

गिहिणो वेयावडिय, जा य आजीववत्तिया।
तत्ताणिव्वुडभोइत्त, आउरस्सरणाणि य ॥6॥

मूलए सिगबेरे य, उच्छुखण्डे अणिव्वुडे।
कदे मूले य सच्चित्ते, फले बीए य आमए ॥7॥

सोवच्चले सिधवे लोणे, रोमा-लोणे य आमए।
सामुद्दे पसु-खारे य, काला लोणे य आमए ॥8॥

धूवणेत्ति वमणे य, वत्थीकम्मविरेयणे।
अजणे दतवणे य, गायब्भगविभूसणे ॥9॥

सव्वमेयमणाइण्ण, णिग्गथाण महेसिण।
सजमम्मि य जुत्ताणं, लहुभूयविहारिण ॥10॥

पचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया।
पचणिग्गहणा धीरा, णिग्गंथा उज्जुदसिणो ॥11॥

आयावयति गिम्हेसु, हेमतेसु अवाउडा।
वासासु पडिसलीणा, सजया सुसमाहिया ॥12॥

परीसहरिउदता, धूयमोहा जिइदिया।
सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमति महेसिणो ॥13॥

दुक्कराइ करेत्ताण, दुस्सहाइ सहित्तु य।
के इत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झति णीरया ॥14॥

खवित्ता पुव्वकम्माइ, संजमेण तवेण य।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुडे ॥15॥ त्ति बेमि ॥

॥ खुड्डियायारकहा णाम तइयमज्झयण समत्त ॥

छज्जीवणिया णामं चउत्थं अज्झयणं

सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु छज्जीवणिया णामज्झयणं समणेण भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया णामज्झयण समणेण भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउ अज्झयणं धम्मण्णत्ती।

इमा खलु सा छज्जीवणिया णामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयण धम्मपण्णत्ती। तं जहा – 1 पुढविकाइया 2 आउकाइया 3 तेउकाइया 4 वाउकाइया 5 वणरसइकाइया 6 तसकाइया। पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अण्णत्थ सत्थ–परिणएण। आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ सत्थ–परिणएणं। तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ सत्थ– परिणएणं। वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेग–जीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ सत्थपरिणएणं। वणस्सई चित्तमतमक्खाया अणेग– जीवा पुढोसत्ता अण्णत्थ सत्थपरिणएणं। तं जहा–अग्ग–बीया, मूल–वीया, पोर–बीया, खंध–वीया, बीयरुहा, सम्मुच्छिमा, तणलया वणस्सइकाइया, सबीया, चित्तमंतमक्खाया अणेग–जीवा, पुढोसत्ता, अण्णत्थ सत्थपरिणएणं। से जे पुण इमे अणेगे वहवे तसा पाणा, तं जहा अंडया, पोयया, जराउया, रसया, संसेइमा, सम्मुच्छिमा, उब्भिया, उववाइया, जेसिं केसिं च पाणाणं, अभिक्कंतं पडिक्कंतं सकुचिय पसारियं रुयं, भतं, तसियं पलाइयं आगइ–गइविण्णाया जे य कीडपयंगा जा य कुंथु–पिवीलिया, सव्वे वेइंदिया, सव्वे तेइंदिया, सव्वे चउरिंदिया, सव्वे पचिंदिया, सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे णेरइया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा, सव्वे पाणा, परमाहम्मिया। एसो खलु छट्ठो जीवणिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चइ।

इच्चेसि छण्ह जीवणिकायाणं णेव सय दड समारभिज्जा,णेवण्णेहि दड समारभाविज्जा, दडं समारंभंतेवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविह तिविहेणं मणेण वायाए काएण ण करेमि ण कारवेमि करतंपि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भते ! पडिक्कमामि णिदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

पढमे भते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमण। सव्व भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि। से सुहुमं वा, बायर वा, तस वा, थावर वा, णेव सयं पाणे अइवाइज्जा, णेवण्णेहि पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायतेवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करतपि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भते ! पडिक्कमामि णिदामि गरहामि अप्पाण वोसिरामि। पढमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण ॥1॥

अहावरे दुच्चे भते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं। सव्व भंते ! मुसावाय पच्चक्खामि। से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, णेव सय मुस वइज्जा, णेवण्णेहि मुस वायाविज्जा, मुस वयते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करंतपि अण्ण ण समणुजाणामि। तस्स भते ! पडिक्कमामि णिदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। दुच्चे भते ! महव्वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥2॥

अहावरे तच्चे भते ! महव्वए अदिण्णादाणाओ वेरमण।
सव्व भते ! अदिण्णादाणं पच्चक्खामि। से गामे वा, णगरे वा, रण्णे वा, अप्प वा, बहु वा, अणु वा, थूलं वा, चित्तमत वा, अचित्तमतं वा, णेव सयं अदिण्ण गिण्हिज्जा, णेवण्णेहिं अदिण्णं गिण्हाविज्जा, अदिण्ण गिण्हते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविह तिवेहेणं मणेण वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करंतपि अण्ण ण समणुजाणामि। तस्स भंते ! पड्क्किमामि णिदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं ॥3॥

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमण । सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि । से दिव्व वा, माणुसं वा, तिरिक्खजोणिय वा, णेव सयं मेहुण सेविज्जा, णेवण्णेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सेवंते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करंतपि अण्ण ण समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥4॥

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमण । सव्व भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि । से अप्पं वा बहुं वा अणु वा थूलं वा चित्तमत वा अचित्तमंतं वा । णेव सयं परिग्गहं परिगिण्हेज्जा, णेवण्णेहि परिग्गह परिगिण्हाविज्जा, परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अण्णे ण समणुजाणिज्जा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । पंचमे भते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥5॥

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राइ–भोयणाओ वेरमण सव्वं भते ! राइ–भोयणं पच्चक्खामि । से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइम वा णेव संय राइं भुंजिज्जा, णेवण्णेहि राइं भुंजाविज्जा, राइं भुंजंतेवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएण ण करेमि ण कारवेमि करंतपि अण्णं ण समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राइ – भोयणाओ वेरमणं ।

इच्चेयाइं पंच महव्वयाइ राइभोयण–वेरमण–छट्ठाइ अत्तहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ता णं विहरामि ॥6॥

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा संजय–विरय–पडिहय–पच्चक्खाय पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्तिं वा, सिलं वा, लेलु वा

ससरक्ख वा काय, ससरक्ख वा वत्थ, हत्थेण वा ,पाएणा वा, कट्ठेण वा, किलिचेण वा, अगुलियाए वा, सिलागाए वा, सिलागहत्थेण वा ण आलिहिज्जा, ण विलिहिज्जा, ण घट्टिज्जा, ण भिदिज्जा अण्ण ण आलिहाविज्जा, ण विलिहाविज्जा, ण घट्टाविज्जा, ण भिदिविज्जा अण्ण आलिहत वा, विलिहंत वा, घट्टतं वा, भिदंत वा ण समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण ण करेमि ण कारवेमि करतंपि अण्ण ण समणुजाणामि। तस्स भते! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाण वोसिरामि ॥1॥

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदगं वा, ओसं वा, हिमं वा, महिय वा, करगं वा, हरितणुग वा, सुद्धोदगं वा, उदउल्लं वा काय, उदउल्ल वा वत्थ, ससिणिद्ध वा काय, ससिणिद्ध वा वत्थ, ण आमुसिज्जा ण सफुसिज्जा ण आवीलिज्जा, ण पवीलिज्जा, ण अक्खोडिज्जा ण पक्खोडिज्जा, ण आयाविज्जा, ण पयाविज्जा, अण्णं ण आमुसाविज्जा, ण संफुसाविज्जा, ण आवीलाविज्जा ण पवीलाविज्जा, ण अक्खोडाविज्जा, ण पक्खोडाविज्जा, ण आयाविज्जा ण पयाविज्जा, अण्ण आमुसत वा, सफुसंतं वा, आवीलतं वा, पवीलंतं वा, अक्खोडंतं वा, पक्खोडतं वा, आयावंत वा, पयावंत वा, ण समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करंतपि अण्ण ण समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि णिदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥2॥

से भिक्खू वा, भिक्खूणी वा, सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से अगणिं वा, इंगालं वा, मुम्मुरं वा, अच्चिं वा, जालं वा, अलायं वा, सुद्धागणि वा, उक्कं वा, ण उजिज्जा, ण घट्टिज्जा, ण भिदिज्जा, ण उज्जालिज्जा, ण पज्जालिज्जा, ण णिव्वाविज्जा, अण्ण ण उज्जाविज्जा, ण घट्टाविज्जा, ण भिंदाविज्जा ण

पढमं णाण तओ दया, एव चिट्ठइ सव्वसंजए।
अण्णाणी किं काही, किंवा णाही सेयपावगं ॥10॥

सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयंपि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥11॥

जो जीवे वि ण याणेइ, अजीवे वि ण याणेइ।
जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो णाहिइ संजमं ? ॥12॥

जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणेइ।
जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु णाहिइ संजमं ! ॥13॥

जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियाणेइ
तया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ ॥14॥

जया गइ बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ।
तया पुण्ण च पावं च, बंधं मुक्खं च जाणइ ॥15॥

जया पुण्णं च पावं च, बंधं मुक्खं च जाणइ।
तया णिव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥16॥

जया णिव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ संजोग, सब्भिंतर-बाहिरं ॥17॥

जया चयइ संजोगं, सब्भिंतर-बाहिरं।
तया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं ॥18॥

जया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं।
तया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥19॥

जया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।
तया धुणइ कम्म-रयं, अबोहि-कलुसकडं ॥20॥

जया धुणइ कम्म-रयं, अबोहि-कलुसकडं।
तया सव्वत्तगं णाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ॥21॥

जया सव्वत्तग णाण, दसण चाभिगच्छइ।
तया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली ॥22॥

जया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली।
तया जोगे णिरुंभित्ता, सेलेसि पडिवज्जइ ॥23॥

जया जोगे णिरुभित्ता, सेलेसि पडिवज्जइ।
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धि गच्छइ णीरओ ॥24॥

जया कम्म खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ णीरओ।
तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ ॥25॥

सुह–सायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स णिगामसाइरस।
उच्छोलणा पहोयस्स, दुल्लहा सुगइ तारिसगस्स ॥26॥

तवो–गुण–पहाणस्स, उज्जुमइ–खति–सजमरयस्स।
परीसहे जिणंतस्स, सुल्लहा सुगइ तारिसगस्स ॥27॥

पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छति अमर–भवणाइ।
जेसि पिओ तवो सजमो य, खंति य बभचेरं च ॥28॥

इच्चेयं छज्जीवणिय, सम्मद्दिट्ठे सया जए।
दुल्लहं लहित्तु सामण्णं, कम्मुणा ण विराहिज्जासि ॥29॥

–त्ति बेमि ॥

॥ इति छज्जीवणिया णाम चउत्थ अज्झयण समत्त ॥4॥

卐 उत्तराध्ययन सूत्र के कतिपय अध्ययन 卐

णवमं णमिपवज्जा अज्झयणं

(नौवा नमि प्रवर्ज्या अध्ययन)

चइऊण देवलोगाओ, उववण्णो माणुसम्मि लोगम्मि।
उवसंत-मोहणिज्जो, सरइ पोराणिय जाइं ॥1॥

जाइं सरित्तु भयवं, सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे, अभिणिक्खमइ णमी राया ॥2॥

सो देवलोगसरिसे, अंतेउर-वरगओ वरे भोए।
भुंजित्तु णमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ ॥3॥

मिहिलं सपुर-जणवयं, बलमोरोहं च परियण सव्वं।
चिच्चा अभिणिक्खंतो, एगंत-महिट्ठिओ भयवं ॥4॥

कोलाहलगभूयं आसी, मिहिलाए पव्वयंतम्मि।
तइया रायरिसिम्मि, णमिम्मि अभिणिक्खमंतम्मि ॥5॥

अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पवज्जा ठाण-मुत्तमं।
सक्को माहण-रूवेणं, इमं वयणमब्बवी ॥6॥

किण्णु-भो ! अज्ज मिहिलाए कोलाहलग संकुला।
सुव्वंति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥7॥

एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥8॥

मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे।
पत्त-पुप्फ-फलोवेए, बहूणं बहु-गुणे सया ॥9॥

वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदंति भो ! खगा ॥10॥

एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ कारण चोइओ।
तओ णमि रायरिसि, देविंदो इणमब्बवी ॥11॥

एस अग्गी य वाऊ य, एय डज्झइ मदिर।
भयव अतेउर तेणं, कीस ण णावपेक्खह ॥12॥

एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ कारण चोइओ।
तओ णमी रायरिसी, देविदं इणमब्बवी ॥13॥

सुह वसामो जीवामो, जेसि मो णत्थि किचण।
मिहिलाए डज्झमाणीए, ण मे डज्झइ किचण ॥14॥

चत्त-पुत्त-कलत्तस्स, णिव्वावारस्स भिक्खुणो।
पिय ण विज्जइ किचि, अप्पिय पि ण विज्जइ ॥15॥

बहु खु मुणिणो भद्द, अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगतमणुपस्सओ ॥16॥

एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ कारण चोइओ।
तओ णमिं रायरिसिं, देविदो इणमब्बवी ॥17॥

पागार कारइत्ताणं, गोपुरट्टालगाणि य।
उस्सूलगसयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ॥18॥

एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ णमी रायरिसी, देविदं इणमब्बवी ॥19॥

सद्ध णगरं किच्चा, तव-संवर-मग्गल।
खति णिउण-पागार, तिगुत्त दुप्पधंसय ॥20॥

धणुं परक्कमं किच्चा, जीव च इरिय सया।
धिइं च केयण किच्चा, सच्चेण पलिमथए ॥21॥

तव-णारायजुत्तेण, भित्तूणं कम्म-कंचुयं।
मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥22॥

एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ -कारण-चोइओ।
तओ णमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥23॥
पासाए कारइत्ताणं, वद्ध माण गिहाणि।
वालग्ग पोइयाओ य तओ गच्छसि खत्तिया ॥24॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ कारण चोइओ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥25॥
ससयं खलु सो कुणइ जो मग्गे कुणइ घरं।
जत्थेव गंतुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥26॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ -कारण-चोइओ।
तओ णमि रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥27॥
आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे।
णगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥28॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥29॥
असइं तु मणुस्सेहिं मिच्छा दडो पउंजइ।
अकारिणोऽत्थ बज्झंति, मुच्चइ कारओ जणो ॥30॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ -कारण-चोइओ।
तओ णमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥31॥
जे केइ पत्थिवा तुज्झं, णाणमंति णराहिवा।
वसे ते ठावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ॥32॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥33॥
जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥34॥

अप्पाण मेव जुज्झाहि कि ते जुज्झेण बज्झओ।
अप्पाण-मेव अप्पाण, जिणित्ता सुहमेहए ॥35॥

पचिंदियाणि कोह माण माय तहेव लोह च।
दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वं अप्पे जिए जिय ॥36॥

एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ -कारण-चोइओ।
तओ णमि रायरिसि, देविदो इणमब्बवी ॥37॥

जइत्ता विउले जण्णे भोइत्ता समण-माहणे।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥38॥

एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ -कारण-चोइओ।
तओ णमी रायरिसी, देविद इणमब्बवी ॥39॥

जो सहस्स सहस्साण मासे मासे गवं दए।
तस्सावि सजमो सेओ, अदिंतरसऽवि किचण ॥40॥

एयमट्ठ णिसामित्ता, हेउ -कारण-चोइओ।
तओ णमि रायरिसि, देविदो इणमब्बवी ॥41॥

घोरासम चइत्ताणं अण्ण पत्थेसि आसम।
इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ॥42॥

एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ -कारण-चोइओ।
तओ णमी रायरिसी, देविदं इणमब्बवी ॥43॥

मासे मासे उ जो बालो, कुसग्गेणं तु भुजए।
ण सो सुयक्खाय धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसि ॥44॥

एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ -कारण-चोइओ।
तओ णमि रायरिसि, देविदो इणमब्बवी ॥45॥

हिरण्ण सुवण्ण मणिमुत्तं कंस दूस च वाहण।
कोस वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥46॥

एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥47॥

सुवण्ण रुप्पस्स उ पव्वया भवे,
सिया हु केलाससमा असंखया।
णरस्स लुद्धस्स ण तेहिं किंचि,
इच्छा हु आगाससमा अणंतिया ॥48॥

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह।
पडिपुण्णं णालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥49॥

एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ णमि रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥50॥

अच्छेरग-मब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा।
असंते कामे पत्थेसि संकप्पेण विहम्मसि ॥51॥
एयमट्ठं णिसामित्ता, हेउ-कारण-चोइओ।
तओ णमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥52॥

सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा।
कामे य पत्थेमाणा, अकामा जंति दोग्गइं ॥53॥

अहे वयंति कोहेणं, माणेणं अहमा गई।
माया गई-पडिग्घाओ, लोभाओ दुहओ भयं ॥54॥

अवउज्झिऊण माहण-रूवं, विउव्विऊण इंदत्तं।
वंदइ अभित्थुणंतो, इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ॥55॥

अहो ते णिज्जिओ कोहो, अहो माणो पराइओ।
अहो ते णिरक्किया माया, अहो लोहो वसीकओ ॥56॥

अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं।
अहो ते उत्तमा खंती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥57॥

इह सि उत्तमो भते, पेच्चा होहिसि उत्तमो।
लोगुत्त-मुत्तम ठाणं, सिद्धि गच्छसि णीरओ॥58॥

एव अभित्थुणंतो, रायरिसि उत्तमाए सद्धाए।
पयाहिण करेतो, पुणो पुणो वदइ सक्को॥59॥

तो वदिऊण पाए, चक्क कुसलक्खणे मुणिवरस्स।
आगासेणुप्पइओ, ललिय-चवल-कुडल-तिरीडी॥60॥

णमी णमेइ अप्पाणं, सक्ख सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ॥61॥

एव करेति सबुद्धा, पडिया पवियक्खणा।
विणियट्टति भोगेसु, जहा से णमी रायरिसी॥62॥

– त्ति बेमि॥

॥ णमिपव्वज्जा णाम णवम अज्झयण समत्त॥

बहुसुयपुज्जं एगारसं अज्झयणं

(बहुश्रुत नामक 11वां अध्ययन)

सजोगा विप्प-मुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
आयारं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥1॥

जे यावि होइ णिव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
अभिक्खणं उल्लवइ, अविणीए अबहुस्सुए ॥2॥

अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा ण लब्भइ।
थंभा कोहा पमाएणं, रोगेणालस्सएण य ॥3॥

अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलित्ति वुच्चइ।
अहस्सिरे सया दंते, ण य मम्ममुदाहरे ॥4॥

णासीले ण विसीले ण सिया अइलोलुए।
अकोहणे सच्चरए, सिक्खासीलित्ति वुच्चइ ॥5॥

अह चोद्दसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ संजए।
अविणीए वुच्चइ सो उ, णिव्वाणं च ण गच्छइ ॥6॥

अभिक्खणं कोही हवइ, पबंधं च पकुव्वइ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ, सुयं लद्धूण मज्जइ ॥7॥

अवि पावि-परिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पइ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावयं ॥8॥

पइण्णवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अवियत्ते, अविणीएत्ति वुच्चइ ॥9॥

अह पण्णरसहि ठाणेहिं, सुविणीएत्ति वुच्चइ।
णीयावत्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ॥10॥

अप्पं च अहिक्खिवइ, पबंधं च ण कुव्वइ।
मेत्तिज्जमाणो भयइ, सुयं लद्धुं ण मज्जइ ॥11॥

ण य पाव-परिक्खेवी, ण य मित्तेसु कुप्पई।
अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासइ ॥12॥

कलह-डमर-वज्जिए, बुद्धे अभिजाइए।
हिरिम पडिसलीणे, सुविणीएत्ति वुच्चइ ॥13॥

वसे गुरुकुले णिच्चं, जोगव उवहाणव।
पियकरे पियवाइ, से सिक्ख लद्धु मरिहइ ॥14॥

जहा सखम्मि पय णिहिय, दुहओ वि विरायइ।
एव बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुय ॥15॥

जहा से कबोयाण, आइण्णे कथए सिया।
आसे जवेण पवरे, एव हवइ बहुस्सुए ॥16॥

जहा इण्णसमारूढे, सूरे दढपरक्कमे।
उभओ णदिघोसेण, एव हवइ बहुरसुए ॥17॥

जहा करेणु-परिकिण्णे, कुजरे सट्ठिहायणे।
बलवते अप्पडिहए, एव हवइ बहुस्सुए ॥18॥

जहा से तिक्खसिगे, जायक्खधे विरायइ।
वसहे जूहाहिवइ, एवं हवई बहुरसुए ॥19॥

जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहसए।
सीहे मियाण पवरे, एव हवइ बहुस्सुए ॥20॥

जहा से वासुदेवे, सख-चक्क-गदा-धरे।
अप्पडिहयबले जोहे, एव हवइ बहुस्सुए ॥21॥

जहा से चाउरते, चक्कवट्टी-महिड्ढिए।
चोद्दसरयणाहिवई, एव हवइ बहुस्सुए ॥22॥

जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरंदरे।
सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥23॥

जहा से तिमिर-विद्धंसे, उच्चिट्ठते दिवायरे।
जलते इव तेएण, एव हवइ बहुस्सुए ॥24॥
जहा से उडुवई चंदे, णक्खत्त-परिवारिए।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एव हवइ बहुस्सुए ॥25॥
जहा से सामाइयाणं, कोट्ठागारे सुरक्खिए।
णाणा-धण्ण-पडिपुण्णे, एव हवइ बहुस्सुए ॥26॥
जहा सा दुमाण पवरा, जंबूणाम सुदंसणा।
अणाढियस्स देवस्स एवं हवइ बहुस्सुए ॥27॥
जहा से णईण पवरा, सलिला सागरंगमा।
सीया णीलवंतपवहा, एव हवइ बहुस्सुए ॥28॥
जहा से णगाण पवरे, सुमहं मंदरे गिरी।
णाणोसहि-पज्जलिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥29॥
जहा सयंभूरमणे, उदही अक्खओदए।
णाणा-रयण-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥30॥

समुद्द-गम्भीर-समा दुरासया,
अचक्किया केणइ दुप्पहंसया।
सुयस्स पुणा विउलस्स ताइणो,
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥31॥

तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए।
जेणप्पाण परं चेव, सिद्धि संपाउणेज्जासि ॥32॥ त्ति बेमि ॥

॥ बहुस्सुयपुज्ज णाम एगारस अज्झयण समत्त ॥11॥

संजइज्जं अट्ठारहमं अज्झयणं

(सयति नामक अठारहवा अध्ययन)

कम्पिल्ले णयरे राया, उदिण्ण-बलवाहणे।
णामेण संजए णाम, मिगव्व उवणिग्गए ॥1॥

हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य।
पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ॥2॥

मिए छुहित्ता हयगओ, कम्पिल्लुज्जाण केसरे।
भीए सते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥3॥

अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे।
सज्झायज्झाण-संजुत्ते, धम्मज्झाण झियायइ ॥4॥

अप्फोव-मण्डवम्मि, झायइ खवियासवे।
तस्सागए मिगे पास, वहेइ से णराहिवे ॥5॥

अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहि।
हए मिए उ पासित्ता, अणगार तत्थ पासइ ॥6॥

अह राया तत्थ सभतो, अणगारो मणाहओ।
मए उ मद-पुण्णेणं, रस-गिद्धेण घतुणा ॥7॥

आस विसज्जइत्ताण, अणगारस्स सो णिवो।
विणएण वदए पाए, भगवं एत्थ मे खमे ॥8॥

अह मोणेण सो भगव, अणगारे झाणमस्सिए।
रायाण ण पडिमंतेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥9॥

सजओ अहमम्मीति, भगवं ! वाहराहि मे।
कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज णरकोडिओ ॥10॥

अभओ पत्थिवा ! तुब्भं, अभयदाया भवाहि य।
अणिच्चे जीवलोगम्मि, कि हिंसाए पसज्जसि ? ॥11॥

जया सव्वं परिच्चजज्ज, गंतव्व-मवसस्स ते।
अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसि ॥12॥
जीवियं चेव-रूवं च, विज्जु-संपाय-चचलं।
जतत्थ तं मुज्झसि रायं, पेच्चत्थं णावबुज्झसे ॥13॥
दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बंधवा।
जीवंत-मणुजीवंति, मयं णाणुव्वयंति य ॥14॥
णीहरंति मयं पुत्ता, पियरं परम-दुक्खिया।
पियरो वि तहा पुत्ते, बंधू रायं ! तवं चरे ॥15॥
तओ तेणज्जिए दव्वे, दारे य परि-रक्खिए।
कीलंतिऽण्णे णरा राय, हट्ठ-तुट्ठ-मलंकिया ॥16॥
तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं।
कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छइ उ परं भवं ॥17॥
सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए।
महय संवेग-णिव्वेदं, समावण्णो णराहिवो ॥18॥
'संजओ' चइउं रज्जं, णिक्खंतो जिण-सासणे।
'गद्दभालिस्स' भगवओ, अणगारस्स अंतिए ॥19॥
चिच्चा रट्ठं पव्वइए, खत्तिए परिभासइ।
जहा ते दीसइ रूवं, पसण्णं ते तहा मणो ॥20॥
किं णामे किं गोत्ते, कस्सट्ठाए व माहणे।
कहं पडियरसी बुद्धे, कहं विणीएत्ति वुच्चसि ॥21॥
संजओ णाम णामेणं, तहा गोत्तेण गोयमो।
'गद्दभाली' ममायरिया, विज्जा-चरण-पारगा ॥22॥
किरियं अकिरियं विणयं, अण्णाणं च महामुणी।
एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेयण्णे किं पभासइ ॥23॥

इइ पाउकरे बुद्धे, णायए परिणिव्वुए।
विज्जाचरण सपण्णे, सच्चे सच्च–परक्कमे ॥24॥
पडति णरए घोरे, जे णरा पाव–कारिणो।
दिव्व च गइ गच्छति, चरित्ता धम्म–मारिय ॥25॥
माया–बुइयमेय तु, मुसा–भासा णिरत्थिया।
सजममाणोऽवि अह, वसामि इरियामि य ॥26॥
सव्वेए विइया मज्झ, मिच्छादिट्ठी अणारिया।
विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं ॥27॥
अहमासी महापाणे, जुइम वरिस–सओवमे।
जा सा पाली–महापाली, दिव्वा वरिस–सओवमा ॥28॥
से चुए बम्भलोगाओ, माणुसं भवमागए।
अप्पणो स परेसि च, आउ जाणे जहा तहा ॥29॥
णाणारूइ च छद च, परिवज्जेज्ज सजए।
अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जामणुसचरे ॥30॥
पडिक्कमामि पसिणाणं, परमतेहिं वा पुणो।
अहो उट्ठिए अहोराय, इइ विज्जा तव चरे ॥31॥
ज च मे पुच्छसि काले, सम्म सुद्धेण चेयसा।
ताइ पाउकरे बुद्धे, त णाण जिण–सासणे ॥32॥
किरिय च रोयइ धीरे, अकिरिय परिवज्जए।
दिट्ठीए दिट्ठीसंपण्णे, धम्म चरसु दुच्चर ॥33॥
एय पुण्णपय सोच्चा, अत्थ–धम्मोवसोहिय।
'भरहोऽवि' भारह वासं, चिच्चा कामाइ पव्वए ॥34॥
'सगरोऽवि' सागरत, भरहवास णराहिवो।
इस्सरिय केवल हिच्चा, दयाइ परिणिव्वुडे ॥35॥

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
पव्वज्ज-मब्भुवगओ, मघवं णाम महाजसो ॥36॥

'सणंकुमारो' मणुस्सिंदो, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सोऽवि राया तव चरे ॥37॥

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
'संती' संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥38॥

इक्खाग-राय-वसभो, 'कुंथू' णाम णरीसरो।
विक्खाय-कित्ती भगवं, पत्तो गइ-मणुत्तरं ॥39॥

सागरंतं चइत्ताणं, भरहं णरवरीसरो।
अरो ''य'' अरयं पत्तो, पत्तो गइ-मणुत्तरं ॥40॥

चइत्ता भारहं वास, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
चइत्ता उत्तमे भोए, 'महापउमे, तव चरे ॥41॥

एगच्छत्तं पसाहित्ता, महि माणणिसूदणो।
'हरिसेणो' मणुस्सिंदो, पत्तो गइ-मणुत्तरं ॥42॥

अण्णिओ रायसहस्सेहिं, सु-परिच्चाई दमं चरे।
'जयणामो' जिणक्खायं, पत्तो गइ-मणुत्तर ॥43॥

'दसण्णरज्जं' मुदियं, चइत्ताणं मुणी चरे।
'दसण्णभद्दो' णिक्खंतो, सक्ख सक्केण चोइओ।।44॥

'णमी' णमेइ अप्पाणं, सक्ख सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही' सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥45॥

'करकण्डू' कलिंगेसु, पंचालेसु य दुम्मुहो।
'णमी राया' विदेहेसु, 'गंधारेसु' य णग्गई ॥46॥

एए णरिंद-वसभा, णिक्खंता जिण-सासणे।
पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥47॥

सोवीर-राय-वसभो, चइत्ताण मुणी चरे।
'उदायणो' पव्वइओ, पत्तो गइ-मणुत्तर ॥48॥

तहेव 'कासीराया' वि, सेओ-सच्च-परक्कमे।
काम-भोगे परिच्चिज्ज, पहणे कम्म-महावण ॥49॥

तहेव 'विजओ' राया, अणट्ठाकित्ति पव्वए।
रज्ज तु गुणसमिद्ध' पयहित्तु महाजसो ॥50॥

तहेवुग्ग तव किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा।
'महब्बलो' रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥51॥

कह धीरो अहेऊहि, उम्मत्तो व महि चरे।
एए विसेस-मादाय, सूरा दृढपरक्कमा ॥52॥

अच्चत-णियाण-खमा, सच्चा से भासिया वई।
अतरिंसु तरतेगे, तरिस्सति अणागया ॥53॥

कह धीरे अहेऊहि, अत्ताण परियावसे।
सव्व-सग-विणिम्मुक्के, सिद्धे भवइ णीरए ॥54॥

-त्तिबेमि ॥

॥ सजइज्ज अठारहम अज्झयण समत्त ॥

महाणियंठिज्जं वीसइमं अज्झयणं

(महानिर्ग्रन्थीय नामक 20वां अध्याय)

सिद्धाणं णमो किच्चा, संजयाणं च भावओ।
अत्थधम्मगइं तच्चं, अणुसिट्ठिं सुणेह मे ॥1॥

पभूयरयणो राया, 'सेणिओ' मगहाहिवो।
विहारज्जत्तं णिज्जाओ, 'मण्डिकुच्छिंसि' चेइए ॥2॥

णाणादुमलयाइण्णं, णाणापक्खिणिसेवियं।
णाणाकुसुमसंछण्णं, उज्जाणं णदणोवमं ॥3॥

तत्थ सो पासइ साहुं, संजयं सुसमाहियं।
णिसण्णं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं ॥4॥

तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि सजए।
अच्चंतपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ ॥5॥

अहो ! वण्णो अहो ! रूवं, अहो ! अज्जस्स सोमया।
अहो ! खंती अहो ! मुत्ती, अहो ! भोगे असंगया ॥6॥

तस्स पाए उ वंदित्ता, काऊण य पयाहिणं।
णाइदूरमणासण्णे, पंजली पडिपुच्छइ ॥7॥

तरुणोसि अज्जो ! पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया।
उवट्ठिओऽसि सामण्णे, एयमट्ठं सुणेमि त्ता ॥8॥

अणाहोमि महाराय ! णाहो मज्झ ण विज्जइ।
अणुकंपगं सुहिं वावि, कंचि णाभिसमेमहं ॥9॥

तओ सो पहसिओ राया सेणिओ मगहाहिवो।
एवं ते इड्ढिमंतस्स, कहं णाहो ण विज्जइ ॥10॥

होमि णाहो भयताण, भोगे भुजाहि सजया ! ।
मित्तणाइपरिवुडो, माणुरस खु सुदुल्लह ॥11॥

अप्पणाऽवि अणाहोऽसि, सेणिया मगहाहिवा ! ।
अप्पणा अणाहो सतो, कह णाहो भविरससि ॥12॥

एव वुत्तो णरिदो सो, सुसभतो सुविम्हिओ ।
वयण अस्सुयपुव्व, साहुणा विम्हयण्णिओ ॥13॥

अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुर अतेउर च मे ।
भुजामि माणुसे भोगे, आणा इरसरिय च मे ॥14॥

एरिसे सपयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए ।
कह अणाहो भवइ, मा हु भते ! मुस वए ॥15॥

ण तुम जाणे अणाहरस, अत्थ पोत्थ च पत्थिवा ।
जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा णराहिवा ! ॥16॥

सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
जहा अणाहो भवइ, जहा मेय पवत्तिय ॥17॥

कोसबी णाम णयरी, पुराण पुरभेयणी ।
तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूयधणसचओ ॥18॥

पढमे वए महाराय ! अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा ॥19॥

सत्थ जहा परमतिक्ख, सरीरविवरतरे ।
आलीविज्ज अरी कुद्धो, एव मे अच्छिवेयणा ॥20॥

तिय मे अतरिच्छ च उत्तमग च पीडइ ।
इदासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥21॥

उवट्ठिया मे आयरिग, विज्जामततिगिच्छया ।
अबीया सत्थकुसला, मतमूलविसारया ॥22॥

ते मे तिगिच्छ कुव्वंति, चाउप्पाय जहाहियं।
ण य दुक्खा विमोयति एसा मज्झ अणाहया ॥23॥
पिया मे सव्वसारं पि, दिज्जाहि मम कारणा।
ण य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥24॥
माया-वि मे महाराय !, पुत्तसोगदुहट्टिया।
ण य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥25॥
भायरा मे महाराय !, सगा जेट्ठकणिट्ठगा।
ण य दुक्खा विमोयति, एसा मज्झ अणाहया ॥26॥
भइणीओ मे महाराय !, सगा जेट्ठकणिट्ठगा।
ण य दुक्खा विमोयति, एसा मज्झ अणाहया ॥27॥
भारिया मे महाराय !, अणुरत्ता अणुव्वया।
अंसुपुण्णेहिं णयणेहिं, उरं मे परिसिचइ ॥28॥
अण्ण पाणं च ण्हाणं च, गंध-मल्ल-विलेवणं।
मए णायमणायं वा, सा बाला णेव भुंजइ ॥29॥
खणंऽपि मे महाराय !, पासाओ वि ण फिट्टइ।
ण य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥30॥
तओऽहं एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो।
वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणंतए ॥31॥
सइं च जइ मुच्चेज्जा, वेयणा विउला इओ।
खतो दंतो णिरारम्भो, पव्वइए अणगारियं ॥32॥
एवं च चितइत्ताणं, पसुत्तोमि णराहिवा !।
परियत्तंतीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥33॥
तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ताण बंधवे।
खंतो दंतो णिरारम्भो, पव्वइओ अणगारियं ॥34॥

तो ऽह णाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य।
सव्वेसि चेव भूयाण, तसाण थावराण य॥35॥

अप्पा णई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे णदण वण॥36॥

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्त च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ॥37॥

इमा हु अण्णाऽवि अणाहया णिवा,
तमेगचित्तो णिहुओ सुणेहि।
णियठधम्म लहियाण वि जहा,
सीयति एगे बहुकायरा णरा॥38॥

जो पव्वइत्ताण महव्वयाइ, सम्म च णो फासयइ पमाया।
अणिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, ण मूलओ छिण्णइ बधण से॥39॥

आउत्तया जस्स ण अत्थि काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए।
आयाण-णिक्खेव-दुगुछणाए, ण वीरजाय अणुजाइ मग्ग॥40॥

चिरऽपि से मुण्डरुई भवित्ता, अथिरव्वए तव-णियमेहि भट्ठे।
चिरऽपि अप्पाण किलेसइत्ता, ण पारए होइ हु सपराए॥41॥

पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे, अयतिए कूड-कहावणे वा।
राढामणी वेरुलियप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु॥42॥

कुसीललिग इह धारइत्ता, इसिज्झय जीविय वूहइत्ता।
असजए सजयलप्पमाणे, विणिग्घाय-मागच्छइ से चिरपि॥43॥

विस तु पिय जह कालकूडं, हणाइ सत्थ जह कुग्गहीय।
एसोऽवि धम्मो विसओववण्णो, हणाइ वेयाल इवाविवण्णो॥44॥

जे लक्खण सुविणं पउजमाणे, णिमित्तकोऊहल सपगाढे।
कुडेहु-विज्जा-सवदारजीवी, ण गच्छइ सरणं तम्मि काले॥45॥

तमं तमेणेव उ से असीले, सया दुही विप्परियामुवेइ।
संधावइ णरग-तिरिक्ख जोणिं, मोणं विराहेत्तु असाहुरूवे ॥46॥

उद्देसियं कीयगडं णियागं, ण मुच्चइ किंचि अणेसणिज्जं।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता, इत्तो चुए गच्छइ कट्टुपाव ॥47॥

ण तं अरी कंठ छेत्ता करेइ, ज से करे अप्पणिया दुरप्पया।
से णाहइ मच्चुमुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दया-विहूणो ॥48॥

णिरट्ठिया णग्गरुई उ तस्स,
जे उत्तमट्ठं विवज्जासमेइ।
इमेऽवि से णत्थि परेऽवि लोए,
दुहओऽवि से झिज्झइ तत्थ लोए ॥49॥

एमेवऽहाछदकुसीलरूवे, मग्गं विराहित्तु जिणुत्तमाणं।
कुररी विवा भोग-रसाणुगिद्धा, णिरट्ठसोया परिया वमेइ ॥50॥

सोच्चाण मेहावी सुभासियं इमं, अणुसासणं णाणगुणोववेयं।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं, महाणियंठाण वए पहेणं ॥51॥

चरित्त-मायार-गुणण्णिए तओ, अणुत्तरं संजम पालियाण।
णिरासवे संखवियाण कम्मं, उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥52॥

एवुग्गदंतेऽवि महातवोधणे, महामुणी महापइण्णे महायसे।
महाणियंठिज्जमिणं महासुयं, से काहए महया वित्थरेणं ॥53॥

तुट्ठो य सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली।
अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥54॥

तुज्झं सुलद्ध खु मणुस्सजम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी।
तुब्भे सणाहा य सबंधवा य, जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाण ॥55॥

तंसि णाहो अणाहाणं, सव्वभूयाण संजया!
खामेमि ते महाभाग !, इच्छामि अणुसासिउ ॥56॥

पुच्छिऊण मए तुब्भ, झाणविग्घो य जो कओ।
णिमतिया य भोगेहि, त सव्व मरिसेहि मे ॥57॥

एव थुणित्ताण स रायसीहो,
अणगारसीह परमाइ भत्तिए।
सओरोहो सपरियणो सबधवो,
धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥58॥

ऊस-सिय-रोम-कूवो, काऊण य पयाहिण।
अभिवदिऊण सिरसा, अइयाओ णराहिवो ॥59॥

इयरोऽवि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य।
विहग इव विप्पमुक्को, विहरइ वसुह विगयमोहो ॥60॥

–त्ति बेमि ॥

॥ महाणियठिज्ज णाम वीसइम अज्झयण समत्त ॥

रहणेमिज्जं बावीसइमं अज्झयणं

(रहनेमि नामक 22वा अध्ययन)

'सोरियपुरम्मि' णयरे, आसि राया महिड्ढिए।
वसुदेवत्ति णामेणं, राय-लक्खण-सजुए॥1॥

तस्स भज्जा दुवे आसि, रोहिणी देवई तहा।
तासिं दोण्हं दुवे पुत्ता, इट्ठा राम-केसवा॥2॥

सोरियपुरम्मि णयरे, आसी राया महिड्ढिए।
'समुद्दविजए' णामं, राय-लक्खण-संजुए॥3॥

तस्स भज्जा 'सिवा' णाम, तीसे पुत्तो महायसो।
भगवं 'अरिट्ठणेमित्ति', लोगणाहे दमीसरे॥4॥

सोऽरिट्ठणेमिणामो उ, लक्खण-स्सर-संजुओ।
अट्ठसहस्सलक्खणधरो, गोयमो कालगच्छवि॥5॥

वज्जरिसहसंघयणो, समचउरंसो झसोयरो।
तस्सरायमईकण्ण, भज्जं जायइ केसवो॥6॥

अह सा रायवरकण्णा, सुसीला चारुपेहिणी।
सव्वलक्खणसंपण्णा, विज्जु-सोयामणि-प्पभा॥7॥

अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढियं।
इहागच्छउ कुमारो, जा से कण्णं ददामिऽहं॥8॥

सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कय-कोउय-मंगलो।
दिव्वजुयल-परिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ॥9॥

मत्तं च गंधहत्थि च, वासुदेवस्स जेट्ठगं।
आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणी जहा॥10॥

अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिए।
दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ॥11॥

चउरगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कम।
तुरियाण सण्णिणाएण दिव्वेण गगण फुसे ॥12॥

एयारिसाए इड्ढिए, जुत्तीए उत्तमाइ य।
णियगाओ भवणाओ, णिज्जाओ वण्हिपुगवो ॥13॥

अह सो तत्थ णिज्जतो, दिस्स पाणे भयद्दुए।
वाडेहिं पजरेहिं च, सण्णिरुद्धे सुदुक्खिए ॥14॥

जीवियत तु सपत्ते, मसट्ठा भक्खियव्वए।
पासित्ता से महापण्णे, सारहि इणमब्बवी ॥15॥

कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो।
वाडेहि पंजरेहिं च, सण्णिरुद्धा य अच्छहि ॥16॥

अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो।
तुज्झ विवाह-कज्जम्मि, भोयावेउ बहु जण ॥17॥

सोऊण तरसवयणं, बहु-पाणि-विणासण।
चितेइ से महापण्णे, साणुक्कोसे जिएहि उ ॥18॥

जइ मज्झ कारणा एए, हम्मति सुबहू जिया।
ण मे एय तु णिस्सेस, परलोगे भविरसइ ॥19॥

सो कुण्डलाण जुयल, सुत्तग च महायसो।
आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ॥20॥

मणपरिणामो य कओ, देवा य जहोइय समोइण्णा।
सव्विड्ढीइ सपरिसा, णिक्खमणं तस्स काउ जे ॥21॥

देव-मणुस्स-परिवुडो, सिवियारयण तओ समारूढो।
णिक्खमिय बारगाओ, रेवययम्मि ठिओ भगव ॥22॥

उज्जाण सपत्तो, ओइण्णो उत्तमाओ सीयाओ।
साहस्सीए परिवुडो, अह णिक्खमइ उ चित्ताहि ॥23॥

अह सो सुगंध-गंधिए, तुरियं मउकुंचिए।
सयमेव लुंचइ केसे, पंचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥24॥

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं।
इच्छिय-मणोरहं तुरियं, पावसु तं दमीसरा ॥25॥

णाणेण दंसणेणं च, चरित्तेणं तहेव य।
खंतीए मुत्तीएचेव, वड्ढमाणो भवाहि य ॥26॥

एवं ते राम-केसवा, दसारा य वहू जणा।
अरिट्ठणेमिं वंदित्ता, अभिगया बारगापुरि ॥27॥

सोऊण रायकण्णा, पव्वज्जं सा जिणस्स उ।
णीहासा य णिराणंदा, सोगेण उ समुत्थिया ॥28॥

राईमई विचिंतेइ, धिरत्थु मम जीवियं।
जाऽहं तेण परिच्चत्ता, सेयं पव्वइउं मम ॥29॥

अह सा भमर-सण्णिभे, कुच्च-फणग-प्पसाहिए।
सयमेव लुंचइ केसे, धिइमंता ववस्सिया ॥30॥

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेस जिइंदिय।
संसार सागरं घोरं, तर कण्णे लहुं लहुं ॥31॥

सा पव्वइया संति, पव्वावेसी तहिं बहुं।
सयणं परियणं चेव, सीलवंता बहुस्सुया ॥32॥

गिरिं रेवतयं जंती, वासेणुल्ला उ अतरा।
वासंते अंधयारम्मि, अतो लयणस्स सा ठिया ॥33॥

चीवराइं विसारंति, जहा जायत्ति पासिया।
रहणेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइऽवि ॥34॥

भीया य सा तहिं दट्ठुं, एगंते संजयं तयं।
बाहाहिं काउं संगोप्फं, वेवमाणी णिसीयइ ॥35॥

अह सोऽवि रायपुत्तो, समुद्दविजयगओ।
भीय पवेविय दट्ठु, इम वक्क उदाहरे ॥36॥

रहणेमी अह भद्दे !, सुरुवे चारुभासिणी।
मम भयाहि सुयणु, ण ते पीला भविस्सइ ॥37॥

एहि ता भुजिमो भोए, माणुस्स खु सुदुल्लह।
भुत्त-भोगी तओ पच्छा, जिणमग्गं चरिस्सामो ॥38॥

दट्ठुण रहणेमि तं, भग्गुज्जो य पराजिय।
राईमई असम्भता, अप्पाण सवरे तहि ॥39॥

अह सा रायवरकण्णा, सुट्ठिया णियमव्वए।
जाइ कुल च सील च, रक्खमाणी तय वए ॥40॥

जइऽसि रूवेण वेसमणो, ललिएण णलकुब्बरो।
तहाऽवि ते ण इच्छामि, जइऽसि सक्ख पुरन्दरो ॥41॥

पक्खदे जलिय जोइ, धूमकेउ दुरासय।
णेच्छति वतय भोत्तुं, कुले जाया अगधणे ॥42॥

धिरत्थु तेऽजसोकामी !, जो त जीविय कारणा।
वत इच्छसि आवेउ, सेय ते मरण भवे ॥43॥

अह च भोगरायस्स, तं चऽसि अधगवण्हिणो।
मा कुले गधणा होमो, सजम णिहुओ चर ॥44॥

जइ त काहिसी भाव, जा जा दिच्छसि णारिओ!
वायाविद्धो व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥45॥

गोवालो भण्डवालो वा, जह तद्दव्वऽणिस्सरो।
एव अणिस्सरो तऽपि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥46॥

तीसे सो वयण सोच्चा, सजयाइ सुभासिय।
अंकुसेण जहा णागो, धम्मे सपडिवाइओ ॥47॥

कोह माणं णिगिण्हित्ता, माय लोभं च सव्वसो।
इंदियाइं वसे काउं, अप्पाणं उवसहरे ॥48॥

मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिओ।
सामण्णं णिच्चलं फासे, जावज्जीव दढव्वओ ॥49॥

उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दोण्णिऽवि केवली।
सव्वं कम्म खवित्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥50॥

एवं करेंति संबुद्धा, पडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥51॥

–त्ति बेमि ॥

॥ रहणेमिज्ज णाम बावीसइम अज्झयण समत्त ॥

केसिगोयमिज्जं तेवीसइमं अज्झयणं

(केशी गौतम नामक तैवीसवा अध्ययन)

जिणे पासित्ति णामेण, अरहा लोगपूइओ।
सबुद्धप्पा य सव्वण्णू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥1॥

तस्स लोगपईवस्स, आसी सीसे महायसे।
केसी कुमारसमणे, विज्जाचरण-पारगे ॥2॥

ओहिणाणसुए बुद्धे, सीससघसमाउले।
गामाणुगाम रीयते, सावत्थि पुरमागए ॥3॥

तिदुय णाम उज्जाण, तम्मि णगरमडले।
फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥4॥

अह तेणेव कालेण, धम्मतित्थयरे जिणे।
भगव वद्धमाणित्ति, सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥5॥

तरस लोगपईवरस, आसी सीसे महायसे।
भगव गोयमे णाम, विज्जाचरणपारगे ॥6॥

बारसगविऊ बुद्धे, सीस-सघ-समाउले।
गामाणुगामं रीयते, सेऽवि सावत्थिमागए ॥7॥

कोट्ठग णाम उज्जाण, तम्मि णगरमण्डले।
फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥8॥

केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे।
उभओऽवि तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिया ॥9॥

उभओ सीससंघाण, संजयाण तवस्सिण।
तत्थ चिता समुप्पण्णा, गुणवंताण ताइणं ॥10॥

केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो ?
आयारधम्मप्पणिही, इमा वा सा व केरिसी ?॥11॥

चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥12॥

अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो।
एगकज्जपवण्णाणं, विसेसे किं णु कारण? ॥13॥

अह ते तत्थ सीसाणं, विण्णाय पवितक्कियं।
समागमे कयमई, उभओ केसी-गोयमा ॥14॥

गोयमो पडिरूवण्णू सीस-संघसमाउले।
जेट्ठं कुलमवेक्खंतो, तिंदुयं वणमागओ ॥15॥

केसीकुमार-समणे, गोयमं दिस्समागयं।
पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं संपडिवज्जइ ॥16॥

पलालं फासुयं तत्थ, पंचम कुसतणाणि य।
गोयमस्स णिस्सेज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥17॥

केसीकुमार-समणे, गोयमे य महायसे।
उभओ णिसण्णा सोहंति, चंद-सूर-समप्पभा ॥18॥

समागया बहू तत्थ, पासंडा कोउगा मिया।
गिहत्थाणं अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥19॥

देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस किण्णरा।
अदिस्साणं च भूयाणं, आसी तत्थ समागमो ॥20॥

पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममब्ववी।
तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्ववी ॥21

पुच्छ भंते ! जहिच्छ ते, केसिं गोयममब्ववी।
तओ केसिं अणुण्णाए, गोयमं इणमब्ववी ॥22॥

चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥23॥

एग-कज्ज-पवण्णाण, विसेसे किण्णु कारण ?।
धम्मे दुविहे मेहावी ! कह विप्पच्चओ ण ते ?॥24॥

तओ केसि बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी।
पण्णा समिक्खए धम्म, तत्त तत्तविणिच्छिय॥25॥

पुरिमा उज्जुजडा उ, वक्कजडा य पच्छिमा।
मज्झिमा उज्जुपण्णा उ, तेण धम्मे दुहा कए॥26॥

पुरिमाण दुव्विसोज्झो उ, चरिमाण दुरणुपालओ।
कप्पो मज्झिमगाण तु, सुविसोज्झो सुपालओ॥27॥

साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे ससओ इमो।
अण्णोऽवि ससओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा॥28॥

अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो सतरुत्तरो।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महाजसा॥29॥

एग-कज्ज-पवण्णाण, विसेसे कि णु कारण ?।
लिगे दुविहे मेहावी !, कह विप्पच्चओ ण ते ?॥30॥

केसिमेव बुवाण तु, गोयमो इणमब्बवी।
विण्णाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छिय॥31॥

पच्चयत्थ च लोगस्स, णाणाविहविगप्पण।
जत्तत्थ गहणत्थं च, लोगे लिगपओयण॥32॥

अह भवे पइण्णा उ, मोक्ख-सब्भूय-साहणा।
णाण च दसणं चेव, चरित्त चेव णिच्छए॥33॥

साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे ससओ इमो।
अण्णोऽवि संसओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा !॥34॥

अणेगाणं सहस्साणं, मज्झेचिट्ठसि गोयमा !
ते य ते अहिगच्छंति, कहं ते णिज्जिया तुमे ?॥35॥

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताण, सव्वसत्तू जिणामहं ॥36॥
सत्तू य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्ववी।
तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥37॥
एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदियाणि य।
ते जिणित्तु जहाणायं, विहरामि अहं मुणी ! ॥38॥
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥39॥
दीसंति बहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं तं विहरसि मुणी ? ॥40॥
ते पासे सव्वसो छित्ता, णिहंतूण उवायओ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, विहरामि अह मुणी ॥41॥
पासा य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥42॥
राग-द्दोसा-दओ तिव्वा, णेहपासा भयकरा।
ते छिंदित्तु जहाणायं, विहरामि जहक्कमं ॥43॥
साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे ससओ इमो।
अण्णोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥44॥
अंतोहिययसंभूया, लया चिट्ठइ गोयमा !।
फलेइ विस-भक्खीणि, सा उ उद्धरिया कहं ? ॥45॥
तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं।
विहरामि जहाणाय, मुक्कोमि विसभक्खण ॥46॥
लया य इइ का वुत्ता, केसि गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥47॥

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया।
तमुद्धित्तु जहाणाय, विहरामि महामुणी ! ॥48॥

साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे ससओ इमो।
अण्णोऽवि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ! ॥49॥

सपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा ।
जे डहति सरीरत्था, कह विज्झाविया तुमे ? ॥50॥

महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं।
सिचामि सयय तेउ, सित्ता णो व डहति मे ॥51॥

अग्गी य इइ के वुत्ता, केसी गोयममब्बवी।
केसिमेव बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥52॥

कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुय-सील-तवो जल।
सुयधाराभिहया संता, भिण्णा हु ण डहति मे ॥53॥

साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे ससओ इमो।
अण्णोऽवि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ! ॥54॥

अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ।
जसि गोयम ! आरूढो कह तेण ण हीरसि ॥55॥

पधावतं णिगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहिय।
ण मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्ग च पडिवज्जइ ॥56॥

आसे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी।
केसिमेव बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥57॥

मणो साहिस्सओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ।
त सम्म तु णिगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कथग ॥58॥

साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे ससओ इमो।
अण्णोऽवि संसओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ! ॥59॥

कुप्पहा बहवे लोए, जेहि णासंति जंतुणो।
अद्धाणे कहं वट्टंतो, तं ण णाससि गोयमा ! ॥60॥

जे य मग्गेण गच्छंति, जे य उम्मग्गपट्ठिया।
ते सव्वे वेइया मज्झं, तो ण णस्सामहं मुणी ! ॥61॥

मग्गे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥62॥

कुप्पवयणपासंडी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिया।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥63॥

साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥64॥

महाउदगवेगेण, वुज्झमाणाण पाणिणं।
सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मण्णसि मुणी ! ॥65॥

अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ।
महाउदगवेगस्स, गई तत्थ ण विज्जइ ॥66॥

दीवे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥67॥

जरामरणवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं।
धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥68॥

साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो।
अण्णोऽवि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥69॥

अण्णवंसि महोहंसि, णावा विपरिधावइ।
जंसि गोयममारूढो, कहं पारं गमिस्ससि ? ॥70॥

जा उ अस्साविणी णावा, ण सा पारस्स गामिणी।
जा णिरस्साविणी णावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥71॥

णावा य इइ का वुत्ता, केसी गोयममब्बवी।
केसिमेव बुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥72॥

सरीरमाहु णावत्ति, जीवो वुच्चइ णाविओ।
ससारो अण्णवो वुत्तो, जं तरति महेसिणो ॥73॥

साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे ससओ इमो।
अण्णोऽवि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ! ॥74॥

अधयारे तमे घोरे, चिट्ठंति पाणिणो बहू।
को करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥75॥

उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोयप्पभकरो।
सो करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥76॥

भाणू य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी।
केसिमेव बुवंत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥77॥

उग्गओ खीणससारो, सव्वण्णू जिणभक्खरो।
सो करिस्सइ उज्जोय, सव्वलोयम्मि पाणिण ॥78॥

साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो मे ससओ इमो।
अण्णोऽवि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ! ॥79॥

सारीरमाणसे दुक्खे, बज्झमाणाण पाणिणं।
खेमं सिव अणाबाह, ठाण कि मण्णसि मुणी ? ॥80॥

अत्थि एगं धुव ठाणं, लोगग्गम्मि दुरारुह।
जत्थ णत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥81॥

ठाणे य इइ के वुत्ते, केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥82॥

णिव्वाण-ति अबाहं-ति, सिद्धी लोगग्गमेव य।
खेम सिवं अणाबाह, जं चरंति महेसिणो ॥83॥

तं ठाणं सासयं वासं, लोयग्गम्मि दुरारूहं।
ज संपत्ता ण सोयंति, भवोहंतकरा मुणी ॥84॥

साहु गोयम ! पण्णा ते, छिण्णो, मे ससओ इमो ।
णमो ते संसयातीत, ! सव्वसुत्तमहोयही ॥85॥

एवं तु संसए छिण्णे, केसी घोरपरक्कमे।
अभिवंदिता सिरसा, गोयमं तु महायस ॥86॥

पंचमहव्वयधम्मं, पडिवज्जइ भावओ।
पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥87॥

केसी-गोयमओ णिच्चं, तम्मि आसि समागमे।
सुय-सील-समुक्कसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥88॥

तोसिया परिसा सव्वा, सम्मग्गं समुवट्ठिया।
संथुया ते पसीयंतु, भयवं केसिगोयमे ॥89॥

त्ति बेमि ॥

॥ केसिगोयमिज्ज णाम तेवीसइम अज्झयण समत्त ॥

卐 श्री नन्दी सूत्रम् 卐

जयइ जग-जीव-जोणी-वियाणओ, जगगुरू जगाणदो।
जगणाहो जगबधू, जयइ जगप्पियामहो भयव ॥1॥
जयइ सुयाण पभवो, तित्थयराण अपच्छिमो जयइ।
जयइ गुरू लोगाण, जयइ महप्पा महावीरो ॥2॥
भद्दं सव्व-जगुज्जोयगरस, भद्द जिणस्स वीरस्स।
भद्द सुरासुरणमसियरस, भद्द धुयरयरस ॥3॥
गुण-भवण-गहण सुय-रयण-भरिय दसण विसुद्धरत्थागा।
सघ-णगर ! भद्दं ते, अखड चारित्तपागारा ॥4॥
सजम-तव-तुबारयरस, णमो सम्मत्त-पारियल्लस्स।
अप्पडिचक्करस जओ, होउ सया संघचक्कस्स ॥5॥
भद्द सील-पडागूसियस्स, तव-णियम-तुर-जुत्तरस।
सघरहस्स भगवओ, सज्झायसुणदिघोसस्स ॥6॥
कम्मरय-जलोह-विणिग्गयरस, सुयरयण-दीहणालस्स।
पच-महव्वय-थिरकण्णियरस, गुणेकेसरालस्स ॥7॥
सावग-जण-महुयरी-परिवुडस्स, जिण-सूर-तेय-बुद्धस्स।
सघपउमस्स भद्दं, समण-गण-सहस्स-पत्तस्स ॥8॥
तव-सजम-मयलछण, अकिरिय-राहुमुह-दुद्धरिस णिच्च।
जय सघ-चद ! णिम्मल-सम्मत्त-विसुद्ध-जोण्हागा ॥9॥
पर-तित्थिय-गह-पह-णासगरस, तवतेय-दित्त-लेसरस।
णाणु-ज्जोयरस जए, भद्द दम-सघ-सूरस्स ॥10॥
भद्दं धिइ-वेला-परिगयस्स, सज्झाय-जोग-मगररस।
अक्खोहस्स भगवओ, सघ-समुद्दरस रुदस्स ॥11॥

सम्म-दंसण -वर-वइर-दढ-रूढ-गाढावगाढ-पेढस्स।
धम्मवर-रयण-मंडिय, चामीयर-मेहलागस्स ॥12॥
णिय-मूसिय-कणय-सिलाय-लुज्जल-जलंत-चित्तकूडस्स।
णंदण-वण-मणहर सुरभि-सील-गंधुद्धुमायस्स ॥13॥
जीवदया-सुंदर-कंद-रुद्दरिय-मुणिवर-मइंद-इण्णस्स।
हेउ-सय-धाउ-पगलंत, रयणदित्तोसहि-गुहस्स ॥14॥
संवर-वर-जल-पगलिय-उज्झर-पविराय-माणहारस्स।
सावग-जण-पउर-रवंत-मोर-णच्चंत-कुहरस्स ॥15॥
विणय-णय-पवर-मुणिवर-फुरंत-दिज्जुज्जलंत-सिहरस्स।
विविह-गुण-कप्प-रुक्खग-फलभर-कुसुमाउ-लवणस्स ॥16॥
णाण-वर-रयण-दिप्पंत, कंत-वेरुलिय-विमल-चूलस्स।
वंदामि विणय-पणओ, संघ-महामंदर-गिरिस्स ॥17॥
गुण-रयणुज्जल कडयं, सीलं सुगंधि-तव-मडिउद्देसं।
सुयबारसंगसिहरं, सघ-महामंदरं वंदे ॥18॥
णगर-रह-चक्क-पउमे, चंदे सूरे समुद्द-मेरुम्मि।
जो उवमिज्जइ सययं, तं संघगुणायरं वंदे ॥19॥
वंदे उसभं अजियं, संभवमभिणंदण-सुमइ-सुप्पभ-सुपासं।
ससि-पुप्फदंत-सीयल-सिज्जंसं वासुपुज्जं च ॥20॥
विमल-मणंतं च धम्मं संतिं, कुंथुं अरं च मल्लिं च।
मुनिसुव्वय-णमि णेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥21॥
पढमित्थ इंदभूई, बीए पुण होइ अग्गिभूइत्ति।
तइए य वाउभूई, तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥22॥
मंडियमोरियपुत्ते, अकंपिए चेव अयलभाया य।
मेयज्जे य पहासे य, गणहरा हुंति वीरस्स ॥23॥

णिव्वुइ–पह–सासणय–जयइ सया सव्व–भाव–देसणय।
कु–समय–मय–णासणय, जिणिदवर–वीर–सासणय ॥24॥

सुहम्म अग्गिवेसाणं, जंबूणाम च कासव।
पभव कच्चायण वंदे, वच्छ सिज्जंभव तहा ॥25॥

जसभद्दं तुगिय वंदे, सभूय चेव माढर।
भद्दबाहु च पाइण्ण, थूलभद्द च गोयम ॥26॥

एलावच्चसगोत्त, वदामि महागिरिं सुहत्थि च।
तत्तो कोसियगोत्त, बहुलस्स सरिव्वयं वदे ॥27॥

हारिय गुत्त साइ च, वदिमो हारिय च सामज्झ।
वदे कोसियगोत्त, सडिल्ल अज्जजीयधर ॥28॥

तिसमुद्द–खायकित्ति, दीवसमुद्देसु गहिय–पेयाल।
वदे अज्जसमुद्दं, अक्खुभिय–समुद्द–गभीर ॥29॥

भणग करग झरग, पभावग णाण–दसण–गुणाण।
वदामि अज्जमगु, सुयसागरपारग धीर ॥30॥

वदामि अज्जधम्म, तत्तो वदे य भद्दगुत्त च।
तत्तो य अज्ज़वइर, तवणियमगुणेहि वइरसम ॥31॥

वदामि अज्जरक्खियखमणे, रक्खियचरित्तसव्वस्से।
रयणकरंडगभूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहि ॥32॥

णाणम्मि दसणम्मि य, तवविणए णिच्चकालमुज्जुत्त।
अज्ज णदिलखमण, सिरसा वदे पसण्णमण ॥33॥

वड्ढउ वायगवंसो, जसवसो अज्जणागहत्थीण।
वागरणकरणभगिय, कम्मपयडीपहाणाण ॥34॥

जच्चंजणधाउसमप्पहाण, मुद्दियकुवलयणिहाण।
वड्ढउ वायगवसो, रेवईणक्खत्तणामाण ॥35॥

अयलपुरा णिक्खंते, कालियसुय-आणुओगिए धीरे।
बंभद्दीवगसीहे, वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥36॥
जेसिं इमो अणुओगो, पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि।
बहुणयरणिग्गयजसे, ते वंदे खंदिलायरिए ॥37॥
तत्तो हिमवंतमहंतविक्कमे, धिइपरक्कममणंते।
सज्झायमणंतधरे, हिमवते वंदिमो सिरसा ॥38॥
कालियसुयअणुओगस्स, धारए धारए य पुव्वाण।
हिमवत खमासमणे, वंदे णागज्जुणायरिए ॥39॥
मिउमद्दवसंपण्णे, आणुपुव्विं वायगत्तण पत्ते।
ओहसुयसमायारे, णागज्जुणवायए वंदे ॥40॥
गोविंदाणंपि णमो, अणुओगे विउल धारिणिंदाणं।
णिच्चं खंतिदयाणं, परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥41॥
तत्तो य भूयदिण्णं, णिच्चं तवसंजमे अणिव्विण्ण।
पंडियजणसामण्णं, वदामो संजम विहिण्णू ॥42॥
वरकणगतवियचपगविमउलवर कमलगब्भसरिवण्णे।
भवियजणहिययदइए, दयागुणविसारए, धीरे ॥43॥
अड्ढ भरहप्पहाणे, बहुविहसज्झायसुमुणियपहाणे।
अणुओगियवरवसभे, णाइलकुलवंसणंदीकरे ॥44॥
जग भूयहियप्पगब्भे, वंदेऽहं भूयदिण्णमायरिए।
भवभयवुच्छेयकरे, सीसे णागज्जुणरिसीणं ॥45॥
सुमुणियणिच्चाणिच्चं, सुमुणियसुत्तत्थधारय वदे।
सब्भावुब्भावणया तत्थं, लोहिच्चणामाणं ॥46॥
अत्थमहत्थक्खाणिं, सुसमणवक्खाणकहणणिव्वाणि।
पयईए महुरवाणिं, पयओ पणमामि दूसगणिं ॥47॥

तवणियमसच्चसजमविणयज्जवखति मद्दवरयाण।
सीलगुणगद्दियाण, अणुओगजुगप्पहाणाण ॥48॥
सुकुमालकोमलतले, तेसि पणमामि लक्खणपसत्थे।
पाए पावयणीण, पजिच्छयसयएहि पणिवइए ॥49॥
जे अण्णे भगवते, कालियसुयआणुओगिए धीरे।
ते पणमिऊण। सिरसा, णाणस्स परूवण वोच्छ ॥50॥
सेलधण, कुडग, चालणि, परिपूणग, हस, महिस, मेसे य।
मसग, जलूग, बिराली, जाहग, गो, भेरी, आभीरी ॥51॥

सा समासओ तिविहा पण्णत्ता, तजहा–जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा। जाणिया जहा–

खीरमिव जहा हसा, जे घुट्टति इह गुरुगुण समिद्धा।
दोसे य विवज्जति, त जाणसु जाणिय परिसं ॥52॥

अजाणिया जहा–

जो होइ पगइमहुरा, मियछावयासीहकुक्कुडयभूआ।
रयणमिव असठविया, अजाणिया सा भवे परिसा ॥53॥

दुव्वियड्ढा जहा–

ण य कत्थइ णिम्माओ, ण य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण।
वत्थिव्व वायुपुण्णो, फुट्टइ गामिल्लय वियड्ढो ॥54॥

***

श्री बृहत-शान्ति-स्तोत्र

(सक्षिप्त)

ॐ पुण्याह पुण्याह प्रीयन्ता प्रीयन्ता भगवन्तोऽर्हन्त सर्वज्ञा सर्वदर्शिन त्रिलोकनाथा, त्रिलोक-महिता त्रिलोकपूज्या, त्रिलोकेश्वरा त्रिलोकोद्द्योतकरा।

ॐ ऋषभ-अजित-सम्भव-अभिनन्दन - सुमति - पद्मप्रभ - सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ - सुविधि - शीतल - श्रेयास-वासुपूज्य - विमल - अनन्त - धर्म-शान्ति - कुन्थु - अर - मल्लि - मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्द्धमानान्ता जिना शाता शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय-दुर्भिक्षकान्तोरषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्य स्वाहा।

ॐ ह्री श्री धृति-मति-कीर्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेघा विद्या साधन-प्रवेशन-निवेशनेषु सुगृहीत-नामानो जयन्तु ते जिनेन्द्रा।

ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति-वज्रशृङ्खला-वज्राकुशी-अप्रतिचक्रा-पुरुषदत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गाधारी-सर्वास्त्रा-महाज्वाला मानवी-वैरोट्या-अच्छुप्ता-मानसी-महामानसी-षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्य स्वाहा।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति-चातुर्वर्णस्य श्री श्रमणसघस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु।

ॐ ग्रहाश्चन्द्र-सूर्यागारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनेश्चर-राहु-केतुसहिता सलोक-पाला सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवाऽऽदित्य-स्कद-विनायकोपेता ये चान्येऽपि ग्राम-नगर-

क्षेत्रदेवताऽऽदयस्ते सर्वे प्रीयन्ता प्रीयन्ता अक्षीणकोष-कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा।

ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृत्-स्वजन सम्बन्धि-बन्धुवर्ग-सहिता नित्य चाऽऽमोद-प्रमोदकारिण (भवन्तु स्वाहा) अस्मिश्च भूमण्डालायतननिवासी-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणा रोगोपसर्ग-व्याधि-दु ख-दुर्भिक्ष-दोर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु।

ॐ तुष्टि पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मागल्योत्सवा सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि शत्रव पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नम शान्तिविधायिने।
त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥
शान्ति शान्तिकर श्रीमान् शान्ति दिशतु मे गुरु।
शान्तिरेव सदा तेषा, येषा शान्ति गृहे गृहे॥
उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट ग्रहगति-दु स्वप्न-दुर्निमित्तादि।
सम्पादित-हित-सम्पन्-नामग्रहणे जयति शान्ते॥
श्री सघ-जगज्-जनपद-राजाधिप-राजसन्निवेशानाम्।
गोष्ठिक—पुरमुख्याणा व्याहरणैर् व्याहरेच्छान्तिम्॥

श्री श्रमणसघस्य शान्तिर्भवतु,
श्री पौरजनस्य शान्तिर्भवतु,
श्री जन-पदाना शान्तिर्भवतु,
श्री राजाधिपाना शान्तिर्भवतु,
श्री राजसन्निवेशाना शान्तिर्भवतु,
श्री गोष्ठिकाना शान्तिर्भवतु,
श्री पौरमुख्याणा शान्तिर्भवतु,
श्री ब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु,
ॐ स्वाहा । ॐ स्वाहा ॥
ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥

श्री वज्रपंजर स्तोत्र

परमेष्ठि नमस्कार, सार नवपदात्मकम्।
आत्मरक्षाकर वज्र-पञ्जराभ स्मराम्यहम्॥1॥
ॐ णमो अरिहताण, शिरस्कं शिरसि स्थितम्।
ॐ णमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुखपट वरम्॥2॥
ॐ णमो आयरियाण अंगरक्षाऽतिशायिनी।
ॐ णमो उवज्झायाणं आयुध हस्तयोर्दृढम्॥3॥
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयो· शुभे।
एसो पच नमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले॥4॥
सव्वपाव-प्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहि।
मगलाण च सव्वेसिं, खादिराङ्गार खातिका॥5॥
स्वाहान्तं च पदे ज्ञेयं, पढम हवइ मगल।
वप्रोपरि वज्रमय, पिधान देहरक्षणे॥6॥
महा प्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव-नाशिनी।
परमेष्ठि पदोद्भूता, कथिता पूर्व-सूरिभि॥7॥
यश्चैवं कुरुते रक्षा, परमेष्ठि-पदै· सदा।
तस्य न स्याद् भय व्याधिराधिश्चापि कदाचन्॥8॥

***

पेंसठिया छन्द

श्री नेमीश्वर सभव स्वाम, सुविधि धर्म शान्ति अभिराम।
अनन्त सुव्रत नमिनाथ सुजान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।1।
अजितनाथ चन्दाप्रभु धीर, आदीश्वर सुपार्श्व गभीर।
विमलनाथ विमल जग जाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।2।
मल्लिनाथ जिन मगल रूप, पचवीस धनुष सुन्दर स्वरूप।
श्री अरनाथ नमू वर्धमान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।3।
सुमति पद्म -प्रभु अवतस, वासु पूज्य शीतल श्रेयस।
कुथु पार्श्व अभिनन्दन भाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।4।
इणपरे जिनवर सभारिए, दु ख दारिद्रय विघ्न निवारिए।
पचीसे पैंसठ परमाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।5।
इण भणता दु ख न आवे कदा, जो निज पासे राखो सदा।
धरिये पचतणु मन ध्यान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।6।
श्री जिनवर नामे सकट टले, मन-वाछित सहु आशा फले।
'धर्मसिह' मुनि नाम निधान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।7।

22	3	9	15	16
14	20	21	2	8
1	7	13	19	25
18	24	5	6	12
10	11	17	23	4

विधि–उपरोक्त छन्द का रविपुष्य के दिन 108 बार जप कर सिद्ध करके प्रतिदिन एक बार पाठ करे। इससे ग्रहशाति, विघ्नहरण, सपत्ति लाभ, प्रतिष्ठा प्राप्ति, पुत्र वाछा, गर्भरक्षणादि सर्व मनोरथ पूर्ण होते है।

卐 भक्तामर स्तोत्रम् 卐

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्द्योतकं दलितपापतमोवितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥1॥

य संस्तुत सकलवाङ्.मय तत्त्व बोधा-
दुद्भूतबुद्धि पटुभि· सुरलोकनाथै ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारै ।
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥2॥

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ !
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम्।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः कः इच्छति जन सहसा ग्रहीतुम् ॥3॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षम· सुरगुरु· प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥4॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तु स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्त· ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥5॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिल· किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्रचारूकलिकानिकरैकहेतु ॥6॥

त्वत्सस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्ध,
पाप क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥7॥

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दु ॥8॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं ।
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्त्रकिरण. कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥9॥

नात्यद्भुत भुवनभूषणभूत नाथ !,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्त ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन कि वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसम करोति ॥10॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्रतोषमुपयाति जनस्य चक्षु ।
पीत्वा पय शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धो ,
क्षार जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥11॥

यै शान्तरागरुचिभि परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ! ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणव पृथिव्या,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥12॥

वक्त्र क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
नि शेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं।
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥13॥

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप !
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥14॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिर्-
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥15॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूर
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाश· ॥16॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्य ,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदरनिरुद्ध महाप्रभाव ,
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ' लोके ॥17॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं, ।
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥18॥

कि शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेदुदलितेषु तमस्सु नाथ !
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्य कियज्जलधरैर्जलभारनम्रै ॥19॥

ज्ञान यथा त्वयि विभाति कृतावकाश,
नैव तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेज स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्व,
नैव तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥20॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा ,
दृष्टेषु येषुहृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्य ,
कश्चिन्मनोहरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥21॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुत त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वादिशोदधतिभानिसहस्त्ररश्मिं,
प्राच्येवदिग्जनयति–स्फुरदशुजालम् ॥22॥

त्वामामनन्ति मुनय परम पुमांस–
मादित्यवर्णममल तमस परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्यु,
नान्य शिव शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्था ॥23॥

त्वामव्यय विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनगकेतुम्।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरुपममलं प्रवदन्ति सन्त ॥24॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
त्व शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात् ।
धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥25॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥26॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैर-
त्वंसंश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वै ,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥27॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रुपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥28॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपु॰ कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितान,
तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्त्ररश्मे॰ ॥29॥

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपु कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छ्शाङ्क-शुचिनिर्झर-वारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥30॥

छत्रत्रय तव विभाति शशाङ्ककान्त-
मुच्चै स्थित स्थगितभानुकरप्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकरजाल-विवृद्धशोभं-
प्रख्यापयत्त्रिजगत परमेश्वरत्वम् ॥31॥

गम्भीर-तार-रवपूरित-दिग्विभागस-
त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्ष
सद्धर्मराजजयघोषणघोषक सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशस प्रवादी ॥32॥

मन्दारसुन्दरनमेरूसुपारिजात-
सतानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता,
दिव्या दिव पतति ते वचसा ततिर्वा ॥33॥

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रय-द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्-दिवाकर-निरन्तरभूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ॥34॥

स्वर्गापवर्गगममार्ग-विमार्गणेष्ट-
सद्धर्मतत्त्वकथनैक-पटुस्त्रिलोक्या।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व-
भाषास्वभाव-परिणामगुणै प्रयोज्य ॥35॥

उन्निद्रहेम-नवपङ्कज-पुञ्जकान्ति,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाऽभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्त ,
पद्मानि तत्र विबुधा परिकल्पयन्ति ॥36॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥37॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥38॥

भिन्नेभकुम्भगलदुज्जवलशोणिताक्त-
मुक्ताफलप्रकरभूषित भूमिभाग ।
बद्धक्रम· क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥39॥

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं।
दावानलं ज्वलितमुज्जवलमुत्स्फुलिंगम्
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥40॥

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क-
त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥41॥

वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥42॥

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह-
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जय विजित दुर्जयजेयपक्षार-
त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥43॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रगत्तरगशिखरस्थितयानपात्रार-
त्रास विहाय भवत स्मरणाद्व्रजन्ति ॥44॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्ना ,
शोच्या दशामुपगताश्च्युतजीविताशा ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपा. ॥45॥

आपादकठमुरु शृंखलवेष्टितांगा ,
गाढ बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजधा ।
त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजा स्मरन्त ,
सद्य स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥46॥

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-
सग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावक स्तवमिमं मतिमानधीते ॥47॥

स्तोत्रस्त्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्त्रं,
तं मानतुगमवशा समुपैति लक्ष्मी. ॥48॥ ॥ इति ॥

॥ भक्तामर स्तोत्र समाप्त ॥

卐 कल्याणमन्दिरस्त्रोतम् 卐

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्य-भेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमंघ्रि-पद्मम्।
संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु-
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥1॥

यस्य स्वयं सुरगुरु र्गरिमाम्बुराशे ,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतोस्-
तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥2॥

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवंत्यधीशा.।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मे ? ॥3॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधेर्ननुरत्नराशि. ? ॥4॥

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तु स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ?।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य।
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशे. ? ॥5॥

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश,
वक्तु कथं भवति तेषु ममावकाश. ?।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥6॥

आस्ताम्चिन्त्यमहिमा जिन ! सस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरस सरसोऽनिलोऽपि ॥7॥

हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
जतो क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धा ।
सद्यो भुजङ्गमया इव मध्यभाग-
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥8॥

मुच्यत एव मनुजा सहसा जिनेन्द्र,
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।
गोस्वामिनी स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे,
चोरैरिवाशु पशव प्रपलायमानै ॥9॥

त्व तारको जिन ! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्त ।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-
मन्तर्गतस्य मरुत स किलानुभाव ॥10॥

यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावा ,
सोऽपि त्वया रतिपति क्षपित क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुज पयसाथ येन,
पीत न कि तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥11॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्नास्-
त्वा जन्तव. कथमहो हृदये दधाना ?
जन्मोदधि लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभाव ॥12॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वत कथं किल कर्मचौरा ?

प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥13॥

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे !
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥14॥

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविन. क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदा ॥15॥

अन्त सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यै. कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि,
यद्विग्रह प्रशमयन्ति महानुभावा ॥16॥

आत्मा मनीषिभिरय त्वदभेदबुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभाव ।
पानीयमप्यमृतमित्यमनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥17॥

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्ना ।
किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शंखो,
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥18॥

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोक ।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोक ॥19॥

चित्र विभो ! कथ मवाङ् मुखवृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टि ?
त्वद्गोचरे सुमनसा यदि वा मुनीश !
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥20॥

रथाने गभीरहृदयोदधिसभवाया ,
पीयूषता तव गिर समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यत परमसमदसगभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥21॥

स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचय सुरचामरौघा ।
येऽस्मै नति विदधते मुनिपुंगवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतय खलु शुद्धभावा ॥22॥

श्याम गभीर-गिरमुज्ज्वलहेमरत्न-
सिहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैश्-
चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥23॥

उद्गच्छता तव शितिद्युति मडलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव !
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !,
नीरागता व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥24॥

भो भो ! प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृतिपुरी प्रति सार्थवाहम् ।
एतन् निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभ सुरदुन्दुभिस्ते ॥25॥

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !,
तारान्वितो विधुरय विहताधिकार ।

मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र-
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेत ॥26॥

स्वेन प्रपूरित-जगत्त्रय-पिण्डितेन,
कान्ति-प्रतापयश-सामिव सञ्चयेन।
माणिक्य-हेम-रजतप्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥27॥

दिव्यस्त्रजो जिन ! नमस्त्रि दशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥28॥

त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान्।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्य ॥29॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं,
किं वाक्षर-प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश !।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतु. ॥30॥

प्राग्भार-संभृत-नभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥31॥

यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं,
भ्रश्यत्तडिन्मु सलमांसलघोरधारम्।
दैत्यैन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥32॥

ध्वस्तो–र्ध्वकेश–विकृताकृतिमर्त्यमुण्ड–
प्रालम्बभृद्भयद–वक्त्रविनिर्यदग्नि ।
प्रेतव्रज प्रतिभवन्तमपीरितो य ,
सोऽस्याऽभवत्प्रतिभव भवदु खहेतु ॥33॥

धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य–
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्या ।
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशा !
पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाज ॥34॥

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !,
मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
कि वा विपद्विषधरी सविधं समेति ? ॥35॥

जन्मांतरेऽपि तव पादयुगं न देव !,
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥36॥

नून न मोहतिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्था ,
प्रोद्यत्प्रबन्धगतय कथमन्यथैते ? ॥37॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दु खपात्र,
यस्मात्क्रिया प्रतिफलन्ति न भावशून्या ॥38॥

त्व नाथ ! दु खिजनवत्सल ! हे शरण्य !,
कारुण्यपुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य ! ।

भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय,
दुःखांकुरोद्दलन–तत्परतां विधेहि ॥39॥

निःसङ्ख्यसारशरणं शरणं शरण्य–
मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
वध्योऽस्मिचेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥40॥

देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !,
संसार तारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ।
त्रायस्व देव ! करुणाहृद ! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भवदव्यसनाम्बुराशेः ॥41॥

यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्ततसञ्चितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥42॥

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र,
सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकितांगभागाः ।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो ! रचयंति भव्याः ॥43॥

जननयनकुमुदचन्द्र–प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥44॥

***

卐 चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्रम् 卐

कि कर्पूरमय सुधारसमयं किं चन्द्ररोचिर्मयं।
कि लावण्यमय महामणिमयं, कारुण्यकेलिमयम्॥
विश्वानन्दमय महोदयमय शोभामयं चिन्मय।
शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनपतेर्भूयाद्भवालम्बनम्॥1॥

पाताल कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन्।
दिक्चक्र क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणिं च विस्मापयन्॥
ब्रह्माण्ड सुखयन् जलानि जलधे. फेनच्छललोलयन्।
श्री चिन्तामणिपार्श्वसंभवयशो हसश्चिरं राजते॥2॥

पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणि· कामेभकुम्भे सृणि.-
मोक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिः प्रकाशारणिः॥
दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणि कृपासारिणीः।
विश्वानन्द सुधाघृणिर्भवभिदे श्री पार्श्वचिन्तामणिः॥3॥

श्री चिन्तामणिपार्श्वविश्वनतासञ्जीवनस्त्वं मया।
दृष्टस्तात! तत श्रिय समभवन्नाशक्रमाचक्रिणम्।
मुक्ति· क्रीडति हस्तयोर्बहुविध सिद्ध मनोवाञ्छितं।
दुर्दैव दुरितं च दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्ट मम॥4॥

यस्य प्रौढतमप्रतापतपन· प्रोद्दामधामा जग-
ज्जघाल. कलिकालकेलिदलनो मोहान्धविध्वसक·॥
नित्योद्योतपद समस्तकमलाकेलिगृहं राजते।
स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकरश्चिन्तामणि. पातु माम्॥5॥

विश्वव्यापि तमोहिनस्ति तरणिर्बालोपि कल्पांकुरो।
दारिद्रयाणि गजावलीं हरिशिशु. काष्ठानि वह्नेः कण·।
पीयूषस्य लवोऽपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विभो।
मूर्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्त्तु क्षमा॥6॥

श्री चिन्तामणिमन्त्रमोंकृतियुतं ह्रीं कारसाराश्रितं।
श्रीमर्हन्नमिऊणपासकलितं त्रैलोक्यवश्यावहम्॥
द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयः प्रभावाश्रयं।
सोल्लासं वसहाङ्कित जिनफुल्लिंगानन्ददं देहिनाम्॥7॥

ह्रीं श्री कारवरं नमोऽक्षर परं ध्यायन्ति ये योगिनो-
हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिपं चिन्तामणिंसंज्ञकम्।
भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्भूयो भुजे दक्षिणे।
पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यान्त्यहो॥8॥

स्त्रग्धरा-

नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारिप्रचारा-
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो॥
नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरिगणा व्यालवेतालजाला-
जायन्ते पार्श्वचिंतामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम्॥9॥

शार्दुलः-

गीर्वाणद्रुमधेनुकुम्भमणयस्तस्यांगणे रंगिणो-
देवा दानवमानवः सविनयं तस्मै हितध्यायिनः।
लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिन्नां ब्रह्माण्डसंस्थायिनी।
श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथमनिशं संस्तौति यो ध्यायति॥10॥

मालिनी-

इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वाख्ययक्षः,
प्रदलितदुरतौघः प्रीणितप्राणिसार्थः।
त्रिभुवनजनवाञ्छादानचिन्तामणीकः।
शिवपदतरुबीजं बोधिबीजं ददातु॥11॥

***

卐 महावीराष्टक-स्तोत्र 卐

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावा-श्चिदचित ,
सम भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्त रहिता ।
जगत् साक्षी मार्ग प्रकटन परो भानुरिव यो,
महावीर स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥1॥

अताम्र यच्चक्षु कमल-युगलं स्पन्द रहितं,
जनान् कोपापायं प्रकट यति वाऽभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमित मयी वाति विमला,
महावीर स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥2॥

नमन्ना केन्द्राली-मुकुट-मणिभा-जाल-जटिलं,
लसत् पादाम्भोज द्वयमिह यदीय तनु-भृताम्।
भव ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जल वा स्मृत मपि,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥3॥

यदर्चा-भावेन प्रमुदित मना दुर्दुर इह,
क्षणा दासीत स्वर्गी गुण-गण-समृद्ध सुख निधि ।
लभन्ते सद् भक्ता शिव-सुख समाज किमु तदा ?
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥4॥

कनत् स्वर्णा भासोऽप्यपगत तनुर् ज्ञान निवहो,
विचित्रात्मा ऽप्येको नृपति वर-सिद्धार्थ-तनय ।
अजन्माऽपि श्रीमान् विगत भव रागोऽद्भुत गतिर्,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥5 ॥

यदीया वाग्-गगा विविध-नय-कल्लोल-विमला,
बृहत् ज्ञानाम्भो भिर् जगति जनतां या स्नपयति।
इदानी-मप्येष्या बुधजन-मरालै परिचिता,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु में ॥6 ॥

अनि-र्वारोद्रेकस् त्रिभुवनजयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थाया मपि निज बला द्येन विजितः।
स्फुरन् नित्यानन्द-प्रशम पद राज्याय स जिनः,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥7 ॥

महा मोहातंक-प्रशमन पराऽऽकस्मिक्-भिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर् विदित महिमा मंगलकरः।
शरण्य साधूनां भव भय भृता मुत्तम गुणो,
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥8॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या भागेन्दुना कृतम्।
य पठेच्छ्रृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम् ॥9॥



卐 पूज्य श्री हुक्म्यष्टकम् 卐

छन्द–त्रोटक

गृह मोह ममत्व विनाशकरं,
शुभ सयम भाव रत विरतम्।
सुसमाधि युतं गणि कीर्ति धरं,
प्रणमामि, महामुनि हुक्मि गुरुम् ॥1॥

प्रशमादि विकास गुणै कलित,
मुपदेश सुधा वलित मुदितम्।
महिते निज कार्ये पथे निरतं,
प्रणमामि, महामुनि हुक्मि गुरुम् ॥2॥

भव पातक मान रुजा रहितं,
सुख दायक भाव युतं सततम्।
भव भीति हरं शिव सत्यवरं,
प्रणमामि महामुनि हुक्मि गुरुम् ॥3॥

तपसा सहित विदुषा मजितं,
शशि पूर्ण सुशोभित दिव्य मुखम्।
रवि तुल्य विभासित दीप्ति धरं,
प्रणमामि, महामुनि हुक्मि गुरुम् ॥4॥

मनसा, वचसा, वपुषा विमलं,
करुणा धिषणा गरिमादि युतम्।
सुनयै सुगुणै सुकृतै रनघ,
प्रणमामि, महामुनि हुक्मि गुरुम् ॥5॥

नगरे नगरे सुख शान्तिकर,
बहु शिष्य जनै विनयाभि नुतम्।
निज कर्म विदार करं विशदं,
प्रणमामि, महामुनि हुक्मि गुरुम् ॥6॥

शराणागत धारक रक्ष परं,
जगति प्रथितं सुयशो भरितम् ।
जन सकट नाशक भक्तिरतं,
प्रणमामि, महामुनि हुक्मि गुरुम् ॥7 ॥

भव सागर पंक निमग्न नृणां,
जिन भाषित बोध सुखं प्रददौ,
तमहं गुणसागर बुद्धि निधि,
प्रणमामि, महामुनि हुक्मि गुरुम् ॥8 ॥

गुरु हुक्म्यष्टकं स्तोत्रम्,
मुनि ज्ञानेन निर्मितम् ।
पठन्ति ये नरा भक्त्या,
सिद्धि सौधं व्रजन्ति ते ॥9॥

***

卐 श्री नानेशाष्टकं स्तोत्रम् 卐

(बसन्त तिलका छद)

मिथ्यात्व मोह दलने सततं समर्थ-
मज्ञान भाव हत साधक साध्यपूर्णम्।
प्रारभार-कर्म घनशत्रु विनाशि-रूप,
नानेश-देव हृदये सततं स्मरामः ॥1॥

वैषम्य रूप भव-भीति निवारकं च।
देव-प्रकोप-तिमिरादिक मुक्ति दीप॥
दुभार्गय-चीर हरणे द्युति-धार-कुन्तं,
नानेशदेव हृदये सततं स्मरामः ॥2॥

सद्ध्यान नूतन समीक्षण दत्तचित्त,
मैत्री प्रमोद करुणा धृति चन्दनं च।
कन्दर्प सर्प परिनाशन सायकं च।
नानेशदेव हृदये सततं स्मरामः ॥3॥

मोह-क्षपादि हरणे-जिन भव्य भानु,
हुक्मेश गच्छ परिवर्धन कारि दृष्टम्।
संचालक-श्रमण-सघ-विशिष्ट-रूप,
नानेशदेव हृदये सततं स्मरामः ॥4॥

त्वत्सस्तवेन भव-पातक पान नष्ट,
त्वच्चिन्तनेन हत-पाप-मनर्थभूतम्।
त्वत्कीर्तनेन शिव-सौम्य समृद्धि-वृद्धि,
नानेशदेव हृदये सततं स्मरामः ॥5॥

नानेश-नाम-मन वांछित दायकोस्ति,
नानेश नाम रिपुभाव विदारकोस्ति।
नानेश नाम निज विघ्न विनायकोस्ति,
नानेश-नाम-ग्रहमण्डल-रक्षकोस्ति ॥6॥

नानेश जाप सुख शान्ति निधायकोस्ति,
नानेश जाप जग दोष निवारकोस्ति।
नानेश जाप शुभ-भाव-दिवाकरोस्ति,
नानेश जाप फल सिद्धिं विधायकोस्ति ॥7॥

तुभ्यं नमः सकल संघ-शुभासकाय,
तुभ्यं नमः सकल शास्त्र-सुधारकाय।
तुभ्यं नमः सकल शिष्य-सुतारकाय।
तुभ्यं नमः सकल साध्य-सुसाधकाय ॥8॥

***

卐 अष्टाचार्य प्रशस्तय: 卐

सम्यक्ज्ञान समायुक्तं, क्रियासौरभसारकम् ।
आद्याचार्य गुरुं हुक्मिं, सादरं प्रणमाम्यहम् ।। 1।।

विशिष्टलक्षणैर्युक्तं, त्यागवैराग्यधारकम् ।
दीप्तभानु शिवाचार्य, सादर प्रणमाम्यहम् ।।2।।

निरासक्तमहायोग, शुभ्रसयमसाधकम् ।
निष्कलंकोदयाचार्य, सादरं प्रणमाम्यहम् ।।3।।

ज्ञानचारित्रसम्पन्नं, ध्यानमौनसमाश्रितम् ।
चौथाचार्यमुदारस्व, सादरं प्रणमाम्यहम् ।।4।।

दुर्जयकामजेतारं, जिनादेशप्रपालकम् ।
श्रीश्रीलालगणाचार्य, सादर प्रणमाम्यहम् ।।5।।

स्पष्ट निर्भीकवक्तारं, शास्त्रमर्मविधायकम् ।
जवाहरं गणिश्रेष्ठं, सादरं प्रणमाम्यहम् ।।6।।

शान्तक्रान्तिविधातारं, साधुसंस्कृतिरक्षकम् ।
गर्गाचार्यगणेश त, सादरं प्रणमाम्यहम् ।।7।।

समीक्षणप्रणेतारं, दातारं समदर्शिनम् ।
श्रीनानेशाष्टमाचार्य, सादर प्रणमाम्यहम् ।।8।।

**

प्रत्याख्यान

मूल-पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेणं आसव दाराइं निरूंभइ, पच्चक्खाणेणं इंच्छानिरोहं जणयइ, इच्छा निरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीय तण्हे सीइभूए विहरई। —उत्तरा. अध्ययन. २६

अर्थ— भगवन्! प्रत्याख्यान करने से आत्मा को किस फल की प्राप्ति होती है। प्रत्याख्यान करने से हिसादि आश्रव द्वार वन्द हो जाते है और इच्छा का निरोध हो जाता है। इच्छा का निरोध होने से समस्त विषयो के प्रति वितृष्ण होकर साधक शान्त चित्त रहकर विचरण करता है।

दश-प्रत्याख्यान

१. नमस्कार सहित सूत्र (नौकारसी)

मूल : उग्गए सूरे नमोक्कर-सहियं पच्चक्खामि।
चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं।
अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरामि।

अर्थ : सूर्य उदय होने पर, (सूर्योदय के ४८ मिनट पश्चात् तक) नमस्कार सहित प्रत्याख्यान ग्रहण करता हू। अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य—चारो प्रकार के आहारो का त्याग करता हू।

अनाभोग और सहसाकार—उक्त दो आगारो (अपवाद) के सिवा चारो आहारो का त्याग करता हू।

२. पौरुषी-सूत्र (पोरसी)

मूल : उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि। चउव्विहंपि आहारं, असणं पाणं खाइमं साइमं।

अन्नत्थणा, भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसा मोहेणं, साहुवयणेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

अर्थ- पौरुषी का प्रत्याख्यान करता हू। सूर्योदय से लेकर पहर दिन

चढे तक अशन पान खाद्य और स्वाद्य–चारो प्रकार के आहारो का त्याग करता हू।

अनाभोग, सहसाकार, प्रच्छन्नकाल, दिशा मोह, साधु वचन, सर्व समाधि प्रत्याकार उक्त छह आगारो के सिवा चारो आहारो का त्याग करता हू।

३. पूर्वार्ध सूत्र (दो पोरसी)

मूल उग्गए सूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि। चउव्विह पि आहार असणं पाण खाइम साइम्।

अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसागारेण, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेण, साहूवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेण वोसिरामि।

अर्थ सूर्योदय से लेकर दिन के पूर्वार्ध तक (दो पहर तक) चारो आहारो–अशन, पान, खाद्य, और स्वाद्य का त्याग करता हू।

अनाभोग, सहसाकार, प्रच्छन्नकाल, दिशा मोह, साधु वचन, महत्तराकार और सर्व समाधि प्रत्ययाकार–उक्त सात आगारो के सिवा चारो आहारो का त्याग करता हू।

४. एकाशन सूत्र

मूल : एगासण पच्चक्खामि। तिविहं पि (चउव्विहंपि) आहारं असणं (पाण) खाइम साइमं।

अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेणं, सागारियागारेणं आउटणा-पसारणेणं, गुरु अब्भुट्ठाणेण, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेण वोसिरामि।

नोट : एकाशन तिविहार करना हो तो कोष्टक के शब्द का उच्चारण नही करे। चौविहार करना हो तो तिविह शब्द नहीं बोले।

अर्थ-एकाशन का प्रत्याख्यान करता हू। अशन (पान), खाद्य और स्वाद्य इन तीनो (चौविहार करना हो तो चारो) आहारो का त्याग करता हू।

अनाभोग, सहसाकार, सागारिकाकार, आकुचन–प्रसारण, गुरु अभ्युत्थान, पारिष्ठापनिकाकार, महत्तराकार, सर्व समाधि प्रत्ययाकार उक्त आठ आगारो के सिवा तीनो (चारो) आहारो का त्याग करता हू।

५. एकलस्थान सूत्र (एकलठाणा)

मूलः एक्कासणं एगट्ठाणं पच्चक्खामि। तिविहं पि चउव्विहंपि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं। अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, गुरु अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठवणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

अर्थ : एकाशन रूप एक स्थान का प्रत्याख्यान करता हू। अशन (पान), खाद्य और स्वाद्य–तीनो (चारो) आहार का त्याग करता हू।

अनाभोग, सहसाकार, सागारिकाकार, गुरु अभ्युत्थान, पारिष्ठापनिकाकार, महत्तराकार व सर्व समाधि प्रत्ययाकार उक्त सात आगारो के सिवा चारो आहारो का त्याग करता हू।

६. आचाम्ल सूत्र (आयंबिल)

मूल : आयंबिलं पच्चक्खामि। अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं उक्खित्तविवेगेणं, गिहि संसट्ठेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

अर्थ : आयबिल तप का प्रत्याख्यान करता हू। अनाभोग, सहसाकार, लेपालेप, उत्क्षिप्तविवेक, गृहस्थ–ससृष्ट, पारिष्ठापनिकाकार, महत्तराकार, सर्व–समाधि–प्रत्ययाकार–उक्त आठ आगारो के सिवा आहार का त्याग करता हू।

७. उपवास-सूत्र

मूल : उग्गए सूए अभत्तट्ठं ? पच्चक्खामि। (चउव्विहंपि) तिविहंपि, आहारं असणं (पाणं) खाइमं साइमं।

अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणिया गारेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहि वत्तियागारेणं वोसिरामि।

नोट १ जितनी तपस्या करनी हो तो उससे दुगुना करके दो और जोड देना चाहिए। जैसे बेला मे छट्ठे, तेला मे अट्ठम, चौला मे दसम, पचौला मे दुवालसम इत्यादि

२ तिविहार करना हो तो 'चउव्विहपि' की जगह 'तिविहपि' बोले व 'पाण' नही बोले।

अर्थ सूर्योदय से उपवास के पच्चक्खाण करता हू। अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य—चारो आहारो का त्याग करता हू।

अनाभोग, सहसाकार, पारिष्ठापनिकाकार, महत्तराकार व सर्व—समाधि प्रत्याकार—उक्त पाच आगारो के सिवा चारो आहारो का त्याग करता हू।

८ दिवस चरिम सूत्र

मूल दिवस चरिम पच्चक्खामि। चउव्विहपि आहारं असणं पाणं खाइम साइम।

अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहि वत्तियागारेण वोसिरामि।

अर्थ दिवस चरम का प्रत्याख्यान करता हू। अशन, पान, खाद्य ओर स्वाद्य— चारो आहारो का त्याग करता हू। अनाभोग, सहसाकार, महत्तराकार, सर्व समाधि प्रत्याकार— उक्त चार आगारो के सिवा चारो आहारो का त्याग करता हू।

९. अभिग्रह सूत्र

मूल अभिग्गहं पच्चक्खामि। चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाण, खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरामि।

अर्थ अभिग्रह का प्रत्याख्यान करता हू। चारो आहार अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य का त्याग करता हू।

अनाभोग, सहसाकार, महत्तराकार, सर्व समाधि प्रत्ययाकार उक्त चार आगारो के सिवा चारो आहारो का त्याग करता हू।

१०. निर्विकृतिक नीवीं

मूल : विगईओ पच्चक्खामि। अन्नत्थाभोगेणं सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थ संसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खि एणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेण वोसिरामि।

अर्थ : विकृतियो (विगयो) का त्याग करता हू। अनाभोग, सहसाकार, लेपालेप, गृहस्थ ससृष्ट, उत्क्षिप्त विवेक, प्रतीत्यम्रक्षित, पारिष्ठापनिक, महत्तराकार, सर्व समाधि प्रत्ययाकार उक्त नव आगारो के सिवा (विगय) का त्याग करता हू।

***

प्रत्याख्यान पारणा सूत्र

मूल **उग्गए सूरे नमोक्कार-सहिय पच्चक्खाण कयं त पच्चक्खाण सम्मं काएण फासिय, पालियं, तीरियं, किट्टिय, आराहिय। जं च न आराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कड।**

नोट १ जो प्रत्याख्यान पारना हो उसका उच्चारण कर जैसे एकाशन किया हो तो "नमोक्कार सहिय" की जगह "एगासण" का उच्चारण करे।

अर्थ सूर्योदय होने पर जो नमस्कार सहित प्रत्याख्यान किया था, वह प्रत्याख्यान शरीर (मन एव वचन) के द्वार सम्यग् रूप से स्पृष्ट, पालित, शोधित, तीरित, कीर्तित व आराधित किया व जो सम्यग् रूप से आराधित न किया हो तो उसका दुष्कृत मेरे लिए मिथ्या हो।

विशेष प्रत्याख्यान पालने के छह अग बतलाए। अत ग्रहण किये हुए प्रत्याख्यान की आराधना छहो अगो से करनी चाहिये। वे छह निम्नोक्त है–

१ **फासिय**–स्पर्शित–गुरुदेव से या स्वय विधिपूर्वक प्रत्याख्यान लेना।

२ **पालिय**–पालित–प्रत्याख्यान को बार–बार उपयोग मे लाकर सावधानी के साथ उसकी सतत् रक्षा करना।

३ **सोहियं**–शोधित–कोई दूषण लग जाय, तो सहसा उसकी शुद्धि करना।

४ **तीरिय**–तीरित–गृहीत प्रत्याख्यान का काल पूरा हो जाने पर भी कुछ समय ठहर कर भोजन करना।

५ **किट्टियं**–कीर्तित–भोजन प्रारम्भ करने से पहले लिए प्रत्याख्यान को विचार कर उत्कीर्तन पूर्वक कहना कि मैने अमुक प्रत्याख्यान अमुक रूप से ग्रहण किया, व भली–भाति पूरा हो गया है।

६. **आराहियं**– आराधित–सब दोषो से सर्वथा दूर रहते हुए ऊपर कही हुई विधि के अनुसार प्रत्याख्यान की आराधना करना।

परिशिष्ट–१

प्रत्याख्यान सूत्रों में प्रयुक्त आगारों का अर्थ-

१. अन्नत्थणाभोगेणं-अनाभोग-अत्यन्त विस्मृति/प्रत्याख्यान लेने की बात सर्वथा भूल जाय और उस समय असावधानतावश कुछ खा–पी लिया जाय।

२. सहसागारेणं-सहसाकार–मेघ बरसने पर, अथवा दही आदि मथते समय अचानक ही जल या छाछ आदि का छींटा मुह मे चला जाय।

३. पच्छन्नकालेणं-प्रच्छन्नकाल-बादल अथवा आधी आदि के कारण सूर्य ढक जाने से पौरुषी पूर्ण हो जाने की भ्रान्ति हो जाना। उपलक्षण से घडी के आगे–पीछे होने का भी समझना चाहिए।

४. दिसामोहेणं-दिशामोह–पूर्व को पश्चिम समझकर पोरुषी न आने पर भी सूर्य के ऊचा चढ आने की भ्रान्ति से आहार ग्रहण कर लेना।

५. साहुवयणेणं-साधु-वचन–'पोरुषी आ गई' इस प्रकार किसी आप्तपुरुष–साधु–साध्वी के कहने पर बिना पौरुषी आए ही पोरुषी पार लेना।

६. सव्वसमाहि वत्तियागारेणं-सर्व समाधि प्रत्ययाकार–आकस्मिक शूल आदि तीव्र रोग की उपशान्ति के लिए औषधि आदि ग्रहण कर लेना।

७. महत्तरागारेणं-महत्तराकार–विशेष निर्जरा आदि को ध्यान में रखकर रोगी आदि की सेवा के लिए, धर्म सघ के किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए, अथवा अन्य आवश्यक कार्यवशात् गुरुदेव आदि महत्तर महान् पुरुष की आज्ञा पाकर निश्चित समय के पहले ही प्रत्याख्यान पार लेना।

८. सागारियागारेणं-सागारिकाकार–सागारि–गृहस्थ के आ जाने पर उसके सम्मुख भोजन करना मना है। अत गृहस्थ के आने पर साधु को भोजन करना छोडकर यदि बीच मे ही उठकर, एकान्त में जाकर पुन दूसरी बार भोजन करना पडे।

सर्प या अग्नि आदि उपद्रव होने पर भी अन्यत्र छोडकर भोजन किया जा सकता है।

६ **आउटणा पसारणेण-आकुंचन-प्रसारण**--भोजन करते समय सुन्न पड जाने या रोगादि कारण से हाथ, पैर आदि अगो का सिकोडना या फैलाना।

१० **गुरु अब्भुट्ठाणेणं-गुर्वभ्युत्थान**--गुरुदेव एव साधु साध्वियो के आने पर उनका विनय सत्कार करने के लिए उठना या खडे होना।

११ **लेवालेवेण-लेपालेप**--आयबिल व्रत मे ग्रहण न करने योग्य शाक तथा घृत आदि विगय से यदि पात्र अथवा हाथ आदि लिप्त हो और दातार गृहस्थ यदि उसे पोछकर उसके द्वारा आयबिल योग्य भोजन बहराए।

१२ **उक्खित्त-विवेगेणं-उत्क्षिप्त विवेक**--शुष्क ओदन एव रोटी आदि पर गुड तथा शक्कर आदि अद्रव--सूखी विकृति (विगय) पहले से रखी हो। आयबिल व्रतधारी को यदि कोई वह विकृति उठाकर रोटी आदि देना चाहे तो ग्रहण की जा सकती है।

१३ **गिहि-संसट्ठेण-गृहस्थ संसृष्ट**--घृत अथवा तेल आदि विकृति से छौके हुए कुल्माष आदि लेना अथवा गृहस्थ ने अपने लिये जिस रोटी आदि खाद्य वस्तु पर अत्यन्त घृत आदि लगा रखा हो, ऐसा आहार लेना।

१४ **पडुच्चमक्खिएणं-प्रतीत्यम्रक्षित**--भोजन बनाते समय जिन रोटी आदि पर सिर्फ अगुली से घी आदि विगय चुपड गया हो, तो ऐसी वस्तुओ को ग्रहण करना।

१५ **पारिट्ठावणियागारेणं-पारिष्ठापनिकाकार**--किसी दातार के भावातिरेक या अन्य कारण से आहार करने वाले साधु--साध्वियो के आहार ज्यादा आ गया हो तो व्रत होते हुए भी उस आहार को ग्रहण करना।

नोट -उपरोक्त आगारो मे ८वा, ११वा, १२वा, १३वा, १४वा, १५वा आगार मुख्यतया साधु–साध्वी के लिए ही है।

परिशिष्ट-२

पौषध व्रत सूत्र

ग्यारहवा पौषध व्रत–असण पाण खाइम साइम चारो आहार का पच्चक्खाण, अबभ सेवन का पच्चक्खाण, माला वण्णग–विलेवण का पच्चक्खाण, अमुक मणि–सुवर्ण का पच्चक्खाण, सत्थ मुसलादि सावज्ज योग सेवन का पच्चक्खाण, जाव अहोरत्त पज्जुवासामि दुविह तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भन्त पडिक्कमामि निदामि गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि।

पौषध व्रत पारने का सूत्र

ग्यारहवे प्रतिपूर्ण पौषध के विषय मे जो कोई अतिचार दोष लगा हो तो आलोउ–१ पौषध मे शय्या सथारा न देखा हो या अच्छी तरह न देखा हो, २ प्रमार्जन नही किया हो या अच्छी तरह नही किया हो, ३ उच्चार पासवण परठने की भूमि अच्छी तरह से न देखी हो या अविधि से अपूर्ण देखी हो, ४ उच्चार पासवण परठने की भूमि पूजी न हो या अच्छी तरह न पूजी हो, ५ उपवास युक्त पौषध का सम्यक् प्रकार से पालन न किया हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड।

उच्चार पासवण परठने जाते समय आवस्सही आवस्सही न कहा हो, परठते समय शकेन्द्र जी महाराज की आज्ञा न मागी हो परठकर तीन बार वोसिरे वोसिरेन कहा हो आते समय निस्सही निस्सही न कहा हो, वापिस आकर चउवीसत्थव न किया हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड।

दशवां पौषध व्रत सूत्र

दसवा देसावगासिक व्रत–दिन प्रतिप्रभात से प्रारम्भ करके पूर्वादिक छहो दिशा की जितनी भूमिका की मर्यादा रखी है

नियमित भूमि के बाहर और भीतर पाच आश्रव द्वार सेवन का पच्चक्खाण। जाव अहोरत्त दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भते पडिक्कामि निदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।

दया व्रत-सूत्र

द्रव्य से हिसा आदि पाच आश्रव सेवन के, क्षेत्र से क्षेत्र मे, काल से, सूर्योदय तक, भाव से–एक करण एक योग से पच्चक्खाण न करेमि कायसा तस्स भते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।

नोट जितने क्षेत्र की मर्यादा करनी हो तो उतनी सोच लेनी चाहिए। जितने करण, योग से लेना हो उतने करण, योग कहना चाहिए।

दशवा पौषध तथा दया पारने का सूत्र

दसवे देशावगासिक व्रत के विषय मे जो कोई अतिचार दोष लगे हो तो आलोउ–१ नियमित सीमा के बाहर की वस्तु मगवाई हो, २ भिजवाई हो, ३ शब्द करके चेताया हो, ४ रूप दिखा करके अपने भाव प्रकट किये हो, ५ ककर आदि फैक कर दूसरो का बुलाया हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड। उच्चार पासवण परठने जाते समय आवस्सही आवस्सही न कहा हो, सम्यक् प्रकार पूजा न हो, परठते समय शकेन्द्र जी महाराज की आज्ञा न मागी हो, परठ कर तीन बार वोसिरे वोसिरे न कहा हो, आते समय निस्सही निस्सही न कहा हो, स्थान पर आकर चउवीसत्थव नही किया हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड।

संवर व्रत सूत्र

द्रव्य से पाच आश्रव सेवन का पच्चक्खाण, क्षेत्र से (जितने क्षेत्र की मर्यादा करनी हो उतने क्षेत्र का परिमाण कहना) काल से (जितने काल तक सवर करना हो उतना काल कहना),

भाव से उपयोग सहित, गुण से निर्जरा के हेतु तथा जब तक ५ नवकार मत्र न पढ लू तब तक। दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।

नोट : पाच नवकार–मत्र बोलकर सवर पारना चाहिये।

पौषध व्रत के १८ दोष

(क) पौषध व्रत लेने के पूर्व दिन निम्न छ· कार्य करने से दोष लगता है-

१ पौषध निमित्त ठूस ठूस कर सरस आहार करना।

२ पौषध की पूर्व रात मैथुन सेवन करना।

३ पौषध के लिये केशनख विन्यास करना।

४ पौषध के निमित्त वस्त्र प्रक्षालन करना, कराना।

५ पौषध के लिये शरीर श्रृगार करना।

६ पौषध के निमित्त आभूषण पहनना।

(ख) पौषध लेने के बाद निम्न १२ कार्य करनें से दोष लगता है।

१ अव्रती (व्रत नही लिए हुए) से वैयावच्च (सेवा) कराना।

२ शरीर का मैल उतारना।

३ बिना पूजे शरीर खुजलाना।

४ अकाल मे नीद लेना अर्थात् दिन मे सोना अथवा प्रहर रात व्यतीत होने के पूर्व सोना।

५ बिना पूजे परठना।

६ निदा, विकथा और हसी मजाक करना।

७ सासारिक बातो की चर्चा करना।

८ स्वय डरना तथा दूसरो को डराना।

६ कलह करना।

१० खुले मुह अयत्ना पूर्वक बोलना।

११ स्त्री के अगोपाग (स्त्री हो तो पुरुष के अगोपाग) निरखना।

१२ काका, मामा, दादा आदि सासारिक नामो से पुकारना।